

छब्बीस सुरते

माअ मंजिल व वजाईफ

सुरतों के फजाईल सुरेह फातेहा
सुरेह यासीन सुरेह रहमान
सुरेह वाकेआ सुरेह जुमा



उमैर एन्टरप्राइजेस, मोझिनपरा, पना.

बिइस्मीही तआला

लकद कान लकुम फी रसुलिल्लाही उखतुन ह-स-ना ○

हिंदी किया हुआ जुमला हुकुक उमेर एंटरप्राएजेस के नाम महफुज़ है ।

गुजारीश

ये किताब बड़ी कीमती है । इस में नेअमतो के खज़ाने हैं। अल्लाह तआला के कलाम में बड़ी बरकत है । इस किताब का गौर से मुताला किजीए और अपनी दुआओं में इस गुनेहगार को भी याद किजी। दुआ में बड़ा असर होता है, जहां अपने लिए, अपने बाल बच्चों के लिए, अपने अज़ीज़ व अकारीब के लिए दुआ करें वहां इस आसी के लिए भी ज़रूर दुआ फर्माए ।

मौलान जलील अहमद आलमगीर

नाम किताब	:	छब्बीस सुरतें
हिन्दी अनुवाद	:	मरहुम हनिफ जनाब
इशाअत	:	1-02-2015
कीमत	:	Rs. 60/-
6 एडीशन	:	2,000

मरहुम हज़रत मौलाना अब्दुल गनी सहाब भज़ाहरी

(शेखुल हदीस दारुल उलूम अलमगीर, अहमद नगर)

मरहुम हनिफ जनाब वफात (27/2/2012)

मरहुम मोहम्मद उमर मोहम्मद हुसेन वफात (11/8/2007)

अल्लाह तआला इन सब की मग्फ़िरत फरमा कर करवट करवट जन्नत नसिब फरमाए और इन की कबरों को नुर से मुनव्वर फरमाए. **आमीन** (बराए महरबानी आपनी दुआओं में याद रखें)

सूरतों के फज़ाइल व ख़्वास

✧ हज़रत अनस रज़ि. से रिवायत है के रसूलुल्लाह स. ने फरमाया के जब तूने अपने बिस्तर पर पहलू रखा और सूर फ़ातिहा और सूर इख़्लास पढ़ी तो मौत के अलावा हर चीज़ से बेख़ौफ़ हो गया। (हसन अनलबज़्ज़ार)

✧ और आयतल कुर्सी भी पढ़ें। इस के पढ़ने वाले के लिए अल्लाह तआला की जानिब से रात भर एक मुहाफिज़ फरिश्ता मुक़रर रहेगा और कोई उसके पास न आएगा। (मसून दुआ)

✧ हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसूद रज़ि से रिवायत है के रसूलुल्लाह स. ने फरमाया के सूर बकरा की आखरी दो आयतें 'आमनरसूलु' से ख़त्मे सूरत तक जो शख्स रात को पढ़ लेगा तो ये दोनों आयतें उसके लिए काफी होंगी यानी वो हर शर और मकर से महफूज़ रहेगा। (बुखारी व मुस्लिम)

✧ एक हदीस में है के सूर बकरा की आखरी दो आयतें 'आमनरसूलु' से आखिर तक जिस घर में पढ़ी जाएं तीन दिन तक शैतान उस घर के करीब नहीं आता। (हसन हुसैन)

✧ हज़रत उस्मान रज़ि फरमाते हैं के जो शख्स सूर आले इमरान की आखरी ग्यारह आयतें 'इन फी खलकिस्समावाति' से आखिर तक किसी रात पढ़ ले तो उसे रात भर नमाज़ पढ़ने का सवाब मिलेगा। (मोतबर)

✧ सूर कहफ़ का जुमा के दिन पढ़ना ज़मीन व आसमान तक नूर पैदा करता है, आठ दिन तक नूर बराबर कायम रहता है फिर उसके पढ़ने वाले को ये सारा नूर कब्र में और कब्र के बाद कयामत में दिया जाएगा। (मोतबर)

✧ एक रिवायत में है के जिस ने सूरे सजदा और तबारकल्लजी को मगरिब और इशा के दरमियान पढ़ा गोया उस ने लैलतुल कद्र में कयाम किया। एक रिवायत में है के जिस ने इन दोनों सूरतों को पढ़ा उस के लिए सत्तर नेकियाँ लिखी जाती हैं और सत्तर बुराईयाँ दूर की जाती हैं। (फज़ाइले कुरआन)

✧ एक रिवायत में है के जो शख्स सूरे यासीन को सिर्फ अल्लाह की रज़ा के वास्ते पढ़े उस के पहले सब गुनाह मआफ हो जाते हैं। (फज़ाइले कुरआन)

✧ जिस शख्स ने शबे जुमा को सूरे दुखान पढ़ी उसके लिए सत्तर हज़ार फरिश्ते अस्तगफार करते हैं और उसके तमाम गुनाह मआफ कर दिए जाते हैं और अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाएगा।

✧ एक रिवायत में है के जो शख्स सूरे हदीद, सूरे वाकिया और सूरे रहमान पढ़ता है वो जन्नतुल फिरदौस में रहने वालों में पुकारा जाता है। (फज़ाइले कुरआन)

✧ सूरे जुमा शबे जुमा में पढ़नी चाहिए।

✧ एक हदीस में है के सूरे तबारकल्लजी का हर रात को पढ़ते रहना अज़ाबे कब्र से निजात का सबब है और अज़ाबे जहन्नम से भी। (फज़ाइले आमाल)

✧ सूरे मुज़म्मिल का एक मर्तबा रोज़ाना इशा की नमाज़ के बाद पढ़ना फाके से बफ़ज़ले तआला महफूज़ रखता है। (तिब्बे रुहानी)

✧ सूरे अन्नबा का असर की नमाज़ के बाद पढ़ना दिन में यकीन और नूरे इमान पैदा करता है और इन्शा अल्लाह खातमा बिलखैर होने का सबब होता है। (मोतबर)

✧ जो शख्स सूरे अल्काफिरून को खुलूसे दिल से बाद नमाज़े फजर या बाद नमाज़े इशा ग्यारह मर्तबा पढ़ने का मामूल बनाले, उसके दिल से बुग़ज़, हसद, कीना, झूठ, फरेब, निफाक गोया हर किस्म की अख़लाकी बुराई निकल जाएगी और शैतानी वसवसों से महफूज़ रहेगा और उसका खात्मा इमान पर होगा और दिल इबादत की तरफ़ बेहद मायल होगा। अगर कोई बच्चा नमाज़ पढ़ने में कोताही करता हो तो घर का कोई फर्द २१ रोज़ तक इस सूरत को २१ मर्तबा रोज़ाना पढ़ कर पानी पर दम करके पिलाए इन्शा अल्लाह नमाज़ पढ़ने में इस्तेकामत पैदा हो जाएगी।

✧ सूरे नसर की तिलावत हर किस्म की मुराद पूरी होने के लिए बहुत मुफीद है बशर्ते के इस सूरत को अल्लैहदा बैठ कर १२३ मर्तबा पढ़ा जाए और हर नमाज़ के बाद अगर इसे सात मर्तबा पढ़ने का मामूल बना लिया जाए तो हर मुश्किल आसान होती चली जाएगी।

✧ जो शख्स सूरे इख़्लास को एक हजार मर्तबा रोज़ाना बाद नमाज़े इशा १२५ दिन तक पढ़े तो उसकी हर जायज़ हाजत पूरी होगी। और जो शख्स रोज़ाना १११ मर्तबा पढ़ने का मामूल बनाले वो इन्शा अल्लाह महबूबूल ख़लाईक हो जाएगा। इसके अलावा इस सूरत को पढ़ने का बेपनाह अज़्र मिलेगा।

जो शख्स सूरे फ़लक रात को सोते वक़्त पढ़ कर अपने उपर दम करे तो इन्शा अल्लाह हर तरह के डर, खौफ़ और मुसीबत से महफूज़ रहेगा। हुजुर स. का इर्शाद है के सूरे फ़लक से बहेतर कोई दुआ पनाह के मुताल्लिक नहीं है।

✧ जो शख्स रात को सोते वक्त सूरें फातिहा, आयतुल कुर्सी, सूरें इख्लास, सूरें फलक और सूरें नास एक एक मर्तबा पढ़ कर अपने हाथों पर दम करके दोनों हाथों को चेहरे और सर से लेकर पेट और टांगों तक फेर दे इन्शा अल्लाह वो रात भर जिन्नात और शयातीन के शर से और दीगर आफाते समावी से महफूज़ और अल्लाह की पनाह में रहेगा।

दरुद शरीफ

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

इन्नल्लाह व मलाइकतहु युसल्लून अलन्नबी या अय्युहल्लजीन आमनु सल्लु अलैहि व सल्लिमु तस्लीमा तर्जुमा: बेशक अल्लाह तआला और उसके फरिश्ते दरुद भेजते हैं नबी (स.) पर ए इमान वाले! तुम उन पर दरुद और खूब सलाम भेजो।

दरुद शरीफ

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिंवि अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अलाइब्राहीम वअला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद। अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिंविअला आलि मुहम्मदिन कमा बारक्त अला इब्राहीम व अला आली इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद ।

सुरेह फातेहा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ① الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ② مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ③
إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ④ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ⑤ صِرَاطَ
الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ⑥ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ⑦

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन ० अर्रहमा निर्रहीम ०
मालिकि यौमिदीन ० इय्याक नअबुदु वइय्याक नस्तईन
० इहदिनस्सिरातल मुस्तकीम ० सिरातल्लजीन अन्जम्त
अलैहिम ५ गैरिल मगजुबि अलैहिम वलज्जाल्लीन ०

आयतुल कुर्सी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ① لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ ② لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ ③ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ④ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ ⑤ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ⑥ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ ⑦ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ⑧ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ⑨

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम

अल्लाहु लाइलाह इल्ला हू अलहय्युल कय्युम ला ताखुजुहु
सिनतुंव्वला नौम, लहू माफिस्समावाति वमा फिल अर्ज
मन जल्लजी यश्फउ इंदहु इल्ला बिइजनिह याअलमु
माबैन ऐदिहिम वमा खल्फहुम वला युहीतुन बशैश्मिन

इल्मिहि इल्ला बिमाशाअ वसीअ कुसीयुहस्समावाति वलअर्ज
वला यउदूहू हिफजुहुमा वहुवल अलीय्युल अजीम ०

सूरे बकरा का पहला और आखरी रुकूअ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْقُرْآنُ الَّذِي أَنْزَلْنَا فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَ
يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝ وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِمَّا
أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝ أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِنْ رَبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَاءَ عَلَيْهِمْ أَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ
خَافَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝
أَمَنْ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ ۝ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَكَيْهِ وَكُتُبِهِ

अलिफ लाम मीम ० जालिकल किताबु ला रैब फिही
हुदलल्लि मुत्तकीन ० अल्लजीन युअमिनून बिलगैबि व
युकीमुनस्सलॉत व मिम्मा रजकनाहुम युनफिकून ०
वल्लजीन युअमिनून बिमा उन्जिल इलैक वमा उन्जिल
मिन कब्लिक व बिलआखिरतिहुम युकिनून ० उलाइक
अला हुदम्मिररिब्बिहिम व उलाइक हुमुल मुफिलहुन ०
इन्नल लजीन कफरु सवाउन अलैहिम अअन्जरतहुम
अम् लम् तुन्जिरहुम ला युअमिनून ० ख़तमल्लाहु अला
कुलूबिहिम व अला समइहिम । व अला अबसारिहिम
गिशावतुंवलहुम अजाबुन अजीम ० आमनरसूलु बिमा
उन्जिल इलैहि मिररिब्बिहि वल मुअमिनून । कुल्लुन आमन
बिल्लिहाहि व मलाइकतिहि व कुतुबिहि

وَرُسُلِهِ لَأَنْفَرِقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهِ ۚ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝ لَا يُكَفِّرُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وَاسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِن نَّسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۖ وَاعْفُ عَنَّا وَارْحَمْنَا ۚ إِنَّكَ أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

व रुसूलिहि ला नुफरिक्कु बैन अहदिम्मीरुसूलिही व कालू समिअना व अतअना गुफरानक रब्बना व इलैकल मसीर ० ला युक्लिफुल्लाहु नफसन इल्ला वुसअहा लहा माकसबत व अलैहा मकतसबत रब्बना ला तुआखिजना इननसीना व अख्ताना रब्बना व ला तहमिल अलैना इसन कमा हमल्लतहु अलल्लजीन मिन कबिलना रब्बना व तुहम्मिलना मा ला ताकत लना बिहि वाअफु अन्ना वगफिरलना वरहम्ना अन्त मौलाना फन्सुरना अलल कौमिल काफिरिन ०

सूरे आल इमरान का आखरी रुकूअ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَ اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَى جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ رَبَّنَا إِنَّكَ مَن تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْرَجْتَهُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝ رَبَّنَا أَتَيْنَاكَ مُتَذَكِّرِينَ تَائِبِينَ أَن آتَيْنَاكَ بِكَرْهٍ فَاعْتَمَدْنَا

इन्न फी खल्किस्समावाति वलअर्जि वख्रितलाफिल्लैलि
 वन्नहारि लआयाति लिलउलील अलबाब ० अल्लजीन
 यजकुरुनल्लाह कियामंव्वकूउदंव्व अला जनुबिहिम
 वयतफक्करुन फी खलकिस्समावाति वलअर्ज, रब्बना मा
 खलक्त हाजा बातिलन सुब्हानक फकिना अजाबन्नार ०
 रब्बना इन्नक मन तुदखिलिन्नार फकद् अख्रैतहु। वमा
 लिज्जालिमीन मिन अन्सार ० रब्बना इन्नना समिअना
 मुनादियंय्युनादी लिलइमानि अन आमनु बिरब्बिकुम फआमन्ना
 رَبَّنَا فَارْحَمْنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّنَا مِنَ الْإِبْرَارِ رَبَّنَا
 وَآتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ
 الْمِيعَادَ ० فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أَضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِنْكُمْ مِّنْ
 ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ فَأَلْزَمَ الْكُفْرَانَ هَاجِرًا وَآخِرُ جَوَامِدِيَّاهُمْ
 وَأَوْذُوا فِي سَبِيلِي وَقَتَلُوا وَقَتَلُوا الْكَافِرِينَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَا دُخْلَ لَهُمْ
 جَدَّتْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ
 رब्बना फगफिलना जनुबना व कफिफर अन्ना सय्यीआतिना
 मअल अबरार रब्बना व आतिना मा वअत्तना अला
 रुसूलिक वला तुख्रिजना यौमलकियामह इन्नक लातुख्रिफुल
 मीआद ० फस्तजाब लहुम रब्बुहुम इन्नी ला उजीउ अमल
 आमिलिमिनकुम्मिन जकस्ति औउन्सा बाअजुकुम मिम्बअजिन।
 फल्लजीन हाजर वउखरिजू मिन दियारिहिम व ऊजु फी
 सबीली वकातलू व कुतिलू लउकफिफरन्न अन्हुम सय्यिआतिहिम
 वलउदखिलन्नहुम जन्नातिन तजरी मिन तहतिलहलअन्हारु
 सवाबम्मिन इन्दिल्लाह। वल्लाहु इन्दहु हुस्नुस्सवाब ०

الثَّوَابِ ۝ لَا يَغْرُوكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ۝ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ
 مَا لَهُمْ جَهَنَّمُ وَيُسَّسَ الْمِهَادُ ۝ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَدَّتْ
 تَجَرُّي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَلِيدِينَ فِيهَا نُزُلًا مَنْ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا عِنْدَ
 اللَّهِ خَيْرٌ لِلْآبِرَارِ ۝ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ
 إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خُشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۝ أُولَئِكَ
 لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۝ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا
 وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا ۝ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

ला यगुरन्नक तकल्लुबुल्लजीन कफरु फील बिलाद ०
 मताउन कलीलुन सुम्म मावाहुम जहन्नमा। व बिअसल
 मिहाद ० लाकिनिल लजीनत्तकु रब्बहुम लहुम जन्नातुन
 तजरी मिन तहतिलहल अन्हारु खालिदीन फीहा नुजुलम्मिन
 इन्दिल्लाह। वमा इन्दिल्लाहि खैरुल्लिलअबरार ० व इन्न
 मिन अहलिलकिताबि लमंय्यूमिनु बिल्लाहि वमा उन्जिल
 इलैकुम वमा उन्जिल इलैहिम खाशिईन लिल्लाहि ला
 यशतरुन बिआयातिल्लाहि समनन कलीला। उलाइक
 लहुम अजरुहुम इन्द रब्बिहिमा। इन्नलल्लह सरीउल
 हिसाब ० याअय्युहल्लजीन आमनुसबिरु व साबिरु
 वराबितू वत्तकुल्लाह लअल्लकुम तुफलहून ०

सुरेह कहफ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ۖ قَيِّمًا
لِيُنْذِرَ رُسُلًا شِدِيدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ
لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ۖ فَاتَّبِعْنِي فِيهِ أَبَدًا ۖ وَيُنْذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ مَا
لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا إِلَّا بِأَنَّهُمْ كُفِّرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۚ إِنَّ يَقُولُونَ
إِلاَّ كَذِبًا ۚ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلَى آثَارِهِمْ ۚ إِنَّ لَّهُمْ يُؤْمِنُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ
أَسْفًا ۚ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لِّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَإِنَّا
لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۚ أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ

अल्लहुमुलिल्लहिल्लजी अन्जल अला अब्दिहिल किताब
वलम यजअलल्लहु इवजा ० कय्यीमल्लियुन्जिर बासन
शदीदम्मिल्लदुन्हु व युबशिशरल मुअमिनीनल्लजीन
यअमलूनस्सालिहाति अन्न लहुम अजरन हसनम्माकिसीन
फीहा अबदंव्व युनजिरल्लजीन कालुत्ताख्रजल्लाहु वलदा ०
मा लहुम बिही मिन इल्लिंव्वला लि आबाइहिम। कबुरत्
कलिमतन् तख्रजु मिन अफवाहिहिम। इय्यकुलून इल्ला
कजिबा। फलअल्लक बाखीउन्नफसक अला आसारिहिम
इल्लम युअमिनु बिहाजल हदीसि इस्फा ० इन्ना जअल्ला
मा अलल अर्जि जीनतल्लहा लिनबूलूवहुम अय्युहुम
अहसनु अमला ० वइन्ना लजाइलून मा अलैहा सईदन
जुरुजा ० अम हसिबूत इन्न अस्हाबल कहफ वरकीमि

كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۚ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ
 رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۚ فَضَرَبْنَا عَلَى الْأَفْئِدَةِ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۖ ثُمَّ
 بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيَّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصَى لِمَا لَيْتُوا أَمَدًا ۚ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ
 نَبَأَهُم بِالْحَقِّ ۖ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۖ وَرَبَطْنَا
 عَلَى قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَنْ نَدْعُو مِنْ
 دُونِهِ إِلَهًا لَقَدْ قُلْنَا إِذَا شَطَطًا ۚ هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ آلِهَةً لَوْ
 لَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمُ سُلْطَانٌ بَيِّنٌ ۖ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ وَ
 إِذْ أَعَزَّزْنَاهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَاوَا إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ

कानू मिन आयातिना अजबा ० इज अवल फितयतु
 इललकहफि फकालू रब्बना आतिना मिल्लदुन्क
 रहमतंव्वहय्यीअ लना मिन अमरिना रशदा ० फजरब्ना
 अला आजानिहिम फिलकहफि सिनीन अददा ० सुम्म
 बअस्नाहुम लिनअलम अय्युल हिजबैनी अहसा लिमा
 लबिसू अमदा ० नहनू नकुस्सु अलैक नबअहुम बिलहविक।
 इन्नुहुम फितयतुन आमनू बिरब्बिहिम वजिदनाहुम हुदा
 ० वरबल्ना अला कुलूबिहिम इज कामू फकालू रब्बुना
 रब्बुस्समावाति वलअर्ज लन्नदउव मिनदूनिही इलाहल्लकद
 कुल्ना इज्जुन शतता ० हाउलाइ कौमुनत्ताखजु मिन
 दूनिही आलिहतन। लौ लायातून अलैहिम बिसुल्लानिम्मबैन।
 फमन अजलमु मिम्मनफतरा अलल्लाहि कजिबा ० व
 इजिअतजूल तुमूहुम वमा याअबुदून इलल्लाह फाउ

رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيُهَيِّئُ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ مَرْفَقًا ۝ وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا
 طَلَعَتْ تَوَارًا وَرَعْنَ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقَرَّبُ ضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ
 وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِنْهُ ذَلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ
 يُضِلِلْ فَلَنْ يَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُرْشِدًا ۝ وَتَحْسَبُهُمْ آيَاتُنَا وَهُمْ رُفُودٌ ۖ وَنُقَلِّبُهُمْ
 ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ
 لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَمَلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ۝ وَكَذَلِكَ بَعَثْنَا لِيَتَسَاءَلُوا
 بَيْنَهُمْ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالُوا
 رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ بِوَرِكَيْهِ هَذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنْظُرْ

इललकैफि यनशुर लकुम रब्बुकुम मिर्नरहमतिहि व युहय्यी
 लकुम मिन अमरिकुम्मिर फका ० वतरशशम्स इजा तलअत्तज
 वरुअन कहफिहिम जातलयमीनि व इजा गरबत्तक्रि जुहुम
 जातशिशमालि वहुम फी फज्वतिम्मिन्हु। जालिक मिन
 आयातिल्लाह। मय्याहदिल्लाहु फहुवल मुहतदी । व
 मय्युजिल्लल फलन तजिद लहु वलियम्मुर्शिदा ० व
 तहसबुहुम ऐकाजंव्वहुम रुक्कूव्व नुकललिबुहुम जातलयमीनि
 व जातशिशमालि वकल्बुहुम बासितुन जिराऐहि बिलवसीद।
 लवित्तलअत्त अलैहिम लवल्लयत मिन्हुम फिराव्वल मुलिअत्त
 मिन्हुम रुअबा ० वकजालिक बअस्नाहुम लियतसाअलू बैनहुम।
 काल काइलुम्मिन्हुम कम लबिस्तुम। कालू लबिसना यौमन
 औबअज यौमि। कालू रब्बुकुम अअलमु बिमा लबिस्तुम।
 फबअसू अहदकुम बिवरिकिकुम हाजिही इलल मदीनति

أَيْمًا أَرَكِي طَعَامًا فَلْيَا تَكْمُرْ بِرِزْقٍ مِنْهُ وَلَيْتَ لَطْفٌ وَلَا يُشْعِرَنَّ يَكْمُرًا أَحَدًا ۝
 إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذَا
 أَبَدًا ۝ وَكَذَلِكَ أَثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ
 فِيهَا ۚ إِذِ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِمْ بُيُوتًا رَبُّهُمْ أَعْلَمُ
 بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ۝ سَيَقُولُونَ
 سَاءَ مَا رَأَيْنَاهُمْ كَلْبُهُمْ وَ يَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادَهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ
 وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُلْ رَأَيْتُ أَعْلَمُ بِعَدَّتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا
 قَلِيلٌ ۗ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝

फलयन्जुर अय्युहा अजका तआमन फलयातिकुम
 बिरिजकिममिनहु वलयतलत्तफ वला युशइरन्न बिकुम अहदा
 ० इन्नहुम इय्यजहस अलैकुम यरजुमूकुम औ युइदुकुम फी
 मिल्लतिहिम वलन तुफलहू इज्जन अबदा ० वकजालिक
 अअसरना अलैहिम लियअलमू अन्न वअदल्लहि हक्कुव्व
 अन्नस्साअत ला रैबफीहा इज्ज यतनाजउन बैनहुम अमरहुम
 फकालूबू अलैहिम बुनयाना। रब्बुहुम अअलमु बिहिम।
 कालल्लजीन गलबू अला अमरिहिम लनत्तखिजन्न
 अलैहिम्मस्जिदा ० सयकूलून सलासतुराबिउहुम कल्बुहुम व
 यकूलून खम्सतुन सादिसुहुम कल्बुहुम रजमम्बिलौबि व
 यकूलून सबअतुव्व सामिनुहुम कल्बुहुम। कुर्स्बी अअलमु
 बिइदतिहिम्मा यअलमुहुम इल्ला कलील फला तुमारि फीहिम
 इल्ला मिराअन जाहिस्वला तसत्तफती फीहिम्निहुम अहदा ०

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَلِكَ غَدًا ۖ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَادْكُرْ رَبَّكَ
 إِذْ أَنْسَيْتَ وَقُلْ عَسَى أَنْ يَهْدِيَنَّ رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَذَا رَشَدًا ۝ وَلْيَتُوبَ إِلَىٰ
 كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تَسْعًا ۝ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَيْسُوا لَهُ
 غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ قَوْلٍ وَلَا
 يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ۝ وَأَتْلُ مَا أُوْحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا
 مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ وَلَنْ يَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝ وَأَصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ
 يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۚ وَلَا تَعْدُ عَيْنُكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ
 زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تَطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ

वला तकूलन्न लिशैइन इन्नी फाइलुन जालिक गदन
 इल्ला अय्यशाअल्लाहु वज्कुररब्बक इजा नसीत वकुल
 असा अय्यहदियनि रब्बी लिअकरब मिन हाजा रशदा ०
 वलबिसू फी कहफिहिम सलास मिअतिन सिनीन वजदादु
 तिसूआ ० कुलिल्लाहु अअलमु बिमा लबिसू लहु
 गैबुस्समावाति वलअर्ज। अब्सिर बिही व असमिअ।
 मालहुम मिन दूनिही मिंवलिय्युंवल्ला युश्चिकु फी हुक्मिही
 अहदा ० वल्लु मा उहिय इलैक मिन किताबि रब्बिक।
 ला मुबदिल लिक्लिमातिहि वलन तजि मिन दूनिहि
 मुलतहदा ० वसिब्र नफ्सक मअल्लजीन यदउन रब्बहुम
 बिलगदावति वलअशिय्यी युरीदून वज्हुह वला तअदु
 अैनाक अन्हुम तुरीदु जिनतल हयातिहुनिया वला तुतिअ
 मन अगफलना कलबहू अन जिफ्रिना वत्तबअ हवाहु

وَكَانَ أَمْرُهُ فُرُطًا ۝ وَقِيلَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا ۖ أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالِهُيْلِ يُشْوَى ۖ الْوُجُوهُ بِشَسِّ الشَّرَابِ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا بُدَّ مِنْ أَنْ يُعْطُوا أَجْرَهُمْ مِنْ أَحْسَنِ عَمَلٍ ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ ۖ وَاسْتَبْرَقٍ مُتَبَكِّينَ ۖ فِيهَا مَاعِلٌ أَلْسِنَاتِكُمْ يُعْمُ الثَّوَابِ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۖ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا رَجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۖ كَلَّتَا

वकान अमरुहू फुरुता ० वकुलिलहक्कु मिरब्बुकुम फमन
शाअ फलयूअमिंवमन शाअ फलयकफुर इन्ना अअतदना
लिज्जालिमीन नारन अहात बिहिम सुरादिकुहा। वइय्यस्तगीसू
युगासू बिमा इं कलमुहलि यशविल वुजूह। बिअसशराब।
वसाअत मुरतफका ० इन्नल्लजीन आमनू व
अमिलुस्सालिहाति अन्नाला नुजीउ अज्र मन अहसन
अमला ० उलाइक लहुम जन्नातु अदनीन तजरी मिन
तहतिहिमुल अन्हारु युहल्लौन फीहा मिन असाविरमिन
जहबिंव्व यलबसुन सियाबन खुजरंमिन सुन्दुसिंव्व
इसतबरकिम्मुत्तकिईन फीहा अलल अराईकि। निअमस्सवाब।
व हसुनत् मुरतफका ० वजरिब लहुम्मसलरजुलैनी जअलना
लिअहदिहिमा जन्नतैनी मिन अअनाबिंव्वहफफनाहुमा
बिनखिलंव्वजअलना बैनहुमा जरआ ० किल्लल

الْجَنَّتَيْنِ اَنْتَ اَكْلَاهَا وَلَمْ تَظْلَمْ مِنْهُ شَيْئًا ۚ وَفَجَزَا خِلْدَهُمَا نَهْرًا ۚ وَكَانَ لَهُ
 خَبْرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ اَنَا كُتْرُ مِنْكَ مَا لَوْ اَعْرَضْتَ نَفْرًا ۝ وَدَخَلَ
 جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۚ قَالَ مَا اَظُنُّ اَنْ تَبِيدَ هَذِهِ اَبَدًا ۚ وَمَا اَظُنُّ السَّاعَةَ
 قَدِ اَتَتْهُ ۚ وَلَئِنْ رُدِدْتُ اِلَى رَاسِي لَاجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ۚ قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَ
 هُوَ يُحَاوِرُهُ اَكْفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ نُّرٍّ ۚ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّكَ رَجُلًا ۚ
 لَّيْسَ اَهُوَ اللّٰهُ رَبِّي وَلَا اَشْرَكَ بِي رَبِّي اَحَدًا ۝ وَلَوْلَا اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللّٰهُ
 لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اِنْ تَرَىٰ اَنَا اَقْلَ مِنْكَ مَا لَوْ وَلَدًا ۚ وَعَسَىٰ رَبِّي اَنْ يُؤْتِيَنِي
 خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقًا ۚ اَوْ

जन्तैनि आतत् अकुलहा वलम तजलिम् मिन्हु शैअंव्व
 फज्जस्ना खिलालहुमा नहरा ० वकान लहु समरुस फकाल
 लिसाहिबिही वहुव युहाविरुहू अना अकसरुमिन्क
 मालंव्वअअज्जु नफरा ० वदखल जन्तहु वहुव
 जलिमुल्लिनफिसही काल माअजुनु अन तबीद हाजिही
 अबदा ० वमा अजुनुस्साअत काइमतंव्वलइरुदिदत्तु इला
 रब्बी लअजिदन्न खैरमिन्हा मुन्कलबा ० काल लहु
 साहिबुहू व हुव युहाविरुहू अकफरत बिल्लजी खलकक
 मिन तुराबिन सुम्म मिन्नुतफतिन सुम्म सव्वाक रजुल ०
 लाकिन्ना हुवल्लाहु रब्बी वला उश्रिकु बिरब्बी अहदा ०
 वलौला इज दखल जन्तक कुल्ल माशाअल्लाहु ला कुव्वति
 इल्ला बिल्लाहि इन तरनि अना अकल्ल मिन्क मालंव्वदलदा
 ० फअसा रब्बी अय्युअतियनि खैरमिन जन्तिक क्युरसिल
 अलैहा हुस्बानमिनस्समाई फतुरिबह सईदन जलका ०

يُصِيبُ مَا وَهَّاءُ غَوْرًا فَانْ تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۝ وَاحِيطٌ بِشَرِّهِ فَاصْبِرْ يَقْلِبْ كَفِيَّةً عَلَى مَا
 انْفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَلَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ۝ وَ
 لَمْ تَكُنْ لَهُ فِتْنَةٌ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ۝ هَٰذَا لَكَ الْوَلَايَةُ اللَّهُ الْحَقُّ
 هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ۝ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ
 فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيحُ ۝ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
 مُقْتَدِرًا ۝ الْأَمْوَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۝ وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِندَ
 رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ۝ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً ۝ وَحَشَرْنَاهُمْ
 فَلَمْ تُغَادِرْ مَنَّهُمْ أَحَدًا ۝ وَعِزُّوْا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا ۝ لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا أَخْلَقْنَاهُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۝

औ युसबिह माउहा गौरन फलनू तस्ततीअ लहु तलबा ०
 व उहीत बिसमरिही फअस्बह युक्लिबु कप्फैहि अला मा
 अन्फक फीहा वहिय खावियतुन अला उरुशिहा व यकूलू
 यालैतनी लम अश्रिक बिरब्बी अहदा ० व लम तकुल्लहु
 फिअतुंय्यनसुरुनहू मिन दूनिल्लाहि वमा कान मुत्तसिरा ०
 हुनालिकल वलायतु लिल्लाहिलहक्कि। हुव खैरुन
 सवाबंवखैरुन उक्बा ० वजूरिब लहुम्मसलल हयातिहुनिया
 कमाइन अन्जलनाहु मिनस्समाइ फख्तलत बिहि नबातुल
 अर्जि फअस्बह हशीमं तज्रुहुरियाह। वकानल्लाहु अला
 कुल्लि शैइम्मुक्तादिरा ० अलमालु वलबनून जीनतुल
 हयातिहुनिया वलबाकियातुस्सालिहातु खैरुन इन्द रब्बिक
 सवाबंवखैरुन अमला ० व यौम नुसय्यिरुल जिबाल
 वतरल अर्ज बरिजतंव हशरनाहुम फलम नगादिर मिन्हुम
 अहदा ० वउरिजु अला रब्बिक सप्फा। लकदजिअतुमना

بَلْ زَعَمْتُمْ أَنَّنْ نَجْعَلْ لَكُمْ مَوْعِدًا ۝ وَضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ
 مِنْهَا فِيهِ وَيَقُولُونَ يَوْمَئِذٍ مَا هَذَا الْكِتَابُ إِلَّا عِجَادُ صَغِيرَةٍ وَلَا كِبِيرَةٍ إِلَّا أَحْصَاهَا ۝ وَ
 جَدُّو أَمَاعِلُهُمْ أَحَاضِرًا ۝ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ۝ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ
 فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ
 أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ۝ مَا أَشْهَدُهُمْ خَلْقَ
 السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقِ أَنْفُسِهِمْ ۝ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّينَ عَصَدًا ۝ وَ
 يَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمُ
 مَوْبِقًا ۝ وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاقِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرُفًا ۝ وَ

कमा खलक्नाकुम अव्वल मरतिम्बल जअम्तुम अल्लन्नजअल
 लकुम्मौइदा ० व वुजिअल किताबु फतरल मुजरिमीन
 मुश्फीकीन मिम्मा फीहि व यकूलून यावैलतना मालि
 हाजल किताबि ला युगदिरु सगीरतव्वला कबीरतन इल्ला
 अहसाहा व वजदू मा अमिलू हाजिरा। वला यजलिमु
 रब्बुक अहदा ० वइज कुल्ला लिलमलाइकतिसजुदु लिआदम
 फसजदू इल्ला इब्लीस। कान मिनल जिन्नि फफसक
 अन अमि रब्बिहि। अफत्तखिजु नहु व जुरीय्यतहु
 औलियाअ मिन दूनी वहुम लकु अदुव्व। बिअस
 लिज्जालिमीन बदला ० मा अशहदु त्तहुम खलकस्समावाति
 वलअर्जी वला खलक अन्फुसिहिम व माकुन्तु मुत्तखिजल
 मुजिल्लीन अजुदा ० व यौम यकूलू नादू शुरकाईयल्लजीन
 जअम्तुम फदऔहुम फलम यसस्तजिबू लहुम वजअलना
 बैनहुम्मौबिका ० व राजलमुजरिमून न्नार फजन्नु
 अन्हुम्मवाकिऊहा वलम यजिदु अन्हा मसरिफा ० व

لَقَدْ صَرَفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْئًا
 جَدَلًا ० وَمَا مَعَ النَّاسِ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَى وَيَسْتَغْفِرُوا لَهُمْ إِلَّا أَنْ
 تَأْتِيَهُمُ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ० وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا بَشَرِينَ
 وَمُنذِرِينَ وَيَجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا
 أَنْذَرُوا هُزُوعًا ० وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ
 يَدَاهُ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ تَدْعُهُمْ
 إِلَى الْهُدَى فَلَنْ يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ० وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ
 بِمَا كَسَبُوا الْعَجَلَ لَهُمُ الْعَذَابُ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْئِلًا ० وَ

लकद सरफना फी हाजलकुरआनि लिन्नासि मिन कुल्लि
 मसलि। वकानल इन्सानु अकसरशैइन जदला ० वमा
 मनअन्नास अय्युअमिनु इज जाअहुमुलहुदा वयस्तग़िफर
 रब्बहुम इल्ला अन तातीयहुम सुन्नतुल अब्वलीन औ
 यातियहुमुलअजाबु कुबुला ० वमा नुरसिलुल मुरसलीन
 इल्ला मुबशिशरीन व मुनजिरीन वयुजादिलुल्लजीन कफर
 बिलबातिलि लियुद् हिजू बिहील हक्क वत्तखिजु आयाती
 वमा उन्जिरू हुजुवा ० व मन अजलमु मिम्मन जुक्किर
 बिआयाति रब्बिहि फाअरज अन्हा व नसिय मा कदमत
 यदाह। इन्ना जअलना अल्ला कुलूबिहिम अकिन्नतन अय्यफकहू
 व फि आजनिहीम बकरो व इत्त तदउहुम इलल हुदा
 फलय्याहतदु इजन अबदा ० व रब्बुकल गफूर जुरहमति।
 लवयुअ खिजुहुम बिमा कसबू लअज्जल लहुमुल अजाब।
 बल्लहुम्मौइदुल्लय्यजिदू मिन दूनिही मौइला ० व

تِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِم مَّوْعِدًا ۖ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ
 لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ۚ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا
 نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۚ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ إِنِّي
 غَدَاءٌ نَا ۖ لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا ۚ قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ
 فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنسَيْنِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ ۖ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي
 الْبَحْرِ عَجَبًا ۚ قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغُ ۖ فَارْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا قَصَصًا ۚ فَوَجَدَا
 عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا اتَّبِعَهُ رَحْمَةً مِنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِنْ لَدُنَّا عِلْمًا ۚ قَالَ
 لَهُ مُوسَىٰ هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَىٰ أَنْ تُعَلِّمَ مِنِّي مِمَّا عَلَّمْتَ رُسُلًا ۚ قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ

तिल्कल कुरा अहलकनाहुम लम्मा जलमू व जअलना
 लिमहलिकिहिम्मौइदा ० व इज् काल मूसा लिफताहु ला
 अब्रहु हत्ता अब्लुगु मज्मअलबहरैनि औ अमजिय
 हुकूबा ० फलम्मा बलगा मज्मअ बैनिहिमा नसीया हू
 तहुमा फत्ताखिज सबीलहु फिलबहरि सरबा ० फलम्मा
 जावज् काल लिफताहु आतिना गदाअना लकद लकीना
 मिन सफरिना हाजा नसबा ० काल अरअैत इज् अवैना
 इलस्सख्रति फइन्नी नसीतुलहूत वमा अन्सानियहु इल्लशैतानु
 अन अजकुरहू वत्ताखिज सबीलहु फीलबहरि अजबा ०
 काल जालिक मा कुन्ना नबगि फरतद् अला आसारिहिमा
 कससा ० फवजदा अब्दमिन इबादिना आतैनाहु रहमतंमिन
 इंदिना वअल्लमनाहु मिल्लदुन्ना इल्मा ० काल लहु मूसा
 हल अत्ताबिउक अला अन तुअल्लिमनि मिम्मा उल्लिमूत
 रुशदा ० काल इन्नक लन

مَعِيَ صَبْرًا ۝ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ۝ قَالَ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ
 صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ۝ قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ
 أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۝ فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ۝ قَالَ أَخَرَقْتَهَا
 لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ۝ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ
 صَبْرًا ۝ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ۝ فَانْطَلَقَا
 حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ ۝ قَالَ أَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا
 نُكْرًا ۝ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝ قَالَ إِن سَأَلْتُكَ
 عَنْ شَيْءٍ بَعْدَ هَٰذَا فَلَا تُصَحِّبْنِي قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا ۝ فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا

तसूततीअ मइय सबरा ० व कैफ तस्बिरु अला मा लम
 तुहित बिही खुबरा ० काल सतजिदूनी इनशाअल्लाहु
 साबिरंब्ब ला आसी लक अमरा ० काल फइनित्तबअतिनी
 फला तसूअलनी अन शैइन हत्ता उहदिस लक मिहू
 जकरा ० फनूतलका हत्ता इजारकिबा फीस्सफीनति
 खरक्हा। काल अखरक्तहा लितुगरिक अहलहा लकद
 जिअत शैअन इमरा ० काल अलम अकुल इन्नक लन
 तसूततीअ मइय सब्रा ० काल ला तुअखिजूनी बिमा
 नसीतु व ला तुरहिक्नी मिन अम्मी उम्मा ० फनतलक्का
 हत्ता इज्जा लकीया गुलामन फकतलहु काल अकतल्ल
 नफूसनन जकिय्यतम्बीगैरि नफिस। लकद जिअत शैअन्नुकरा
 ० काल अलम अकुल्लक इन्नक लन तसततीअ मइय सब्रा
 ० काल इन सअल्लुक अन शैइम्बअदहा फला तुसाहिब्नी
 कद बलगत मिल्लदुन्नी उम्मा ० फन्तलका हत्ता इज्जा अतया

أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَ أَهْلُهَا فَأَبَوْا أَنْ يُصَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَ فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ
 يَنْقَضَ فَأَقَامَهُ ۖ قَالَ لَوْ شِئْتُ لَتَخَذْتُ عَلَيْهِ جُرًّا ۖ قَالَ هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَ
 بَيْنِكَ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۖ أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ
 لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ
 كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ۖ وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا
 طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۖ فَأَرَدْنَا أَنْ يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِمَّا كَانَتْ لَهُمَا ذِكْرًا ۖ وَأَقْرَبَ رُحْمًا ۖ وَ
 أَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَهُمَا وَكَانَ
 أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً

अहल करयति निस्ततअमा अहलहा फअबव अंय्युजय्यीफु
 हुमा फवजदा फीहा जिदारंय्युरिदू अंय्यनकज्ज फअकामहु।
 काल लवशिअत लत्तखजत अलैहि अजरा ० काल हाजा
 फिराकु बैनी व बैनिक सउनब्बिउक बितावीलि मालम
 तसूततिअअलैहि सब्रा ० अम्मससफीनतु फकानत लिमसाकीन
 यअमलून फिलबहरि फअरत्तु अन अईयबहा वकान
 वरॉअ हुम्मलिकुंय्या खुजु कुल्ल सफीनतिन गसबा ०
 वअम्माल गुलामु फकान अबवाहु मुअमिनैनी फखशीना
 अंय्युरहिकहुमा तुगयानंव्वकुफरा ० फअरदना इंय्युब्दि लहुमा
 रब्बुहुमा खैरम्मिनहु जकातंव्व अकरब रुहमा ० व अम्मल
 जिदारु फकान लिगुलामैनी यतीमैनि फिल मदीनति वकान
 तहतहु कन्जुल्लहुमा व कान अबूहुमा सॉलिहा फअराद
 रब्बुक अंय्यबलुगा अशुद्द हुमा वयसूतखरिजा कन्जहुमा

مِّن رَّبِّكَ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا
 وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْقَرْيَتَيْنِ قُلْ سَأَتْلُوا عَلَيْكُم مِّنْهُ ذِكْرًا ۚ إِنَّا مَكِّنَّا لَهُ
 فِي الْأَرْضِ وَاتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۚ فَاتَّبَعِ سَبَبًا ۝ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ
 وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۖ قُلْنَا يَذَّكَّرُ إِلَيْنَا إِنَّا
 أَمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ۝ قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ
 رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا ثَكْرًا ۝ وَأَمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءُ الْحُسْنَىٰ وَسَنَقُولُ
 لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ۝ ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ۝ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ
 لَّمْ نَجْعَلْ لَهُم مِّن دُونِهَا سِتْرًا ۚ كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ۝ ثُمَّ اتَّبَعَ

रहमतंमिर्बक वमा फअल्लुहु अन अम्रि। जालिक
 तावीलु मालम तसूतिअलैहि सबरा ० वयसूअलूनक
 अन जिलकरनैनि। कुल सअल्लू अलैकुम मिन्हु जिकरा
 ० इन्नामक्कन्ना लहु फिलअर्जि व आतैनाहु मिन कुल्लि
 शैइन सबबा ० फअत्वअ सबबा ० हत्ता इजा बलग
 मग्निबशशम्सी वजदहा तगरुबु फी अैनि हमिअतिंव्व
 वजद इन्दहा कौमा। कुल्ला याजलकरनैनि इम्मा अन
 तुअज्जिब व इम्मा अन तत्ताखिज फीहिम हुसना ०
 काल अम्मा मिन जलम फसौफ नुअज्जिबुहु सुम्म युरहु
 इला रब्बिही फयुअज्जिबुहु अजाबन्नुका ० व अम्मा मन
 आमन व अमिल सौलिहन फलहु जजाअल हुस्ना व
 सनकूलु लहु मिन अम्रिना युस्ना ० सुम्म अतबअ सबबा
 ० हत्ता इज बलग मल्लिअशशमसि वजदहा

سَبَّأًا ۝ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا ۚ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ
 قَوْلًا ۝ قَالُوا يَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَاجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ
 نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۚ قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي
 خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۚ آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۚ حَتَّىٰ
 إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا ۚ قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ
 عَلَيْهِ قِطْرًا ۚ فَمَا اسْطِغَاوُا أَنْ يَطَّهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ۚ قَالَ هَذَا
 رَحْمَةٌ مِّنْ رَبِّي ۚ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ۚ
 وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ وَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ۚ ق

तल्लुउ अला कौमिल्लमनजअल्लहुम मिन दुनिहासितरा ०
 कजालिको वकद अहत्ता बिमा लदैही खुबरा ० सुम्म
 अत्बअ सबबा ० हत्ता इज बलग बैनस्सदैनि वजद मिन
 दूनिहिमा कौमल्ला यकादून यफ्कहून कौला ० कालू
 याजलकरनैनि इन्न याजुज व माजुज मुप्सिदून फिल
 अर्जि फहल नजअलु लक खर्जन अला अन तजअल
 बैनना व बैनहुम सददा ० काल मा मक्कन्नी फीहि
 रब्बी खैरुन फअईनू नी बिकूव्वतिन अजअल बैनकुम व
 बैनहुम रदमा ० आतूनी जुबरल हदीदो हत्ता इजा
 सावा बैनस्सदफैनि कालन्फुखुो हत्ता इजा जअलहु नारन
 काल आतूनी उफरिगु अलैहि कितरा ० फमस्ताअू
 अंग्युजहरुहु वमस्तताअू लहु नक्बा ० काल हाजा
 रहमतुम्मिररब्बी फइजा जाअ वअदू रब्बी जअलहु दक्काअ
 वकान वअदुरब्बी हक्का ० वतरक्ना बअजहुम यौमइजिंय्यमूजु

عَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرْضًا ۚ الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ
 ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ۚ أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن يَتَّخِذُوا
 عِبَادِي مِنْ دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ۚ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ
 يَا آخَرِينَ أَعْمَالًا ۚ الَّذِينَ صَلَّوْا سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ
 أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ
 أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَزَنًا ۚ ذَٰلِكَ جزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا
 وَاتَّخَذُوا آلِهَتِي وَرُسُلِي هُزُؤًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ
 لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۚ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حَوْلًا ۚ قُلْ لَوْ

फि बअजिव वनुफिख फिस्सूरि फजमअनाहुम जमआंव
 ० वअरज्जा जहन्नम यौमइजिल्लिलकाफिरीन अर्जा ०
 निल्लजीन कानत् अअयुनुहुम फी गिताइन अन जिक्की
 व कानू ला यस्ततीउन समूआ ० अ-फ-हसिबल्लजी-न
 कफरु अय्यत्ताखिजू ईबादी मिन दूनी औलियाअ, इन्ना
 अअतदना जहन्नम लिक्काफिरीन नुजुला ० कुल् हल्
 नुनब्बिउकुम् बिल्-अख्सरीन अअमाला ० अल्लजीन
 जल्ल सअयुहुम फिल हयातिहुनया व हुम यहसबून
 अन्नहुम युहसिनून सुनूआ ० उलाइ कल्लजी न कफरु
 बिआयाति रब्बिहिम् व लिकाइही फहबितत् अअमालुहुम्
 फला नुकीमु लहुम् यौमल् कियामति वज्जा ० जालिक
 जजाउहुम् जहन्नमु बिमा कफरु वत्त खजू आयाती व

كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا إِلِكَلِمَتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَتُ رَبِّي وَلَوْ
 جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ۝ قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَىٰ أَنبِيَآءِ الْهُكْمِ
 إِلَهُ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ
 بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝

रुसुली हुजुवा ० इन्नल्लजीन आमनू व अमिलुस्सॉलिहाति
 कानत् लहुम् जन्नातुल् फिरदौसि नुजुला ० खालिदीन
 फीहा ला यबुन अन्हा हिवला ० कुल लौ कानल् बहरु
 मिदादल्लिकलिमाति रब्बी लनफिदल्बहरु कबूल अन् तन्फद
 कलिमातु रब्बी व लौ जिअना बिमिस्लिही मददा ० कुल
 इन्नमा अना बशरुम् मिस्तुकुम् युहा इलय्य अन्नमा
 इलाहुकुम् इलाहुंब्वाहिदून् फमन कान यर्जू लिकाअ
 रब्बिही फलयअमल् अमलन सॉलिहंब्बला युश्रिक बिईबादति
 रब्बिही अहदा ०

कोई काम दुशवार हो जाने के वक्त की दुआ

कोई काम दुशवार हो जाए (या कोई मुशकील आन पढे) तो
 ये दुआ पढे.

اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَهُ سَهْلًا وَاَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ سَهْلًا اِذَا شِئْتَ

अल्लाहुम्मा ला सहल इल्ला मा जअलतहु सहलवंव
 अनता तजअलुल हुजन सहलन इजा शिअता ०

सुरेह सज्दा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْقُرْآنَ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَارِيبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ
بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَتْهُمْ مِنْ نَذِيرٍ مِنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ
يَهْتَدُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ
اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ
يَذَرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ
أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ۝ ذَلِكَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝
الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ۝ ثُمَّ

अलिफ् लाम् मीम ० तन्जीलुल् किताबि ला रैब फीहि
मिर्रिब्बिल् आलमीन ० अम् यकूलूनफत्तराहु बल् हुवल
हक्कु मिर्रिब्बिक लितुन्जिर कौमम्मा अताहुम मिन् नजीरिमिन
कब्बिलक लअल्लहुम यहतदून ० अल्लहुल्लजी
खलकस्समावाति वलअर्ज वमा बैनहुमा फी सित्ताति
अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल् अर्शि मा लकुम मिन्
दूनिही मिंवल्लियिंवल्ला शफीईन, अफला ततजक्करुन
० युदब्बिरुल अम्र मिनस्समाई इलल् अर्जि सुम्-म
यअरुजु इल्लैहि फी यौमिन् का-न मिक्दारुहु अल्-फ
स-नतिम्-मिम्मा तअुददून ० जालि-क आलिमुल-गैबि
वशशहा-दतिल् अजीजुर-रहीम ० अल्लजी अहस-न कुल्-ल
शैइन् ख-ल-कहू व ब-द-अ खल्कल्-इन्सानि मिन तीन ०

جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ۖ ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ
 مِنْ رُّوحِهِ ۖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ
 وَقَالُوا إِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ بَلْ هُمْ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ
 كَافِرُونَ ۚ قُلْ يَتَوَقَّعُكُمْ مَلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي يُكَلِّمُ بَعْضَكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ
 تُرْجَعُونَ ۚ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْهَاجِرُونَ نَاكِسَوُا رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا
 أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ۚ وَلَوْ شِئْنَا
 لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًى ۚ وَلَكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ
 وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۚ فَذُوقُوا بَأْسَ يَسْئِمٍ لِّقَاءِ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ إِنَّا نَسِينَكُمْ وَذُوقُوا

सुम्म ज-अ-ल नस्-लहु मिन् सुला-लतिम् मिम्मा-इम-महीन
 ० सुम्म सव्वाहु व न-फ-ख फीहि मिररुहिही व
 ज-अ-ल लकुमुसू-सम्-अ वल्-अब्सा-र वल्-अफइ-द-त,
 कलीलम्-मा तश्कुरुन ० व कालू अ-इजा जलल्ला फिल्अर्जि
 अ-इन्ना लफी खल्किन् जदीदिन्, बल् हुम् बिलिका-इ
 रब्बिहिम् काफिरुन ० कुल् य-तवफफाकुम्
 म-लकुल्-मौतिल्लजी वुक्कि-ल बिकुम् सुम्-म इला रब्बिकुम्
 तुर्जअून ० व लौ तरा इजिल्-मुज्रिम्-न नाकिसू रुऊसिहिम्
 अिन-द रब्बिहिम्, रब्बना अब्सरना व समिअना फर्जिअना
 नअमल् सालिहन् इन्ना मुकिनून ० व लौ शिअना
 लआतैना कुल्-ल नफिसन् हुदाहा व लाकिन् हक्कल्-कौलु
 मिन्नी ल-अम्-लअन्-न जहन्न-म मिनल्-जिन्नति वन्नासि
 अज्मअीन ० फजुकू बिमा नसीतुम् लिका-अ यौमिकुम्
 हाजा इन्ना नसीनाकुम् व जुकू

عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا
 بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝ تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ
 عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝
 فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً لِّمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أَفَسَوْفَ
 كُنْ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ۚ لَا يَسْتَوُونَ ۚ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
 فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا لِّهَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ
 النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ
 الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَكَذِّبُونَ ۝ وَلَتَرْيَبُنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ

अजाबल्-खुल्दि बिमा कुन्तुम् तअमलून ० इन्मा युअमिनु
 बिआयातिनल्लजी-न इजा जुविकरु बिहा खरू सुज्जदं-व
 सब्बहू बिहमिद रब्बिहिम् व हुम् ला यस्तविबरून ०
 तत-जाफा जुनुबहुम् अनिल्-मजाजिअि यदउ-न रब्बहुम्
 खौफं-व-त-मअं-व मिम्मा रजकनाहुम् युन्फिकून ० फला
 तअलमु नफसुम्-मा उखिफ-य लहुम् मिन् कुरति अअयुनिन्
 जजा-अम् बिमा कानू यअममलून ० अ-फ-मन् का-न
 मुअमिनन् कमन् का-न फसिकन्, ला यस्तवून ०
 अम्मल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ-लहुम्
 जन्नातुल्-मअवा नुजुलम् बिमा कानू यअमलून ० व
 अम्मल्लजी-न फ-सकू फ-मअवाहुमुन्नारु, कुल्-लमा अरादू
 अय्यखरुजू मिन्हा उईदू फीहा व की-ल लहुम् जुकू
 अजाबन्नारिल्लजी कुन्तुम् बिही तुकज्जिबून ० व
 ल-नुजीकन्नुहुम् मिनल् अजाबिल्- अदना दुनलअजाबिल्

الْأَكْبَرُ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ
 عَنْهَا إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ
 فِي مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ آيَةً
 يَّهْدُونَ يَا مَعْرُوفُ أَتَىكَ الْفَوَاقِشُ ۝ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ
 بَيْنَهُم يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمَا أَهْلَكْنَا
 مِنْ قَبْلِهِمْ ۝ مِنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسْجِدِهِمْ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً
 أَفَلَا يَسْمَعُونَ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ
 زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ۝ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا

अक्बरी लअल्लहुम् यरजिउन् ० व मन अज़लमु मिम्मन्
 जुक्कि-र बिआयाति रब्बिही सुम्-म अअर-ज अन्हा,
 इन्ना मिनल् मुज्रिमी-न मुत्तकिमून ० व ल-कद् आतैना
 मुसल्-किता-ब फला तकुन् फी मिरयतिम् मिल्लिका-इही
 व जअल्लाहु हुदल् लि-बनी इसाईल ० व जअल्ला
 मिन्हुम् अ-इम्मतय्-यहदू-न बिअम्रिना लम्मा स-बरु, व
 कानू बिआयातिना यूकिनून ० इन्-न रब्ब-क हु-व
 यफिसलु बैनहुम् यौमल्-कियामति फीमा कानू फीहि
 यख्तलिफून ० अ-व लम् यहिद लहुम् कम् अहलक्ना
 मिन् कब्लिहिम् मिनल्-कुरुनि यम्शू-न फी मसाकिनिहिम्,
 इन्-न फी जालि-क लआयातिन्, अ-फला यसमउन् ०
 अ-व लम् यरौ अन्ना नुसूकुल्-मा-अइलल्-अर्जिल्-जुरुजि
 फनुख्रिजु बिही जरअन् तअकुलु मिन्हु अनआमुहुम् व
 अन्फुसुहुम्, अ-फला युब्सिरून ० व यकूलू-न मता

الْفَتْحُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ
وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرِائَهُمْ مُلْتَضِرُونَ ۝

हाजल्-फत्हु इन् कुन्तुम् सादिकीन ० कुल यौमल्-फत्हि
ला यन्फउल्लजी-न क-फरु ईमानुहुम् व ला हुम् युन्जरुन
० फ-अअरिज् अन्हुम् वन्तजिर् इन्हुम् मुन्तजिरुन ०

चार करोड नेकियां

हज़रत तमीमदारी रज़ि. से रिवायत है के हुजुर पाक स.
ने फर्माया के जो शख्स इन चार कलमात को दस मर्तबा कहे तो
इस के लिए चार करोड नेकियां लिख दी जाती है.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ الْهَاءُ وَاحِدًا أَحَدًا
صَدَدًا لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدًا ۝

अशहदु अल्लाइलाहा इल्ललाहु वाहदहु ला शरीक लहु
इलाहंव्वाहिदन अहदन समदल्लम यत्ताखिज् साहिबतंवल्ला
वलदंवल्लम यकुल्लहु कुफुवन अहद ०

(मुसनदे अहमद, तिर्मीजी)

सुरेह यासीन

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَس ۝ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝
تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝ لِتُنذِرَ قَوْمًا أُنْذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ۝ لَقَدْ حَقَّ
الْقَوْلُ عَلَى أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَنْعَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى
الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا
فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝ وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أُنْذِرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا
يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنَ الْغَيْبَ فَبَشِّرْهُ بِعَفْوَةٍ وَ
اجْرِكْ كَرِيمٍ ۝ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ وَكُلُّ شَيْءٍ

या-सीन ० वल्कुरआनिल्-हकीम ० इन्न-क
ल-मिनल्-मुर्सलीन ० अला सिरातिम्-मुस्तकीम ० तन्जीलल्
अजीजिल्-रहीम ० लितुन्जि-र कौमम्मा उन्जि-र आबाउहुम्
फहुम् गाफिलून ० ल-कद् हक्कल्-कौलु अला अक्सरिहिम्
फहुम् ला युअमिनून ० इन्ना जअल्ना फी अअनाकिहिम्
अलालन् फहि-य इलल्-अज्कानि फहुम् मुक्महून ० व
जअल्ना मिम्बैनि ऐदीहिम् सददन्-व मिन् खल्फिहिम्
सददन् फ-अशैनाहुम् फहुम् ला युब्सिरून ० व सवाउन्
अलैहिम् अ-अन्जर्-तहुम् अम् लम् तुन्जिरहुम् ला युअमिनून
० इन्मा तुन्जिरु मनित्त-ब-अज्जिक्-र व खशि-यर्हमा-न
बिलौबि फ-बशिशरहु बिमरिफ-रतिन्-व अजिन् करीम ०
इन्ना नहनु नुहियल्-मौता व नक्तुबु मा कद्दम् व
आसा-रहुम्, व कुल्-ल शैइन्

أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُبِينٍ ۝ وَاصْرَبْ لَهُمْ مَثَلًا بِصَبْرِ الْقَرِيَةِ إِذْ جَاءَهَا
 الْمُرْسَلُونَ ۝ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا
 إِلَهُكُم مُّرْسَلُونَ ۝ قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنَّا نَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ
 ۝ قَالُوا رَبَّنَا عَلِّمْنَا لَنَا الْيَقِينَ لِمُرْسَلُونَ ۝ وَمَا عَلَّمْنَا إِلَّا الْبَلَاءَ
 الْمُبِينُ ۝ قَالُوا إِنَّا نَطَّيَّرُ بِكُمْ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُم مِّنَّا
 عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالُوا طَائِرُكُمْ مَعَكُمْ أَإِنْ ذُكِّرْتُمْ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝ وَ
 جَاءَ مِنَ أَقْصَا الْبَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَاقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ۝ اتَّبِعُوا مَن
 لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُّهْتَدُونَ ۝ وَإِلَىٰ لَا أَعْبُدُ إِلَّا فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ

अहसैनाहु फी इमामिम्-मुबीन ० वज्रिब लहुम् म-सलन
 अस्हाबल्-कस्-यति १ इन् जा-अहल-मुर-सलून ० इन्
 अस्सल्ला इलैहिमुन्नीन फ-कज्जबुहमा फ-अज्जज्ना बिसालिसिन्
 फकालू इन्ना इलैकुम् मुरसलून ० कालू मा अन्तुम् इल्ला
 ब-शरुम्-मिल्लुना व मा अज्जलर-हमानु मिन शैइन् इन्
 अन्तुम् इल्ला तकिजबून ० कालू रब्बुना यअलमु इन्ना
 इलैकुम् ल-मुर-सलून ० व मा अलैना इल्लल-बलागुल-मुबीन
 ० कालू इन्ना त-तय्यरना बिकुम् ल-इल्लम् तन्तह
 ल-नरजुमन्नकुम् व ल-यमस्सन्नकुम् मिन्ना अजाबुन् अलीम
 ० कालू ताईरुकुम् म-अकुम् अ-इन् जुविकस्तुम् बल्
 अन्तुम् कौमुम्-मुसिफून ० व जा-अ मिन् अक्सल-मदीनति
 रजुलुय-यसआ काल- या कौमित्तबिउल-मुर-सलीन ०
 इत्तबिउ मल्ला यसअलुकुम् अज्जव्वहुम् मुहत्तदून ० व मा
 लि-य ला अअबुदुल्लजी फ-त-रनी व इलैहि

تَرْجِعُونَ ۝ آتَاخُذُ مِنْ دُونِهِ إِلَهًا إِنْ يُرْدِنَ الرَّحْمَنُ يَضِئُ لَاتُغْنِي عَنِّي
 شَفَاعَةُ الْمُشْرِكِينَ ۝ إِنِّي إِذْ أَنفَىٰ ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ
 فَاسْمِعُونِ ۝ قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ لَيْلَتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ۝ بِمَا غَفَر لِي رَبِّي
 وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ۝ وَمَا أَتَزَلَّ عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِ ۝ مِنْ جُنْدٍ مِنَ السَّمَاءِ وَ
 مَا كُنَّا نُزْلِينَ ۝ إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَائِدُونَ ۝ يُخَسِّرُهُ
 عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ
 أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝ وَإِنْ كُلٌّ لَمَّا جَمِيعٌ
 لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝ وَآيَةٌ لَهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ

तुर्जउन् ० अ-अत्तखिजु मिन् दूनिही आलि-हतन्
 इय्युरिद्-निर्-रहमानु बिजुरिल्-ला तुर्नि अन्नी शफा-अतुहुम्
 शैअव्व ला युन्किजुन ० इन्नी इजल्-लफी जलालिम्-मुबीन
 ० इन्नी आमन्तु बिरब्बिकुम् फस्मउन् ० कीलदखुलिल्-जन्न-त
 का-ल यालै-त कौमी यअलमून् ० बिमा ग-फ-र ली
 रब्बी व ज-अ-लनी मिनल्-मुक्रमीन ० व मा अन्जल्ना
 अला कौमिही मिम्बअदिही मिन जुन्दिम्-मिनस्समा-इ व
 मा कुन्ना मुनिजलीन ० इन् कानत् इल्ला सै-हतंव्वाहि-
 दतन् फ-इजा हुम् खामिदून् ० या हस्-रतन् अलल्-इबादि,
 मा यअतीहिम् मिर्-रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तहिजऊन्
 ० अलम् यरौ कम् अहलक्ना कब्लहुम् मिनल्-कुरुनि
 अन्नुहुम् इलैहिम् ला यरजिउन् ० व इन् कुल्लुल्-लम्मा
 जमीउल्-लदैना मुहजरुन् ० व आ-यतुल्
 लहुमुल्-अरजुल्-मै-ततु अहयैनाहा व अख्ररज्जा मिन्हा

يَا كُؤُونَ ۝ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّنْ نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجْرْنَا فِيهَا مِن
 الْعُيُونِ ۝ لِيَأْكُلُوا مِن ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝ سُبْحَنَ
 الَّذِي خَلَقَ الْأَنزِلَ وَاجْعَلْنَا مِمَّا تَنْتَابُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا
 يَعْلَمُونَ ۝ وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ ۝ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُم مُّظْلِمُونَ ۝ وَ
 الشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۝ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَالْقَمَرَ قَدَرْنَاهُ مَنَازِلَ
 حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ۝ لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ
 سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝ وَآيَةٌ لَهُمُ أَنَا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمُ فِي الْفُلِ ۝
 الْمَشْجُونِ ۝ وَخَلَقْنَا لَهُم مِّن مِّثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ۝ وَإِنْ نَّشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيحَ

हब्बन् फमिन्हु यअकुलून ० व-जअल्ला फीहा जन्नातिम्
 मिन् नखीलिव-व अअनाबिव-व फज्जल्ला फीहा मिनल्-उयून
 ० लि-यअकुलू मिन् स-मरिही व मा अमिलतहु ऐदीहिम्
 अ-फला यशकूलन ० सुब्हानल्लजी ख-लकल्-अज्वा-ज
 कुल्लहा मिम्मा तुम्बितुल्-अरजु व मिन् अन्फुसिहिम् व
 मिम्मा ला यअलमून ० व आ-यतुल् लहुमुल्लैलु नस्-लखु
 मिन्हुल्लहा-र फ-इजा हुम् मुजिलमून ० वशशम्सु तज्री
 लिमुस्त-करिल्-लहा जालि-क तक्दीरुल् अजीजिल्-अलीम
 ० वल्क्-म-र कदरनाहु मनाजि-ल हत्ता आ-द
 कल्-उरजूनिल्-कदीम ० लशशम्सु यम्बगी लहा अन् तुदरिकल्
 क-म-र व लल्लैलु साबिकुन्-नहारि, व कुल्लुन् फी
 फ-लकिंय-यस्बहुन ० व आ-यतुल्-लहुम् अन्ना हमल्ला
 जुस्विय-तहुम् फिल्-फुल्किल्-मशहून ० व खलक्ना लहुम्
 मिम्-मिस्लिही मा यस्कबून ० व इन्न-शअ नुप्रिक्हुम् फला

لَهُمْ وَلَا هُمْ يُقْذَوْنَ ۝ إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا
 مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ
 رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۖ قَالَ
 الَّذِينَ كَفَرُوا وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْطَعِمُ مَنْ لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ ۖ إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا فِرٌّ
 ضَالِّينَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ مَا يَنْظُرُونَ
 إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ۝ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً
 وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۖ فَإِذَا هُمْ مِنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ
 يَنْسِلُونَ ۖ قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَنْ بَعَثَنَا مِنْ مَرْقَدِنَا ۚ هَذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ

सरी-ख लहुम् व ला हुम् युन्कजुन ० इल्ला रहम-तम्
 मिन्ना व मताअन् इला हीन ० व इजा की-ल लहुमुत्तकू
 मा बै-न ऐदीकुम् व मा खल्फकुम् लअल्लकुम् तुरहमून
 ० व मा तअतीहिम् मिन् आ-यतिम् मिन् आयाति
 रब्बिहिम् इल्ला कानू अन्हा मुअरिजीन ० व इजा की-ल
 लहुम् अन्फिकू मिम्मा र-ज-ककुमुल्लाहु कालल्लजी-न
 कफरु लिल्लजी-न आमनू अ-नुत्तिअमु मल्लौ यशाउल्लहु
 अत्-अ-महू इन् अन्तुम् इल्ला फी जलालिम्- मुबीन ० व
 यकूलू-न मता हाजल वअदु इन् कुन्तुम् सादिकीन ० मा
 यन्जुस-न इल्ला सै-हतं-व-वाहि-दतन् तअखुजुहुम् व हुम्
 यखिस्सिमून ० फला यस्ततीउ-न तौसि-यतं-व ला इला
 अहिलहिम् यरजिउन् ० व नुफिख फिस्सूरि फ-इजा हुम्
 मिनल्-अज्दासि इला रब्बिहिम् यन्सिलून ० कालू या वैलना
 म्मब-अ-सना मिम्-मरकदिना १ हाजा मा व-अ-दर्हमानु

الْمُرْسَلُونَ ۝ إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝ فَالْيَوْمَ
 لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنْ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ
 فِي شُغْلٍ فَاكِهُونَ ۝ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ عَلَى الْأَمْرِ آتَاكِ مُتَكُونُونَ ۝ لَهُمْ
 فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدْعُونَ ۝ سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ ۝ وَامْتَارُوا الْيَوْمَ
 آيَةً الْمَجْرُمُونَ ۝ أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَبْنَى أَدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ
 عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝ وَإِنْ أَعْبَدُونَنِي هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ
 جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ۝ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۝
 أَصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكْفِمُنَا أَيْدِيَهُمْ

व स-दकल-मुसलून ० इन् कानत् इल्ला सै-हतंवाहि-दतन्
 फ-इजा हुम् जमीउल्लदैना मुहजरून ० फलयौ-म ला
 तुज्जलमु नफ्सुन् शैअंव ला तुज्जौ-न इल्ला मा कुन्तुम्
 तअमलून ० इन्-न अस्हाबल्-जन्तिल्-यौ-म फी शुगुलिन्
 फाकिहून ० हुम् व अज्वाजुहुम् फी जिलालिन् अलल्-अराइकि
 मुत्ताकिऊन् ० लहुम् फीहा फाकि-हतुंव-व लहुम् मा
 यद्-दउन् ० सलामुन् कौलम् मिरिब्बि-रहीम ० वस्ताजुल्-यौ-म
 अय्युहल् मुज्रिमून ० अलम् अअहद्-इलैकुम् या बनी
 आद-म अल्ला तअबुदुशैता-न इन्हू लकुम् अदुवुम्-मुबीन
 ० व अनिअबुदुनी हाजा सिरातुम् मुस्तकीम ० व ल-कद्
 अजल्-ल मिन्कुम् जिलिल्लन् कसीरन् अ-फलम् तकून
 तअकिलून ० हाजिही जहन्मुल्लती कुन्तुम् तू-अदून ०
 इस्लौहल्-यौ-म बिमा कुन्तुम् तकफुरून् ० अलयौ-म नाफ्रामु
 अला अप्वाहिहिम् व तुकल्लिमुना ऐदीहिम्

وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ وَلَوْ شَاءَ لَطَمَسْنَا عَلَى أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا
 الْخِرَاطَ فَإِنِ يَبْصُرُونَ ۝ وَلَوْ شَاءَ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَ
 لَا يَرْجِعُونَ ۝ وَمَنْ نَعْمَرَهُ نُنْكِسْهُ فِي الْخَلْقِ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا عَلَّمْنَاهُ
 الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ ۝ قُرْآنٌ مُبِينٌ ۝ لِيُنْذِرَ مَنِ كَانَ حَيًّا
 وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِنَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا
 فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ۝ وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ۝ وَلَهُمْ فِيهَا
 مَنَافِعُ وَمَشَارِبٌ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّهُمْ
 يَبْصُرُونَ ۝ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُحَضَّرُونَ ۝ فَلَا يَحْزَنكَ

व तशहदु अरजुलहुम् बिमा कानू यक्सिबून् ० व लौ
 नशा-उ ल-तमस्ना अला अअयुनिहिम् फस्त-बकुस्सिरा-त
 फ-अन्ना युब्सिरून ० व लौ नशा-उ ल-मसख्रनाहुम्
 अला मका-नतिहिम् फ-मस्तताउ मुजिय्यंव-व ला युर्जिउन्
 ० व मन् नुअम्मिरहु नुनविकसहु फिल्लव्रल्कि अ-फला
 यअकिलून ० व मा अल्लमनाहुश-शिअ-र व मा यम्बगी
 लहु इन-हु-व इल्ला जिक्व्व कुरूआनुम्-मुबीनुल ० लियुन्जि-र
 मन् का-न हय्यव्व यहिक्कल्-कौलु अलल्-काफिरीन ०
 अव लम् यरौ अन्ना खलक्ना लहुम्! मिम्मा अमिल्ल
 ऐदीना अन्जामन् फहुम् लहा मालिकून ० व जल्लल्लाहा
 लहुम् फमिन्हा रक्बुहुम् व मिन्हा यअकुलून ० व लहुम्
 फीहा मनाफिउव मशारिबु, अ-फला यश्कुरून् ० वत्त-खज्जू
 मिन! दूनिल्लाहि अलि-हतल् लअल्लहुम् युन्सुरून् ० ला
 यस्ततीउ-न नस्-रहुम् व हुम् लहुम् जुन्दुम् मुहजुरून् ०

قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ أَوَلَمْ يَرِ الْإِنْسَانُ أَنَّا
 خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ۝ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا قَوْلَ نَسَى
 خَلْقَهُ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۝ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا
 أَوَّلَ مَرَّةٍ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ
 نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقَدُونَ ۝ أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
 بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ بَلَىٰ ۖ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۝ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا
 أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ فَسُبْحَنَ الَّذِي يَبْدِئُ مَلَكُوتُ كُلِّ
 شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

फल्ला यहजुन्-क कौलुहुम् " इन्ना नअलमु मा युसिररुन
 व मा युअलिनुन ० अ-व लम् यरल्ल-इन्सानु अन्ना
 खलक्नाहु मिन् नुत्फतिन् फ-इजा हु-व खसीमुम्-मुबीन
 ० व ज-र-ब लना म-सलंब्ब नसि-य खल्कहू, का-ल
 मंय्युहियल्- इजा-म व हि-य रमीम ० कुल् युहयीहल्लजी
 अन्श-अहा अब्ब-ल मरतिन्, व हु-व बिकुल्लि खल्किन्
 अलीमु-नि ० ल्लजी ज-अ-ल लकुम्
 मिनश्श-जरिल्-अख्र-जरी नारन् फ-इजा अन्तुम् मिन्हु
 तूकिदुन् ० अ-व लैसल्लजी ख-लकस्समावाति वल्लअ-ज
 बिकादिरिन् अला अंय्यखल्लु-क मिस्लहुम्, बला व हुवल्ल
 खल्लाकुल् अलीम ० इन्नमा अम्रहू इजा अरा-द शैअन्
 अंय्युकू-ल लहु कुन् फ-यकून् ० फ-सुब्हानल्लजी बि-यदिही
 म-लकूतु कुल्लि शैइब्ब इलैहि तुर्जउन् ०

सुरह-दुखान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

حَمْدٌ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ مُبَرَّكَةٍ ۚ إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ ۝
فِي مَا يُفَرِّقُ كُلِّ أَمْوَحٍ حَكِيمٍ ۝ أَمْ أَرَأَيْتُ إِذَا كُنَّا تُرُسَ لِلْإِنْسَانِ ۖ رَحْمَةً مِّنْ
رَّبِّكَ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ إِنَّ
كُنْتُمْ مُّوقِنِينَ ۝ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۝
بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ۝ فَأَن تَقْبَلُ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ۝
يَغْشَى النَّاسَ ۚ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُّؤْمِنُونَ ۝
أَنَّى لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ۝ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ

हा-मीम् ० वल्-किताबिल्-मुबीन ० इन्ना अन्जल्नाहु
फी लै-लतिम् मुबा-र-कतिन् इन्ना कुन्ना मुन्जिरीन ०
फीहा युफ्फकु कुल्लु अमिन् हकीम ० अमूर्म् मिन्
इन्दिना, इन्ना कुन्ना मुर्सिलीन ० रहम-तम् मिर्रब्बि-क
इन्नु हुवस्समीउल्-अलीम ० रब्बिस्समावाति वल्-अर्जि
व मा बैनुमा १ इन् कुन्तुम् मूकिनीन ० ला इल्ला-ह
इल्ला हु-व युहयी व युमीतु, रब्बुकुम् व रब्बु
आबा-इकुमुल्-अव्वलीन ० बल् हुम् फी शक्किन्-यल्-
अबून ० फर्तकिब् यौ-म तअतिस्समा-उ बिदुखानिम्-मुबीन
० यगूशन्ना-स, हाजा अजाबुन् अलीम ० रब्बनकिशफ्
अन्नल् अजाबुन् अलीम ० रब्बनकिशफ् अन्नल्-अजा-ब
इन्ना मुअ्मिनुन् ० अन्ना लहुमुज्जिक्का व कद् जा-अहुम्
रसूलुम्-मुबीन ० सुम्-म तवल्लौ अन्हु व कालू

مَجْنُونٌ ۚ إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ۚ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ
 الْكُبْرَىٰ إِنَّا مُنتَقِمُونَ ۚ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ
 كَرِيمٌ ۚ أَنْ أَدَّوْا إِلَىٰ عِبَادِ اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۚ وَأَنْ لَا تَعْلُوا
 عَلَى اللَّهِ إِنِّي آتِيكُمْ بِسُلْطَنِ مُّبِينٍ ۚ وَآتَىٰ عِذَّتْ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُون ۚ
 وَإِنْ لَمْ تُؤْمِنُوا لِي فَاعْتَرِزُوا ۚ فَدَعَا رَبَّهُ أَنْ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ۚ فَاسْرِ
 بِعِبَادِي لَيْلًا إِنَّكُمْ مُّتَّبِعُونَ ۚ وَاتْرِكِ الْبَازِرَ هَؤُلَاءِ إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُونَ ۚ
 كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۚ وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۚ وَنَعْمَةً كَانُوا فِيهَا
 فَكَاهِنِينَ ۚ كَذَلِكَ سَوَّأْنَا لَهُمْ قَوْمًا آخَرِينَ ۚ فَبَابَكْتُ عَلَيْهِمُ السَّيْءَ

मु-अल्लमुम्-मज्जून ० इन्ना काशिफुल्-अजाबि कलीलन्
 इन्नकुम् आ-इदून ० यौ-म नब्तिशुल् बत्-शतल्-कुब्रा
 इन्ना मुन्ताकिमून ० व ल-कद् फतन्ना कब्लहुम् कौ-म
 फिरऔ-न व जा-अहुम् रसूलुन् करीम ० अन् अदद्
 इलय्-य इबादल्लाहि, इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन ० व
 अल्-ला तअलू अलल्लाहि, इन्नी आतीकुम् बिसुलतानिम्
 -मुबीन ० व इन्नी उज्जु बिर्ब्बी व रब्बिकुम् अन्
 तरजुमून ० व इल्लम् तुअमिन् ली फअतजिलून ० फ-
 दआ रब्बहू अन्-न हाउला-इ कौमुम्-मुज्रिमून ० फ-असरि
 बिइबादी लैलन् इन्नकुम् मुत्त-बउन ० वतरुकिल्-बह-र
 रहवन्, इन्हुम् जुन्दुम् मुग्-स्कून ० कम् त-स्कू मिन्
 जन्नातिव्-व उयूनिव ० व जुखइव्-व मकामिन् करीमव ०
 व नअ-मतिन् कानू फीहा फकिहीन ० कजालि-फ, व
 औस्सनाहा कौमन् आ-खरीन ० फमा ब-कत् अलैहिमुस्समा-उ

الْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ۝ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مِنَ الْعَذَابِ
 الْمُهِينِ ۝ مِنْ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ كَانَ عَلِيًّا مِنَ الْمُسْرِفِينَ ۝ وَلَقَدْ اخْتَرْنَا
 عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝ وَأَتَيْنَهُمْ مِنَ الْأَيْتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُبِينٌ ۝ إِنْ
 هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ۝ إِنْ هِيَ إِلَّا أَمْوَاتٌ الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ۝ فَاتُوا
 بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
 أَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
 لَعِينِينَ ۝ مَا خَلَقْنَاهُمْ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ إِنْ يَوْمَ الْفَصْلِ
 مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلَىٰ عَنْ مَوْلَىٰ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝

वल्लुअरजु व मा कानू मुन्जरीन ० व ल-कद् नज्जैना
 बनी इस्राई-ल मिनल्-अजाबिल्-मुहीन ० मिन् फिर्औ-न,
 इन्नहू का-न आलि-यम् मिनल्-मुस्सिफीन ० व
 ल-कदिख्तरनाहुम् अला इल्मिन् अलल्-आलमीन ० व
 आतैनाहुम् मिनल्-आयाति मा फीहि बलाउम्-मुबीन ०
 इन्-न हाउला-इ ल-यकूलून ० इन् हि-य इल्ला
 मौततुनल्-ऊला व मा नाहनु बिमुन्शरीन ० फअतू
 बिआबा-इना इन् कुन्तुम् सादिकीन ० अ-हुम् खैरुन्
 अम् कौमु तुब्बइव्-वल्लजी-न मिन् कब्लिहिम्, अह्लकनाहुम्
 इन्हुम् कानू मुज्जिमीन ० व मा खलक्नरसमावाति
 वल्लुअर-ज व मा बैनहुमा लाइबीन ० मा खलक्नाहुमा
 इल्ला बिल्हविक व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअलमून
 ० इन्-न यौमल्-फस्लि मीकातुहुम् अज्मइन ० यौ-म ला
 युगानी मौलन् अम्मौलन् शैअव्-व ला हुम् युन्सरून ०

لَا مَن رَّحِمَ اللَّهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ إِنَّ شَجَرَتَ الزُّقُومِ طَعَامُ
 الْأَشْيَمِ ۝ كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ كَغَلِي الْحَمِيمِ ۝ خَذُوهُ فَأَعْيُوهُ إِلَى
 سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۝ ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ
 الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝ إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۝ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ
 أَمِينٍ ۝ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝ يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَلِّبِينَ
 كَذَلِكَ سَوْجَدْنَاهُمْ بِخُورٍ عَيْنٍ ۝ يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ
 لَا يَذُقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ وَوَقَّهْهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝
 فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ فَإِنَّمَا يَسْتَرْئِي لِسَانُكَ لَعْنَهُمْ يَتَذَكَّرُونَ
 فَإِنَّ تَقَبَّ إِلَهُم مُّرْتَقِبُونَ ۝

इल्ला मरहिमल्लाहु, इन्नु हुवल अजीजुरहीम ० इन्-न
 श-ज-स्तज्जक्कूम ० तआमुल्-असीम ० कल्मुहिल यल्ली
 फिल्बुतून ० क-गलयिल्-हमीम ० खुजूहु फअतिलूहु इला
 सवाइल्-जहीम ० सुम्-म सुब्बू फौ-क रअसिही मिन्
 अजाबिल्-हमीम ० जुक् इन्-क अत्तल्-अजीजुल्-करीम
 ० इन्-न हाज्जा मा कुत्तुम् बिही तम्तरून ० इन्ल्-मुत्तकी-न
 फी मकामिन् अमीन ० फी जन्नातिव्-व अयूनिं ०
 यल्बसू-न मिन् सुन्दुसिन्-व इस्तब्रकिम् मु-तकाबिलीन ०
 कजालि-क, व जव्वज्नाहुम् बिहूरिन् अीन ० यदउ-न
 फीहा बिकुल्लि फाकि-हतिन् आमिनीन ० ला यजूकू-न
 फीहल्मौ-त इल्लल्-मौ-ततल्-ऊला व वकाहुम् अजाबल्-जहीम
 ० फजल्-म-मिर्रिब्बि-क, जालि-क हुवल फौजुल्-अजीम ०
 फ-इन्मा यस्सरनाहु बिलिसानि-क लअल्लहुम् य-तजक्करून
 ० फर्-तकिब्-इन्हुम् मुर-तकिबून ०

सुरह - फताह

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا ۚ لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَخَّرَ وَبَيِّنَ نِعْمَتَهُ
عَلَيْكَ وَيَهْدِيكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۚ وَيَنْصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَظِيمًا ۚ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ
فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَعَ إِيْمَانِهِمْ ۚ وَرَبُّهُ جُنُودَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۚ لِيَدْخُلَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا وَكَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۚ وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ۚ وَيُعَذِّبُ
الْمُنَافِقِينَ ۖ وَالْمُنَافِقَاتِ ۖ الْفَاسِقِينَ ۖ وَالْمُشْرِكِينَ ۖ وَالْمُشْرِكَاتِ ۖ فَظَنِّ يَ اللَّهُ ظَنَّ السَّوْءِ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ

इन्ना फ-तहना ल-क फतहम्-मुबीनल ० लि-यागिफ-र
लकल्लाहु मा तकद-म मिन् जम्बि-क व मा त-अख्ख-र
व युतिम् निअ-म-तहू अलै-क व यहिद-य-क
सिरातम्-मुस्तकीमंव ० व यन्सु-रकल्लाहु नसन् अजीजा
० हुवल्लजी अन्जलस्सकी-न-त फी कुलूबिल्-मुअमिनी-न
लि-यज्दादू ईमानम्-म-अ ईमानिहिम्, व लिल्लाहि
जुनुदुस्समावाति वल् अर्जि, व कानल्लाहु अलीमन्
हकीमा ० लियुदखिलल्-मुअमिनी-न वल्मुअमिनाति
जन्नातिन् तजरी मिन् तहितहल्-अन्हारु खालिदी-न फीहा
व युक्फिफ-र अज्हुम् सय्यिआतिहिम्, व का-न जालि-क
इन्दल्लाहि फौजन् अजीमंव ० व युअज्जिबल्-मुनाफिकी-न
वल्मुनाफिकाति वल् मुशिरकी-न वल् मुशिरकातिज्-जान्नी-न
बिल्लाहि जन्नस्सौई, अलैहिम् दाई-रतुस्-सौइ व गजिबल्लाहु

السَّوَاءُ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝
 وَبَشِّرِ الصَّادِقِينَ الَّذِينَ إِذَا أُتُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ يُبَايِعُونَ اللَّهََ وَرَسُولَهُ وَمَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُ
 الْكَافِرِينَ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ لِيُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً
 وَأَصِيلًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهََ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ فَمَنْ
 نَكَثَ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ عَلَىٰ نَفْسِهِ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ اللَّهُ فَمِنْ أَجْرٍ أَعْظَمًا ۝
 سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلْفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا يَقُولُونَ
 بِالسَّيِّئَةِ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا
 أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ يَنْقَلِبَ الرَّسُولُ

अलैहिम् व ल-अ-नहुम् व अ-अद्-द लहुम् जहन्न-म,
 व साअत् मसीरा ० व लिल्लाहि जुनुदुस्समावाति वल् अर्जि,
 व कानल्लाहु अजीजन् हकीमा ० इन्न अरसल्ला-क
 शाहिदं-व मुबशिशरं-व नजीरा ० लितुअमिन् बिल्लाहि
 व रसूलिही व तुअज्जिरुहु व तुवक्किरुहु, व तुसब्बिहुहु
 बुक्र-तं-व असीला ० इन्नल्लजी-न युबायिउन्- क
 इन्नमा युबायिउनल्ला-ह, यदुल्लाहि फौ-क ऐदीहिम् फ-मन्-न-
 क-स फ-इन्नमा यन्कुसु अला नफिसही व मन् औफा
 बिमा आ-ह-द अलैहुल्ला-ह फ-सयुअतीहि अज्जन् अजीमा
 ० स-यक्लु ल-कल्-मुखल्लफू-न मिनल्- अअराबि श-गलल्ला
 अम्वालुना व अहलुना फस्तगिफर् लना यकुलू-न
 बि-अल्सि-नतिहिम् मा लै-स फी कुलूबिहिम्, कुल्
 फ-मय्यम्लिक् लकुम् मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द बिकुम्
 जर्न औ अरा-द बिकुम् नफअन्, बल् कानल्लाहु बिमा
 तअमलू-न खबीरा ० बल् जनन्तुम् अल्लयय्यन्कलिबर्-रसूलु

وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا ۖ وَرَيْنَ ذَٰلِكَ ۖ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَ السَّوْءِ ۖ وَكُنْتُمْ
 قَوْمًا بُورًا ۝ وَمَنْ لَّمْ يُوْمِنْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ۝ وَاللَّهُ
 مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ يُعْزِزُ مَنْ يَّشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاءُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا
 رَّحِيمًا ۝ سَيَقُولُ الْكَافِرُونَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَائِرٍ لِّتَأْخُذُوا بِهَا ذُرًۖوًا نَّتَّبِعْكُمْ
 يُرِيدُونَ أَن يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ قُلْ لَّن تَتَّبِعُونَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلُ
 فَسَيَقُولُونَ بَلْ تَحْسُدُونَنَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ قُلْ لِلَّهِ الْخَلْفَيْنِ مِنْ
 الْأَعْرَابِ سَتَدْعُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَأْسٍ شَدِيدٍ تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ ۚ فَإِنْ
 تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا ۖ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا كَذٰلِكَ تَكُونُوا مِنَ الْيَٰعِزِّبِ كُمْ

वल्-मुअमिनु-न इला अहलीहिम् अ-बदंब् जुय्यि-न जालि-क
 फी कुलूबिकुम् व जनन्तुम् जन्नस्सौइ व कुन्तुम् कौमम्-बूरा
 ० व मल्लम् युअमिम्-बिल्लाहि व रसूलिही फ-इन्ना
 अअतदन्ना लिक्काफिरी-न सईरा ० व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति
 वल्अर्जि, यरिफरु लिमंय्यशा-उ व युअज्जिबु मंय्यशा-उ,
 व कानल्लाहु, गफूस-रहीमा ० स-यकुलुल्-मुखल्लफु-न
 इजन्त- लक्तुम् इला मगानि-म लितअखुजूहा जरूना
 नत्तबिअकुम् युरीदू-न अंय्युबदिलू कलामल्लाहि, कुल्-लन्
 तत्तबिउन्ना कजालिकुम् कालल्लाहु मिन् कब्बु फ-स-यकूलू-न
 बल् तहसुदु-नना बल् कानू ला यफकहू-न इल्ला कलीला
 ० कुल् लिल्-मुखल्लफी-न मिनल्-अअराबि स-तुदऔ-न
 इला कौमिन् उली बअसिन् शदीदिन् तुकातिलूनहुम् औ
 युस्लिम्-न फ-इन् तुतीअू युअतिकुमुल्लाहु अजरन् हसनन्
 व इन् त-तवल्लौ कमा तवल्लैतुम् मिन् कब्बु युअज्जिबुकुम्

عَذَابًا أَلِيمًا ۝ لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ
 حَرْجٌ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يَدْخُلْهُ جَنَّتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَنْ
 يَتَوَلَّ يَْعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ
 الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ۝ وَ
 مَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ وَعَدَكُمْ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً
 تَأْخُذُونَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هَذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ وَلِتَكُونَ آيَةً
 لِلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝ وَأُخْرَى لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا
 وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝ وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوْا الْأَدْبَارَ ثُمَّ

अजाबन् अलीमा ० लै-स अलल्-अअमा ह-रजुव्-व
 ला अलल्-अअरजि हर-जुव-व ला अ-लल्मरीजि हरजुन,
 वमंय्युतिइल्ला-ह व रसूलहू युदखिल्हु जन्नातिन् तजरी
 मिन तहितहल्-अन्हारु व मंय्य-तवल-ल युअज्जिब्हु
 अजाबन् अलीमा ० ल-कद् रजियल्लाहु अनिल्-मुअमिनी-न
 इज् युबायिउन-क तहतश्श-ज-रति फ-अलि-म मा फी
 कुलूबिहिम् फ-अज्ज-लस्सकी-न-त अलैहिम् व असाबहुम्
 फतहन् करीबा ० व मगानि-म कसी-रतंय्-यअखुजुनहा,
 व कानल्लाहु अजीजन् हकीमा ० व-अ-दकुमुल्लाहु
 मगानि-म कसी-रतन् तअखुजुनहा फ-अज्ज-ल लकुम्
 हाजिही व कफ्-फ एदि-यन्नासि अन्कुम् व लितकू-न
 आ-यतल्-लिल्मुअमिनी-न व यहिद-यकुम् सिरातम्-मुस्तकीमा
 ० व उख्ररा लम् तक्दिस् अलैहा कद् अहातल्लाहु बिहा,
 व कानल्लाहु अला कुल्लि शैइन् कदीरा ० व लौ
 कात-लकुमुल्लजी-न क-फल् ल-वल्लवुल्-अदबा-र सुम्-म

لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَكِنْ تَجِدُ
 لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝ وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ
 مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝ هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا
 وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيِ مَعَكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَجَلَّةٌ وَلَوْلَا رِجَالٌ
 مُؤْمِنُونَ وَرِشَاءٌ مُؤْمِنَةٌ لَمْ تَغْلَبْهُمْ ۚ أَنْ تَطَّوَّهُمْ فَيُضَيِّبَكُمْ فَيَنْهَمُ مَعَرَّةً
 يَغِيرُ عِلْمَ لَيْدٍ خَلَّ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ لَوْ تَرَىٰ أُولَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ
 عَذَابَ الْآلِيمِ ۝ إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ
 فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ ۖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَ

ला यजिदू-न वलिय्यं व ला नसीरा ० सुन्नतल्लाहिल्लती
 कद् ख-लत् मिन् कब्लु व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि
 तब्दीला ० व हुवल्लजी कफ-फ ऐदि-यहुम् अन्कुम् व
 ऐदि-यकुम् अन्हुम् बि-बतनि मक्क-त मिम्-बअदि अन्
 अज्-फ-रकुम् अलैहिम्, व कानल्लाहु बिमा तअलमू-न
 बसीरा ० हुमुल्लजी-न कफरु व सददूकुम्,
 अनिल्-मस्जिदिल्-हरामि वल्हद्-य मअकुफन् अय्यबल्लु-ग
 महिल्-लहु, व लौ ला रिजालुम्-मुअमिन्-न व निसाउम्
 मुअमिनातुल्-लम् तअलमुहुम् अन् त-तउहुम् फतुसी-बकुम्
 मिन्हुम् म-अरतुम्-बिगैरि इल्मिन् लि-युदखिल-ल्लाहु फी
 रहमतिही मय्यशा-उ लौ तजय्यलू ल-अज्जबूनल्लजी-न
 क-फरु मिन्हुम् अजाबन् अलीमा ० इज् ज-अलल्लजी-न
 क-फरु फी कुलूबिहिमुल्-हमिय्य-त हमिय्यल्-जाहिलिय्यति
 फ-अन्जलल्लाहु सकी-न-तहु अला रसूलिही व
 अलल्-मुअमिनी-न व अल्ल-महुम् कलि-मतत्-तक्वा व

كَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝ لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّسُلَ
 بِالْحَقِّ لَتَدْخُلَنَّ السَّجْدَ الْأَحْرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِينَ مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ
 لَا تَخَافُونَ فَعَلِمُوا مَا تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ۝ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ
 رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝
 مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا
 يُعَبِّدُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا سَبِيحًا لَهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِنْ أَثَرِ السُّجُودِ
 ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ كَزَكْرَةٍ أَخْرَجَ شَطَاةً فَآزَرَهُ
 فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَى عَلَى سَوْقِهِ يُعْجِبُ الرُّسُلَ لِيُعْظِظَ بِهِمُ الْكُفَّارُ وَعَدَ اللَّهُ
 الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا

कानु अ-हक्-क बिहा व अहलहा, व कानल्लहु बिकुल्लि
 शैइन् अलीमा ० ल-कद् स-दकल्लाहु रसूलहुर्खअया बिल्हविक
 ल-तदखुलुन्नल्- मस्जिदल्-हरा-म इन् शा-अल्लाहु आमिनी-न
 मुहल्लिकी-न रुऊ-सकुम् व मुकस्सिरी-न ला तख्राफू-न,
 फ-अलि-म मा लम् तअ-लमु फ-ज-अ-ल मिन् दुनि
 जालि-क फतहन् करीबा ० हुवल्लजी अस्स-ल रसूलहु
 बिल्हुदा व दीनिल्-हविक लियुजिह-रहू अलददीनि कुल्लिही,
 व कफा बिल्लाहि शहीदा ० मुहम्मदुर-रसूलुल्लाहि, वल्लजी-न
 म-अहू अशिद्दा-उ अलल्-कुफफारि रु-हमा-उ बैनहुम्
 तराहुम् रुक्क-अन् सुज्ज-दय्यब्तागू-न फजल्-मिनल्लाहि
 व रिज्वानन् सीमाहुम् फी वुजूहिहिम्-मिन् अ-सरिस्सुजूदि,
 जालि-क म-सलुहुम् फित्तौराति व म-सलुहुम् फिल्-इन्जीलि,
 क-जइन् अख-ज शत्-अहू फआ-ज-रहू फस्तग-ल-ज
 फस्तवा अला सूकिही युअजिबुज्जुरा-अ लि-यगी-ज
 बिहिमुल्-कुफफा-र, व-अदल्लाहुल्लजी-न आमनु व
 अमिलुसालिहाति मिन्हुम् मगफि-स्तव-व अज्रन् अजीमा ०

सूरेह काफ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قَسَّوَالْقُرْآنِ الْبَجِيدِ ۚ بَلْ عَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ فَقَالَ الْكَافِرُونَ
هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ۚ إِذَا امْتَنَّا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذَلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ۚ قَدْ عَلِمْنَا
مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا كِتَابٌ حَفِيظٌ ۚ بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ
لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَرِيجٍ ۚ أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا
وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ ۚ وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا
فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ۚ تَبَصَّرَةٌ وَدِ كُرَى لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ۚ وَنَزَّلْنَا
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُبَارَكًا فَأَنبَتْنَا فِيهِ جَنَّتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ۚ وَالنَّخْلَ

काफ । वल्-कुरआनिल्-मजीद बल् अजिबु अन् जा-अहुम्
मुन्जिरुम्-मिन्हुम् फकालल्-काफिरु-न हाजा शैउन् अजीब
० अ-इजा मित्ना व कुन्ना तुराबन् जालि-क रज्जुम्-बइद
० कद् अलिम्ना मा तुन्कुसुल्-अरजु मिन्हुम् व इन्दना
किताबुन् हफीज ० बल् कज्जबू बिल्-हक्क लम्मा
जा-अहुम् फहुम् फी अमूरिम्-मरीज ० अ-फ लम्
युन्जुरु इलस्समा-इ फौक्हुम् कै-फ बनैनाहा व जय्यन्नाहा
व मा लहा मिन् फुरुज ० वल्अर्-ज मददनाहा व
अल्कैना फीहा खासि-य व अम्बतना फीहा मिन् कुल्लि
जौजिम्-बहीज ० तबिस-स्तं-व जिक्का लिक्ल्लि अब्दिममुनीब
० व नज्जल्ना मिनस्समा-इ मा-अम् मुबा-रक्न् फ-अम्बतना
बिही जन्नातिं-व हब्बल्-हसीद ० वन्नाख-ल

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ رَزَقْنَا الْعَبَادَ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلَدَةً مَّيِّتًا ۝ كَذَلِكَ
 الْفُتُورُ ۝ كَذَبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ ۝ أَصْحَابُ الرِّيسِ وَشُعُودٌ ۝ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ
 وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۝ وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۝ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِي ۝
 أَفَعَيَيْنَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا
 الْإِنسَانَ وَنَعَلْنَاهُ إِيَّاهُ فَسُوءًا ۚ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝
 إِذِ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّينَ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ۝ مَا يَلْفُظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا
 لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ۝ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ
 تَحِيدُ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ۝ وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا

बासिकातिल्-लहा तलउन्-नजीद ० रिज्कल्-लिल्इबादि
 व अह्यैना बिही बल्द-तम्-मैतन्, कजालिकल्-खुरज
 ० कज्जबत् कब्लाहुम् कौमु नूहिन्-व अस्हाबुरस्सि व
 समूद ० व आदन्-व फिरऔनु व इख्वानु लूत ० व
 अस्हाबुल्-ऐ-कति व कौमु तुब्बइन्, कुल्लुन् कज्ज-बर्सु-ल
 फ-हक्-क् वइद ० अ-फ-अयीना बिल्खल्किल्-अव्वलि,
 बल् हुम् फी लबिस्म-मिन खल्किन् जदीद ० व ल-कद्
 खलक्नल्-इन्सा-न व नअल्मु मा तुवस्विसु बिहा नप्सुहू
 व नहन् अक्रबु इलैहि मिन् हब्बिल्-वरीद ० इज्
 य-तलक्कल्-मु-तलक्कियानि अनिल्यमीनि व अनिशिशमालि
 कइद ० मा यल्फिजु मिन् कौलिन् इल्ला लदैहि रकीबुन्
 अतीद ० व जाअत् सक्-स्तुल्-मौति बिल्हक्कि, जालि-क
 मा कुन्-त मिन्हु तहीद ० व नुफि-ख फिस्सूरि,
 जालि-क यौमुल्-वइद ० व जाअत् कुल्लु नप्सिम्

سَابِقٌ وَشَهِيدٌ ۝ لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ
فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۝ وَقَالَ قَرِينُهُ هَذَا مَا لَدَىٰ عَتِيدٍ ۝ اَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ
كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ۝ مُّتَنَاعٍ ۝ لِخَيْرِ مُّعْتَدٍ مُّرِيبٍ ۝ الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا
آخَرَ فَأَلْقِيهِ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ۝ قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَٰكِن
كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّْ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُمْ بِالْوَعِيدِ ۝
مَا يُبَدِّلُ الْقَوْلُ لَدَىٰ وَمَا أَنَا بِظَالِمٍ ۝ اَلْعَبِيدُ ۝ يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ
أَمْتَلَتْ وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَّزِيدٍ ۝ وَأَزَلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۝
هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيفٍ ۝ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَنَ الْغَيْبَ وَجَاءَ

म-अहा सा-इकुब्ब शहीद ० ल-कद् कुन्-त फी
गफलतिम्-मिन् हाजा फ-कशफना अन्-क गिता-अ-क
फ-ब-सरुकल्-यौ-म हदीद ० व का-ल करीनुहू हाजा मा
ल-दय्-य अतीद ० अल्किया फी जहन्न-म कुल्-ल
कफफारिन् अनीद ० मन्नाइल्-लिल्बैरि मुअतदिम्-मुरीब ०
अल्लजी ज-अ-ल मअल्लाहि इलाहन् आ-ख-र फ-अल्कियाहु
फिल्-अजाबिश्-शदीद ० का-ल करीनुहू रब्बना मा अतगैतुहू
व लाकिन् का-न फी जलालिम्-बइद ० का-ल ला
तख़ासिम् ल-दय्-य व कद् कदमतु इलैकुम् बिल्-वइद ०
मा युबदलुल्-कौलु ल-दय्-य व मा अ-न
बिजल्लामिल्-लिल्-अबीद ० यौ-म नकूलु लि-जहन्न-म
हलिम्त-लअति व तकूलु हल् मिम्-मजीद ० व उज़िल्-फतिल्
जन्नतु लिल्मुत्तकी-न गै-र बइद ० हाजा मा तु-अदू-न
लिकुल्लि अव्वाबिन् हफीज ० मन् खशियर्रहमा-न बिलौबि

بِقَلْبٍ مُنِيبٍ ۖ اَدْخُلُوْهَا بِسَلَامٍۭ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ۝ لَّهُمْ مَا يَشَاءُوْنَ فِيْهَا
 وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا
 فِي الْبِلَادِ هَلْ مِنْ مَّجِيْصٍ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّمَنْ كَرىٰ لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ
 اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ
 اَيَّامٍ ۚ وَمَا مَسَّنَا مِنْ لَّغْوٍ ۝ فَاَصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
 قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ۚ وَمِنَ الْاَيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ۝
 وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۝ يَوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ

व जा-अ बिकल्बिम्-मुनीब ० निदखुलूहा बि-सलामिन्,
 जालि-क यौमुल्-खुलूद ० लहुम्-मा यशाऊ-न फीहा व
 लदैना मजीद ० व कम् अहलक्ना कब्लहुम् मिन्
 कर्निन् हुम् अशदुद् मिन्हुम् बतशन् फ-नक्कबू फिल्-बिलादि,
 हल् मिम्-महीस ० इन्-न फी जालि-क लजिका लिमन्
 का-न लहु कल्बुन् औ अल्कस्मम्-अ व हु-व शहीद ०
 व ल-कद् खलक्नस्समावाति वल्-अर्-ज व मा बैनहुमा
 फी सित्ताति अय्यामिन्-व मा मस्सना मिल्लुगूब ०
 फस्बिर् अला मा यकूलू-न व सब्बिह बिहम्दि रब्बि-क
 कब्-ल तुलूइश्शम्सि व कब्लल्-गुरूब ० व मिनल्लैलि
 फ-सब्बिहहु व अद्बारस्-सुजूद ० वस्तमिअ यौ-म
 युनादिल्-मुनादि मिन्-मकानिन् करीब ० यौ-म
 यस्मउनस्-सै-ह-त बिल्हक्कि,

ذَلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ۝ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَاللَّيْلُ الْمَوْتُ ۝ يَوْمَ تَشَقُّ
الْأَرْضُ عَنْهُمْ يَسْرَاعًا ۚ ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ۝ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا
أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۖ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ وَعِيدِ ۝

जालि-क यौमुल् खुरुज ० इन्ना नहनु नुहयी व नुमीतु
व इलैनल्-मसीर ० यौ-म तशक्क-कुल्-अरजु अन्हुम्
सिराअन्, जालि-क हशरुन् अलैना यसीर ० नहनु
अअल्मु बिमा यकूलू-न व मा अन्-त अलैहिम्
बि-जब्बारिन् फ-जक्किर् बिल्-कुरआनि मय्यखाफु
वइद ०

अदाए शुक्र

जिस ने ये दुआ सुबह के वक्त पढ़ी तो इस ने इस दिन का
शुक्र अदा कर दिया और जिस ने ये दुआ शाम के वक्त पढ़ी
तो इस ने इस रात का शुक्र अदा कर दिया। (एक मर्तबा)

اللَّهُمَّ مَا صَبَحَ بِي مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحَدِّكَ لِأَشْرِيكَ
لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ

अल्लाहुम्म मा असबह बि मिन्नअमतिन अवबिअहदिम
म्मिन खलकिक फमिनक वहदक ला शरीक लक
फलकलहमदु वलकशशुकुरु.

शाम को असबह की जगह अमसा पढ़े।

सुरह-रहमान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الرَّحْمَنُ ۚ عَلَّمَ الْقُرْآنَ ۚ خَلَقَ الْإِنْسَانَ ۚ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۚ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ يَحْسِبَانِ ۚ وَالْجَبَرُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ ۚ وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا ۚ وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ۚ أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ۚ وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ۚ وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ ۚ فِيهَا فَالِكِهْمُ تُزْوُ النَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ۚ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ ۚ الرِّيحَانُ ۚ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۚ وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ مِنْ نَارٍ ۚ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ ۚ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۚ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ

अरहमानु ० अल्ल-मलू-कुरआन. खलकलू इन्सा-न ०
अल्ल-महुलू-बयान ० अशशम्सु वल्क-मरु बिहुस्बानिंव
० वन्नज्मु वशश-जरु यस्जुदान ० वस्समा-अ र-फ-अहा
व व-जअलू-मीजान ० अल्ला ततगौ फिल्मीजान ० व
अकीमुलू-वजू-न बिलूकिस्ति व ला तुख्सरुलू-मीजान
० वलूअर-ज व-ज-अहा लिलू-अनाम ० फीहा
फाकि-हतुवू-वन्नाखु जातुलू अक्माम ० वलहुब्बु जुलू-अस्फि
वर-रैहान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िजबान
० ख-लकलू-इन्सा-न मिन् सल्सालिन् कलू-फख़्खार ०
व ख-लकलू-जानू-न मिम्-मारिजिम्-मिन्-नार ०
फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िजबान ०
रब्बुलूमशिरकैनि व रब्बुलू-मग़िबैन ० फबि-अय्यि आला-इ
रब्बिकुमा तुकज़िजबान ०

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ۚ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ رَبَّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ يُخَوِّجُ
 مِنْهُمَا اللَّوْءُ وَالْمَرَجَانُ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ رَبَّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ
 كَالْأَعْلَامِ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ رَبَّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَإِنَّ ۚ وَيَسْقَى وَجْهَ رَبِّكَ ذُو
 الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ رَبَّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
 كُلُّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ رَبَّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ سَفَرُكُمْ لَكُمْ آيَةُ الثَّقَلَيْنِ ۚ فَيَأْتِي
 الْآءَ رَبَّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ يَمْشُرُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِرَاسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَ
 الْأَرْضِ فَانْفُذُوا ۚ لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ رَبَّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا

म-रुजल्-बहरैनि यल्लकियान ० बैनहुमा बर्-जखुल-ला
 यबर्गियान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान
 ० यख्रजु मिन्हुमल्-लुअलुउ वल्-मरजान ० फबि-अय्यि
 आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान ० व लहुल्- जवारिल्-
 मुश-आतु फिल्बहिर कल्-अअलाम ० फबि-अय्यि आला-इ
 रब्बिकुमा तुकज़िबान ० कुल्लु मन् अलैहा फानिन्- ०
 -व यब्का वज्हु रब्बि-क जुल्-जलालि वल्-इक्राम ०
 फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान ० यसअलुहु
 मन् फिस्समावाति वल्अर्जि, कुल्-ल यौमिन् हु-व फी
 शअनिन् ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान
 ० स-नफरुगु लकुम् अय्युहस्स-कलान ० फबि-अय्यि
 आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान ० या मअ -शरल्-जिन्नि
 वल्इन्सि इनिस्त-तअतुम् अन् तन्फुजूमिन् अक्ता-रिस्समावाति
 वल्अर्जि फन्फुजू ला तन्फुजू-न इल्ला बिसुल्लान ० फबि-अय्यि
 आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान ० युर-सलु अलैकुमा

لَهُوَ أَظْمَنُ نَارِهِ وَنَحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرُونَ ۚ فَيَأْتِي الْآءِ رَبَّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۖ فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ سَرَادَةً كَالذِّهَانِ ۚ فَيَأْتِي الْآءِ رَبَّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۖ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعْنَى عَنْ ذُنُوبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ۚ فَيَأْتِي الْآءِ رَبَّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۙ يَعْرِفُوا الْمَجْرُمُونَ بَسِيمَاهُمْ فَيُوْخَدُونَ بِأَلْوَابِهِمْ وَأَلْقَادُهُمْ ۚ فَيَأْتِي الْآءِ رَبَّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۗ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمَجْرُمُونَ ۖ يَطْفِقُونَ فِيهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ إِنْ ۚ فَيَأْتِي الْآءِ رَبَّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّاتٌ ۖ فَيَأْتِي الْآءِ رَبَّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝ ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ۚ فَيَأْتِي الْآءِ رَبَّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۖ فَيَوْمَئِذٍ عَيْنِينَ مُتَجَرِّجِينَ ۚ فَيَأْتِي الْآءِ رَبَّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۖ فِيمَا عَيْنِينَ مُتَجَرِّجِينَ ۚ فَيَأْتِي الْآءِ رَبَّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۖ فِيمَا مِنْ كُلِّ

शुवाजुम्-मिन्-नारिन्-व नुहासुन् फला तन्तासिरान ०
 फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान ० फ-इजन्
 शक्कतिसमा-उ फ-कानत् व-दतन् कदिहान ० फबि-अय्यि
 आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान ० फयौमइजिल्-ला
 युस्अलु अन् जम्बिही इन्सुव-व ला जान् ० फबि-अय्यि
 आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान ० युअ-रफुल्-मुज्रिमू-न
 बिसीमाहुम् फ्युअ-खजु बिन्वासी वल्-अक्दामि ० फबि-अय्यि
 आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान ० हाजिही जहन्नमुल्लती
 युक्ज़िबु बिहल्-मुज्रिमून ० यतूफू-न बैनहा व बै-न
 हमीमिन् आन ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान
 ० व लि-मन् खा-फ मका-म रब्बिही जन्नतान ०
 फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान ० जवाता
 अफनान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान
 ० फीहिमा अैनानि तज्रियानि ० फबि-अय्यि आला-इ
 रब्बिकुमा तुकज़िबान ० फीहिमा मिन्कुल्लि

فَاكِهَةٌ زَوْجٍ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝ مُتَكَبِّرِينَ عَلَىٰ فُرُشٍ بَطَاطِنُهُمَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ وَ
 جَنَ الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝ فِيهِنَّ قَصَصَاتُ الظَّرْفِ لَمْ
 يَطْمِئْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ۚ
 فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝ هَلْ جَزَاءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا
 تُكَذِّبِينَ ۝ وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَيْنِ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ مُدْهَامَتَيْنِ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ
 رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ فِيهِمَا عَيْنَتَيْنِ نَضَّاحَتَيْنِ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَ
 مَخْلُوقَاتٌ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ فِيهِنَّ خَيْرٌ حِسَانٌ ۚ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا

फाकि-हतिन् जौजान् ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा
 तुकज़िबान् ० मुत्ताकिई-न अला फुरुशाम्-बता-इनुहा
 मिन् इस्तब-रकिन्, व जनल्-जन्तैनि दान् ० फबि-अय्यि
 आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान् ० फीहिन्-न कासिरातु-
 र्तीफ लम् यत्मिस-हुन-न इन्सुन् कब्लहुम् व ला जान् ०
 फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान् ० क-
 अनन्-हुन्नलयाकूतु वल्-मरजान् ० फबि-अय्यि आला-इ
 रब्बिकुमा तुकज़िबान् ० हल् जजाउल्-इहसानि इल्लल्-
 इहसान् ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान् ० व
 मिन् दुनिहिमा जन्तान् ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा
 तुकज़िबान् ० मुद् हाम्मतानि ० फबि-अय्यि आला-इ
 रब्बिकुमा तुकज़िबान् ० फीहिमा अैनानि नज्जा-खतानि ०
 फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान् ० फीहिमा
 फाकि-हतुव्-व नख़लुव्-व रुम्मान् ० फबि-अय्यि आला-इ
 रब्बिकुमा तुकज़िबान् ० फीहिन्-न खैरातुन् हिसान् ०

تُكَذِّبِينَ ۝ حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝ لَمْ يَطْمِئِنَّ
 أَنْفُسُ قَبْلَهُمْ وَلَا جِآنٌ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝ مُتَّكِعِينَ عَلَى رَفْرَفٍ خُضْرٍ
 وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝ تَبَرَّكَ اسْمُ رَبِّكَ
 ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝

फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़िबान ०
 हुरुम्-मक्सूरातुन् फिल-खियाम ० फबि-अय्यि आला-इ
 रब्बिकुमा तुकज़िबान ० लम् यत्मिसहुन-न इन्सुन्
 कब्लहुम् व ला जान्न ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा
 तुकज़िबान ० मुत्तकिई-न अला रफरफिन् खुज़रिव-व
 अब्करियिन् हिसान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा
 तुकज़िबान ० तबा-रकस्मु रब्बि-क जिल् जलालि
 वल्-इक्राम ०

बाज़ सुरतों के खास फाएदे

फर्माया स. : सुरेह मुल्क हर शब पढ़ने वाला अज़ाबे कब्र (व
 हश्) से महफुज़ रहेगा ।

फर्माया स. : सुरेह यासीन हर सुबह पढ़ने वाला यकीनन
 जन्नती होगा. हर मुशकील हल होगी ।

फर्माया स. : हर नमाज़ फर्ज़ के बाद अयतल कुर्सी पढ़ने वाले
 को अल्लाह जन्नत अता करेगा. यकीनन ।

फर्माया स. : हर रोज़ सुरेह दहर पढ़ने वाले पर जन्नत वाजिब
 की जाती है ।

सुरेह वाकिआ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۖ لَيْسَ لَوْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۖ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۖ إِذَا رُجَّتِ
الْأَرْضُ رَجًا ۖ وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۖ فَكَانَتْ هَبَاءً مُنْبَثًّا ۖ وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا
ثَلَاثَةً ۖ فَأَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۖ وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ مَا أَصْحَابُ
الشِّمَالِ ۖ وَالسَّيْقُوتُ السَّيْقُوتُونَ ۖ أُولَٰئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۖ فِي جَنَّتِ
النَّعِيمِ ۖ ثَلَاثَةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۖ وَقَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۖ عَلَىٰ سُرُرٍ
مَّوْضُونَةٍ ۖ مُّتَّكِئِينَ عَلَيْهَا مُتَقَلِّبِينَ ۖ يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخْلَدُونَ ۖ
يَا كُؤَٰبٌ وَأَبَارِيقُ ۖ وَكَأْسٌ مِّنْ مَّعِينٍ ۖ لَا يَصَدَّ عَنْهَا

इजा व-क-अतिल्-वाकि-अतु ० लै-स लिवक्अतिहा
काजिबह ०^१ खाफि-जतुर-राफि-अः ० इजा रुज्जतिल्-अरजु
रज्जंव- ० -व बुस्सतिल्-जिबालु बस्सा ० फ-कानत
हबा-अम् मुम्-बस्संव- ० -व कुन्तुम् अज्वाजन सलासः
० फ-अस्हाबुल्-मैमनति मा अस्हाबुल्-मै-मनः ० व
अस्हाबुल्-मश-अ-मति ना अस्हाबुल्-मश-अमः ०
वस्साबिकुनस्-साबिकून ० उलाइ-कल्-मुर्करबून ०
फीजन्नातिन्-नइम ० सुल्लतुम्-मिनल्-अव्वलीन ० व
कलीलुम् मिनल-आखिरीन ० अला सुरु रिम्-मौजुनतिम्-
० -मुत्तकिई-न अलैहा मु-तकाबिलीन ० यतूफु अलैहिम्
विल्दानुम्-मु-खल्लदून ० बिअक्वाबिंव-व अबारी-क् व
कअसिम्-मिम्-मइन ० ला युसद्-दऊन अन्हा

وَلَا يُزْفُونَ ۚ وَفَاكِهَةً مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ۚ وَلَحْمَ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ
 وَحُورٌ عِينٌ ۚ كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۚ جَزَاءً لِّمَا كَانُوا
 يَعْمَلُونَ ۚ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ۚ إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ۚ وَ
 أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۚ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۚ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ۚ وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ ۚ
 وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ۚ وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ۚ وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ۚ لَّامَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ۚ
 وَفُرُشٍ مَّرْقُوعَةٍ ۚ إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنِشَاءً ۚ فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ۚ عُرُبًا
 أَتْرَابًا ۚ لِأَصْحَابِ الْيَمِينِ ۚ ثَلَاثَةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۚ وَثَلَاثَةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۚ
 وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ ۚ مَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ۚ فِي سُهُومٍ وَمَجِيمٍ ۚ وَظِلٍّ مِّنْ يَحْتُمُونَ ۚ

व ला युन्जिफून ० व फाकि-हतिम्-मिम्मा यत-खय्यरुन
 ० व लहिम तैरिम-मिम्मा यशतहून ० व हुरुन् ईन ०
 क-अम्सालिल्-लुअलुइल्-मकनून ० जजा-अम् बिमा कानू
 यअमलून ० ला यस्मऊ-न फीहा लग्वंव-व ला तअसीमा
 ० इल्ला कीलन् सलामन् सलामा ० व अस्हाबुलयमीनि
 मा अस्हाबुल्-यमीन ० फी सिद्रिम्-मखजूदिंव- ० -व
 तल्लिहम्-मनजूदिंव- ० -व जिल्लिम् मम्दूदिंव- ० व माइम्
 -मस्कूब ० व फाकि-हतिन् कसी-रतिल्- ० -ला मक्तू-
 अतिंव-व ला मम्नू-अतिंव- ० -व फुरुशिम्-मरफूअः ०
 इन्ना अन्शअनाहुन्-न इन्शा-अन् ० फ-जअल्नाहुन्-न
 अब्कारा ० अुरुबन् अत्ताबल्- ० -लिअस्हाबिल्-यमीन ०
 सुल्लतुम्-मिनल्-अव्वलीन ० व सुल्लतुम्-मिनल्-आखिरीन
 ० व अस्हाबुश्-शिमालि मा असहाबुश्-शिमाल ० फी
 समूमिंव-व हमीमिंव- ० -व जिल्लिम्-मिंय्यहूमिल्- ०

لَا يَارِدُ وَلَا كَرِيمٌ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ ۝ وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى
 الْحَنِثِ الْعَظِيمِ ۝ وَكَانُوا يَقُولُونَ هَٰذَا مَا آتَانَا مِنَّا وَعَظْمَاءُ إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝
 أَوَابَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ۝ لَمَجْمُوعُونَ هَٰ إِلَىٰ مِيقَاتِ
 يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝ ثُمَّ إِنَّا كُنَّا إِلَيْهَا الْمُضِلَّةُونَ ۝ لَٰكِلَٰهِنَّ مِنْ شَجَرٍ مِنْ
 زَقُّومٍ ۝ فَبَالُوْنَ مِنْهَا الْبُطُونَ ۝ فَشَارِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ۝ فَشَارِبُونَ شُرْبَ
 الْهَيْمِ ۝ هَٰذَا نَزَّلْنَاهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ۝ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ فَلَوْلَا تَصَدَّقُونَ ۝ أَفَرَأَيْتُمْ
 مَا تُمْنُونَ ۝ ءَأَن تَرْجِعُوهٖ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ۝ نَحْنُ قَدَرْنَا بَيْنَكُمْ
 الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۝ عَلَىٰ أَن تُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا

-ला बारिदिंव-व ला करीम ० इन्हुम् कानू कब-ल
 जालि-क मुत्-रफीन ० व कानू युसिररु-न
 अलल-हिन्सिल-अजीम ० व कानू यकूल-न अ-इजा
 मितना व कुन्ना तुराबंव-व इजामन् अ-इन्ना ल-मबउसून
 ० अ-व आबाउनल्-अव्वलुन कुल इन्नल अव्वलीन वल
 आखिरीन ० ल-मज्मूअू-न इला मीकाति यौमिम्-मअलूम
 ० सुम्-म इन्नकुम् अय्युहज्जाल्लूनल्-मुकज्जिबून ० ल-
 आकिलू-न मिन् श-जरिम्-मिन् जक्कूम ० फमालिऊ-न
 मिन्हल्-बुतून ० फशारिबू-न अलैहि मिनल्-हमीम ०
 फशारिबू-न शुरबल्- हीम ० हाजा नुजुलुहुम् यौमदीन ०
 नहनु खलक्नाकुम् फलौ ला तुसदिकून ० अ-फ-रएतुम्-मा
 तुमनून ० अ-अन्तुम् तखलुकूनहू अम् नहनुल्-खालिकून ०
 नहनु कद-द ना बैनकुमुल मौत वमा नहनु बिमखुकीन ०
 अला अन्-नुबदि-ल अमसा-लकुम् व नुशि-अकुम् फी मा

لَا تَعْلَمُونَ ۖ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ۝ أَفَرَأَيْتُمْ مَتَا
تَحْرُثُونَ ۚ ؕ أَنْتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ۝ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا
فَقُلْتُمْ تَعْلَمُونَهُ ۚ إِنَّا لَمُغْرَمُونَ ۚ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۝ أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ
الَّذِي تَشْرَبُونَ ۚ ؕ أَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ ۚ لَوْ
نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ۝ أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ۚ ؕ أَنْتُمْ
أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُونَ ۚ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذَكُّرًا وَمَتَاعًا
لِّلْمُقْوِينَ ۚ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۚ فَلَا أُقْسِمُ بِمَوَاقِعِ النُّجُومِ
وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّا تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ۚ إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ۚ فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ۚ لَا

ला तअलमून ० व ल-कद् अलिम्तुमुन्-नशअ-तल्-ऊला
फलौ ला तजक्कलून ० अ-फ-रऐतुम्-मा तहरसून ०
अ-अन्तुम् तज्-रऊनहु अम् नहनुज्-जारिऊन ० लौ
नशा-उ ल-जअल्नाहु हुतामन् फजल्तुम् तफक्कहून ०
इन्ना ल-मुग़रमून ० बल् नहनु महसूमून ० अ-फ-रऐतुमुल्
मा-अल्लजी तशरबून ० अ-अन्तुम् अन्जल्तुमुहु
मिनल्-मुज्जि अम् नहनुल्-मुन्जिलून ० लौ नशा-उ
जअल्नाहु उजाजन् फलौ ला तश्कूलून ०
अ-फ-रऐतुमुन्-नारल्लती तूलून ० अ-अन्तुम् अनशअतुम्
श-ज-र-तहा अम् नहनुल्-मुन्शिऊन ० नहनु जअल्नाहा
तज्कि-रतंव-व मताअल्-लिल्मुक्वीन ० फ-सब्बिह बिस्मि
रब्बिकल्-अजीम ० फला अक्विसमु बि-मावाकिइन-नुजूम
० व इन्हू ल-क-समुल्-लौ तअलमू-न अजीम ०
इन्हू ल-कुरआनुन् करीम ० फी किताबिम् मक्नून ०

يَمْسُهُ إِلَّا الْمَطْمَرُونَ ۝ تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَفِي هَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ
 مُدْهِنُونَ ۝ وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنْكُمْ كَذِبُونَ ۝ فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلُقُومَ ۝
 وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ۝ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ۝
 فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۝ تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَاَمَّا
 إِنْ كَانَ مِنَ الْمَقْرَبِينَ ۝ فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ ۝ وَجَنَّتْ نَعِيمٌ ۝ وَأَمَّا إِنْ
 كَانَ مِنَ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝ فَسَلَامٌ لَّكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝ وَأَمَّا إِنْ كَانَ
 مِنَ الْمَكْذِبِينَ الضَّالِّينَ ۝ فَنُزُلٌ مِّنْ حَيْمِيمٍ ۝ وَتَصْلِيَةٌ جَاحِيمٍ ۝
 إِنَّ هَذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

ला य-मस्सुहु इल्लल्-मुतहहसून ० तन्जीलुम्
 मिर्रिबिल्ल-आलमीन ० अ-फबिहाजल्-हदीसि अन्तुम्
 मदहिनुन ० व तज्जलू-न रिज्ककुम् अन्नकुम् तुकज्जिबून
 ० फलौ ला इजा ब-ल-गतिल्-हुल्कूम ० व अन्तुम्
 ही-न-इजिन् तुन्जुसून ० व नहनु अक्रबु इलैहि मिन्कुम्
 व लाकिल्-ला तुबिसून ० फलौ-ला इन् कुन्तुम् गै-र
 मदीनीन ० तरजिउनहा इन् कुन्तुम् सादिकीन ० फ-अम्मा
 इन् का-न मिनल्-मुकर्बीन फ-रौहुंव-व रैहानुंव-व जन्नतु
 नइम ० व अम्मा इन् का-न मिन् अस्हाबिल्-यमीन ०
 फ-सलामुल्-ल-क मिन् अस्हाबिल्-यमीन ० व अम्मा
 इन् का-न मिनल् मुकज्जिबीनज्-जाल्लनी ०
 फ-नुजुलुम्-मिन् हमीमिंव- ० -व तस्लि-यतु जहीम ०
 इन्-न हाजा लहु-व हक्कुल्-यकीन ० फ-सब्बिह बिस्मि
 रब्बिकल्-अजीम ०

सुरह हदीद

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَهُ مُلْكُ السَّمُوتِ
وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَ
الظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَ
الْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا
يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۚ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ لَهُ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ
الْأُمُورُ ۝ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ

सब-ह लिल्लाहि मा फिस्समावाति वल्अर्जि व हुवल
अजीजुल्-हकीम ० लहु मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि युहयी
व युमीतु व हु-व अला कुल्लि शैइन् कदीर ०
हुवल-अव्वलु वल्-आखिरु वज्जाहिरु वल्-बातिनु व
हु-व बिकुल्लि शैइन् अलीम ० हुवल्लजी ख-लकस्समावाति
वल्लुअ-ज फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल-अर्शि,
यअलमु मा यलिजु फिल्लुअर्जि व मा यखरुजु मिन्हा व
मा यन्जिलु मिनस्समा-इ व मा यअरुजु फीहा, व हु-व
म-अकुम् ऐ-नमा कुन्तुम्, वल्लाहु बिमा तअमलू-न
बसीर ० लहु मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि, व इलल्लाहि
तुरज्जल-उमूर ० यलिजुल्लै-ल फिन्हारि व यूलिजुन्
नहा-र फिल्लैलि, व हु-व अलीमुम्

يَذَاتِ الصُّدُورِ ۝ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلِفِيْنَ
 فِيْهِ ۗ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ وَمَالَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ
 بِاللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ يَدْعُوْكُمْ لِيُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
 مُّؤْمِنِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدٍ اٰيٰتٍ بِبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ
 الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَمَالَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا
 فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلهِ مِيْرٰثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ
 اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتِلٌ ۗ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْ
 بَعْدُ وَقَاتِلُوْا ۗ وَكَذٰلِكَ وَعَدَ اللّٰهُ الْحَسَنٰى ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ مِّنْ ذَا الَّذِيْ

बिजातिस-सुदूर ० आमिन् बिल्लाहि व रसूलिही व
 अन्फिक् मिम्मा ज-अलकुम् मुस्तख-लफी-न फीहि,
 फल्लजी-न आमन् मिन्कुम् व अन्फक् लहुम् अजुन
 कबीर ० व मा लकुम् ला तुअमिन्-न बिल्लाहि वरसूलु
 यदड़कुम् लितुअमिन् बि-रब्बिकुम् व कद् अ-ख-ज
 मीसा-ककुम् इन् कुन्तुम् मुअमिनीन ० हुवल्लजी युनज्जिलु
 अला अब्दिही आयातिम् बय्यिनतिल्-लियुख्रि-जकुम्
 मिनज्जिलुमाति इल्लख्रि, व इन्नल्ला-ह बिकुम् ल-रऊफुरहीम
 ० व मा लकुम् अल्-ला तुन्फिक् फी सबीलिल्लाहि व
 लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वलअर्जि, ला यस्तवी मिन्कुम्
 मन् अन्फ-क मिन् कबिल्ल-फहि व कात-ल, उलाइ-क
 अअ-जमु द-र-जतम्-मिनल्लजी-न अन्फक् मिम्बअदु व
 कातलू, व कुल्लव-व अदल्लाहुल्-हुस्ना, वल्लाहु बिमा
 तअमलू-न खबीर ० मन् जल्लजी

يَقْرِضُ اللَّهُ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضْعِفُهُ لَهُ وَلَا أَجْرَ كَرِيمٍ ۚ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَى نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ بُشْرَاكُمُ الْيَوْمَ جَنَّتْ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۚ يَوْمَ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ
وَالْمُنْفِقَتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُوا نَفْتِنِيسَ مِنْ ثَوْبِكُمْ أَقِيلَ أَرْجِعُوا
وَرَاءَكُمْ فَأَلْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ بَيْنَهُم بِسُورٍ لَهُ بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ
وَظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۚ يُنَادُوهُمْ أَلَمْ تَكُنْ مَعَكُمْ قَالُوا بَلَى وَلَكِنَّكُمْ
فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتَّى جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ
وَعَزَّكُمُ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۚ قَالِیَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ

युक्रिजुल्ला-ह करजन् ह-सनन् फ-युजाइ-फहू लहु व
लहू अज्जुन् करीम ० यौ-म तरल्-मुअमिनी-न वल्मुअमिनाति
यसूआ नुरुहुम् बै-न ऐदीहिम् व बि-ऐमानिहिम्
बुशराकुमुल्-यौ-म जन्नातुन् तज्री मिन् तहितहल्-अन्हारु
खालिदी-न फीहा, जालि-क हुवल् फौजुल्-अजीम ०
यौ-म युकूलुल्-मुनाफिकू-न वल्-मुनाफिकातु लिल्लजी-न
आमनुज्जुल्ला नक्तबिस् मिन्-नूरिकुम् कीलरजिउ वरा-अकुम्
फल्तमिस् नूरन्, फजुरि-ब बैनहुम् बिसूरिल्-लहू बाबुन्,
बातिनुहू फीहिरह-मतु व जाहिरुहू मिन् कि-बलिहिल्-अजाब
० युनादूनहुम् अलम् नकुम् म-अकुम्, कालू बला व
लाकिन्नकुम् फतन्तुम् अन्फु-सकुम् व तरब्बस्तुम् वरतब्तुम्
व गर्त्कुमुल्-अमानिय्यु हत्ता जा-अ अमरुल्लाहि व
गर्कुम् बिल्लाहिल्-गस्सर ० फल्यौ-म ला युअ-खजु
मिन्कुम् फिद-यतुंव-व-ला मिनल्लजी-न कफरु,

مَا وَكُمُ النَّارُ هِيَ مَوْلَاكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا
 أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ
 أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ
 فَاسِقُونَ ۝ إِنْ عَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ يَأْتِي الْأَرْضَ بِعَدُوٍّ مَوْتٍ مَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ
 لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ إِنَّ الْبُصْدَ قَيْنَ وَالْمُصْدِ قَتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا
 حَسَنًا يُضَعَفَ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَئِكَ
 هُمُ الصِّدِّيقُونَ ۝ وَالشَّهَدَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ وَالَّذِينَ
 كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ إِنْ عَلِمُوا أَنَّ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا

मअवाकुमुन्नारु, हि-य मौलाकुम्, व बिअसल्-मसीर ०
 अलमयअनि लिल्लजी-न आमनू अन् तख्शा-अ कुलबुहुम्
 लिजिक्रिल्लाहि व मा न-ज-ल मिनल्-हक्कि व ला
 यकून् कल्लजी-न ऊतुल्-किता-ब मिन कब्नु फता-ल
 अलैहिमुल्-अ-मदु फ-कसत् कुलबुहुम्, व
 कसीरुम्-मिन्हुम्फासिकून् ० इअ-लमू अन्नल्ला-ह
 युहियल्-अ-ज बअ-द मौतिहा, कद् बय्यन्ना
 लकुमुल्-आयाति लअल्लकुम् तअकिलून ०
 इन्नल्-मुस्सद्दिकी-न वल्-मुस्सद्दिकाति व अक्रजुल्ला-ह
 कर्जन्ह-सनय-युजा-अफु लहुम् व लहुम् अजुन् करीम
 ० वल्लजी-न आमनु बिल्लाहि व रुसुलिही उलाइ-क
 हुमुससिद्दीकू-न वश्शु-हदा-उ इन्-द रब्बिहिम् लहुम् अज-रुहुम्
 व नूरुहुम्, वल्लजी-न क-फरु व कज्जबू बिआयातिना
 उलाइ-क अस्हाबुल्-जहीम ० इअ-लमू अन्नमल् हयातुद्दूनया

لَوْبٌ وَلَهُمْ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ
 غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيبُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا وَ
 فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
 إِلَّا مَتَاعٌ الْغُرُورُ ○ سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا عَرْضُ السَّمَاءِ
 وَالْأَرْضِ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ
 مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ○ مَا أَصَابَ مِنْ مُّصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَ
 لَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلِ أَن نَّبْرَأَهَا إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ○
 لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ

लइबुंव-व लहवुंव-व जी-नतुंव-व तफाखुरुम्-बैनकुम् व
 तकासुरुन् फिल्-अम्वालि वल्-औलादि, क-म-सलि गैसिन्
 अअ-जबल्-कुफ्फा-र नबातुहु सुम्-म युहीजु फतराहु मुस्फरन्
 सुम्-म यकून् हुतामन्, व फिल्-आखिरति अजाबुन्
 शदीदुंव-व मरिफ-रतुम्-मिनल्लाहि व रिज्वानुन्, व
 मल्-हयातुद्-दुनया इल्ला मताउल-गुरुर ○ साबिकू इला
 मरिफ-रतिम्-मिर्बिबिकुम् व जन्तिन् अरुनुहा क-अरजिस्समा-इ
 वल्-अर्जि उइदत् लिल्लजी-न आमन् बिल्लाहि व रुसुलिही
 जालि-क फज़लुल्लाहि युअतीहि मय्यशा-उ, वल्लाहु
 जुल्-फज़िलल्-अजीम ○ मा असा-ब मिममुसी-बतिन्
 फिल्-अर्जि व ला फी अन्फुसिकुम् इल्ला फी किताबिम्-मिन्
 कब्लि अन्-नब्र-अहा, इन्-न जालि-क अलल्लाहि यसीरुल
 ○ लिकैला तअसौ अला मा फातकुम् व ला तफरहू बिमा
 आताकुम्, वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्-ल मुख्तालिन्

فَخُورِ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ
 اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ
 وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ
 لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝ وَلَقَدْ
 أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ فَمِثْلَهُمُ مَهْتَدٍ
 وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ ثُمَّ قَلَّيْنَا عَلَىٰ أَثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ
 مَرْيَمَ وَاتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَافِقَةً ذُرِّيَّتَهُ
 وَرَهَابًا لِلَّهِ ۝ ابْتَدَعُوهُمَا مَا كُتِبَ لَهُم مِّنْ آيَاتِنَا إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا

फखूरी ० निल्लजी-न यबखलू-न व यअमुखनन्ना-स
 बिल्बुखिल, व मय्य-तवल-ल फ-इन्नल्लाह हुवल
 गनिय्युल्-हमीद ० ल-कद् अरसल्ला रुसु-लना बिल्बय्यिनाति
 व अन्जलन्ना म-अहुमुल्-किता-ब वल्मीजा-न लि-यकूमन्नासु
 बिल्-किस्ति व अन्जलनल् हद्दी-द फीहि बअसुन शदीदुव-व
 मनाफिउ लिन्नासि व लि-यअ-लमल्लाहु मय्यन्सुरुहू व
 रुसु-लहू बिलौबि, इन्नल्ला-ह कविय्युन् अजीज ० व
 ल-कद् अरसल्ला नूहव-व इब्राही-म व जअल्ला फी
 जुरिय्यतिहि-मन्नुबुव-त वल्किता-ब फमिन्हुम् मुहतदिन् व
 कसीरुम्-मिन्हुम् फासिकून् ० सुम्-म कफफैना अल्ला
 आसारिहिम् बिरसुलिना व कफफैना बि-ईसबि मय्य-म व
 आतैनाहुल्-इन्जी-ल व जअल्ला फी कुलूबिल्लजीनत्-त-बउहु
 रअ-फतव-व रहम-तन्, व रहबानिय्य-त-निब्त-दुउहा मा
 कतब्नाहा अलैहिम् इल्लबिगा-अ रिज्जानिल्लाहि फमा

حَقَّ وَعَايَتُهُمَا فَاتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ
 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرَسُولِهِ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ
 وَيَجْعَلَ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ لَوْلَا
 يَعْلَمُ أَهْلُ الْكِتَابِ إِلَّا يَقْدِرُونَ عَلَى شَيْءٍ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ
 بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

रऔहा हक्-क रिआ-यतिहा फआतैनल्लजी-न आमनू
 मिन्हुम् अज़हुम् व कसीरुम्-मिन्हुम् फासिकून ० या
 अय्युहल्लजी-न आमनुत्तकुल्ला-ह व आमिनू बि-रसूलिही
 युअतिकुम् क्फिलैनि मिर्रहमतिही व यज़अल्-लकुम्
 नूरन् तम्शू-न बिही व यगिफ्र लकुम्, वल्लाहु गफूररहीमुल्
 ० लि-अल्ला यअल्-म अहलुल्-किताबि अल्ला यक्दिदरू-न
 अल्ला शैइम्-मिन् फज़िल्लाहि व अन्नल्-फज़-ल
 बि-यदिल्लाहि युअतीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु
 ज़ुल्-फज़िल्ल-अजीम ०

बाज़ सुरतों के खास फाएदे

फर्माया स. : हर शाम सुरेह वाकेआ पढ़ने वाले का फुकर
 वफाका दुर होता है ।

फर्माया स. : सुरेह वलअसर हमेशा पढ़ने वाले का इसलामी
 इमान पर खातमा होगा ।

फर्माया स. : सुरेह इखलास बकसरत पढ़ने वाले को हुजुर स.
 ने जन्नत की खुशखबरी फर्माई है ।

सुरेह हशर

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ०

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ① هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرِجُوا وَظَنُّوْا
أَنَّهُمْ مَانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَأَتَهُمُ اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا وَقَذَفَ فِي
قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِيَ الْأَبْصَارِ ②
لَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ③
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ④
مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لَيْنَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَىٰ أَصُولِهَا فَبَإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْرِىَ الْفَاسِقِينَ ⑤

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिलअर्जि व
हुवल अजीजुल्-हकीम ० हुवल्लजी अख्र-रजल्लजी-न
क-फरु मिन् अहिलल्-किताबि मिन् दियारिहिम्
लि-अव्वलिल्-हशरि, मा जनन्तुम् अय्यखरुजू व जन्नु
अन्नहुम् मानि-अतुहुम् हुसुनुहुम् मिनल्लाहि फ-अताहुमुल्लाहु
मिन् हैसु लम् यहतसिबू व क-ज-फ फी कुलूबिहिमुरुअ-ब
युख्रिबू-न बुयू-तहुम् बि-ऐदीहिम् व ऐदिल्-मुअमिनी-न
फअतबिरु या उलिल्-अब्सार ० व लौ ला अन् क-तबल्लाहु
अलैहिमुल्-जला-अ ल-अज्ज-बहुम् फिहुनया व लहुम्
फिल्-आखिरति अजाबुन्नार ० जालि-क बि-अन्नहुम्
शाक्कुल्ला-ह व रसूलहु व मय्यशाक्कुल्ला-ह फ-इन्नल्ला-ह
शदीदुल्-इकाब ० मा क-तअतुम् मिल्ली-नतिन् औ
तरक्तुमूहा काइ-मतन् अला उसूलिहा फबि-इज्जिल्लाहि व

وَمَا آفَاءَ اللَّهِ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَا حِثٍّ إِلَّا
 سُلْطَانُ رَسُولِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ① مَا آفَاءَ اللَّهِ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ
 أَهْلِ الْقُرَى فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ
 كَى لَا يَكُونَ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ
 عَنْهُ فَانْتَهُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ② لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ
 أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصَرُونَ لِلَّهِ
 وَرَسُولِهِ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ③ وَالَّذِينَ تَبَوَّؤُا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ

लियुख्रजि-यल्-फसिकीन ० व मा अफा-अल्लाहु अला
 रसूलिही मिन्हुम् फमा औजफ्तुम् अलैहि मिन् खैलिन्-व
 ला रिक़ाबिन्-व लाकिन्नल्ला-ह युसल्लितु रुसु-लहु अला
 मंय्यशा-उ, वल्लहु अला कुल्लि शैइन् कदीर ० मा
 अफा-अल्लाहु अला रसूलिही मिन् अहिलल्-कुरा
 फ-लिल्लाहि व लिर्सूलि व लिजिल्-कुरबा वलयतामा
 वल्मसाकीनि वबिस्सबीलि कैला यकू-न दू-लतम्-बैनल्-
 अगिनया-इ मिन्कुम्, व मा आताकुमर्सूलु फखुजूहु व
 मा नहाकुम् अन्हु फन्तहु वल्लकुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह
 शदीदुल्-इकाब ० लिलफु-कराइलमुहाजिरीनल्लजी-न उख्रिज्
 मिन् दियारिहिम् व अम्वालिहिम् यत्तगु-न फज़ल्-मिनल्लाहि
 व रिज्वानं-व यन्सुखनल्ला-ह व रसूलहु, उलाइ-क
 हुमुस्सादिकून् ० वल्लजी-न त-बव्वउद्दा-र वलईमा-न
 मिन् कब्लिहिम्

يُجِبُونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ
 عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ٥
 وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ
 وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ٦ أَلَمْ تَرَ إِلَى
 الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ
 لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ
 يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ٧ لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُوهُمْ

युहिब्बू-न मन् हाज-र इलैहिम् व ला यजिदू-न फी
 सुदूरिहिम् हा-जतम्-मिम्मा ऊतू व युअसिरू-न अला
 अन्फुसिहिम् व लौ का-न बिहिम् खसा-सतुन्, व
 मय्यू-क शुह-ह नफिसही फ-उलाइ-क हुमुल्-मुफिलहून
 ० वल्लजी-न जाऊ मिम्बअदिहिम् यकूलू-न रब्बनगिफर
 लना व लि-इख्रवानिनल्लजी-न स-बकूना बिल्-ईमानि
 व ला तजअल् फी कुलूबिना गिल्लल्-लिल्लजी-न आमनू
 रब्बना इन्न-क रऊफुरहीम ० अलम् त-र इलल्लजी-न
 नाफकू यकूलू-न लि-इख्रवानिहिमुल्लजी-न क-फरू मिन्
 अहिलल्-किताबि ल-इन् उख्रिज्जुम् ल-नख्ररुजन-न
 म-अहम् व ला नुतीउ फीकुम् अ-हदन् अ-बदव्-व इन्
 कुतिल्तुम् ल-नन्सुरन्कुम् वल्लाहु यशहदु इन्हुम् लकाजिबून
 ० ल-इन् उख्रिजू ला यख्ररुजू-न म-अहुम् व ल-इन्
 कूतिल् ला यन्सुरुनहुम्

وَلَمَّا نَصَرُوهُمْ لَئِيْلُنَّ اِلَآءَ بَارِئٍ ثُمَّ لَا يَنْصُرُوْنَ ۝۱۳ لَا اَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِى صُدُوْرِهِمْ
 مِّنَ اللّٰهِ ذٰلِكَ بِاَنْتُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝۱۴ لَا يِقَاتِلُوْكُمْ جَمِيعًا اِلَّا فِى قَرْيٍ مَّحْصَنَةٍ
 اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ تَحْسِبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوْبُهُمْ شَتٰى ذٰلِكَ
 بِاَنْتُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝۱۵ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَا قُوَا وَبَالَ اٰمِرُهُمْ
 وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۱۶ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّىْ
 بَرِيْءٌ مِّنْكَ اِنِّىْ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝۱۷ فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا اَنْهٖمَا فِى النَّارِ خَالِدِيْنَ
 فِيْهَا وَاٰذَآءٌ لِّكَ جَزَآءُ الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۸ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا

वल-इन नसरुहुम लयु-वल्लुन्नल्-अद्बा-र, सुम्-म ला
 युन्सरुन ० ल-अन्तुम् अशद्दु रह-बतन् फी सुदूरिहिम्
 मिनल्लाहि, जालि-क बि-अन्नुहुम् कौमुल्-ला यफ्कहुन
 ० ला युकातिलूनकुम् जमीअन् इल्ला फी कुस्-मुहस्स-नतिन्
 औ मिंव्वरा-इ जुदुरिन्, बअसुहुम् बैनुहुम् शदीदुन्, तहसबुहुम्
 जमीअन्-व कुलूबुहुम् शत्ता, जालि-क बि-अन्नुहुम्
 कौमुल्-ला यअकिलून ० क-म-सलिल्लजी-न मिन्
 कब्लिहिम् करीबन् जाक् व बा-ल अमूरिहिम् व लहुम्
 अजाबुन् अलीम ० क-म-सलिश्शैतानि इज् का-ल
 लिल्-इन्सानिक्फुर फ-लम्मा क-फ-र का-ल इन्नी
 बरीउम्-मिन्-क इन्नी अखाफुल्ला-ह रब्बल्-आलमीन ०
 फका-न आकि-ब तहुमा अन्नुहुमा फिन्नारि खालिदैनि
 फीहा, व जालि-क जजाउज्जालिमीन ० या अय्युहल्लजी-न
 आमनुत्तकुल्ला-ह वल्लन्जुर नफ्सुम्-मा

قَدْ مَتَّ لِعَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ
 نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسَهُمْ أُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ
 وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ الْفَائِزُونَ ۝ لَوْ أَنْزَلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى
 جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُتَصَدِّعًا مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا
 لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَ
 الشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقَدُّوسُ
 السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهِيمُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝
 هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ فِي السَّمَوَاتِ
 وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

कद-मत् लि-गदिन् वत्तकुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह खबीरुम्-बिमा
 तअमलून ० व ला तकून् कल्लजी-न नसुल्ला-ह
 फ-अन्साहुम् अन्फु-सहुम्, उलाइ-क हुमुल्-फासिकून् ०
 ला यस्तवी अस्हाबुन्नारि व अस्हाबुल्-जन्नति,
 अस्हाबुल्-जन्नति हुमुल्-फाइजून ० लौ अन्जल्ला
 हाजल्-कुरआ-न अला ज-बलिल्-ल-राऐ-तहू खाशिअम्
 मु-तसद्दिअम् मिन् खश्-यतिल्लाहि, व तिल्कल्-अम्सालु
 नज़िर्बुहा लिन्नासि लअल्लहुम् य-तफक्कसन् ०
 हुवल्लाहुल्लजी ला इला-ह इल्ला हु-व आलिमुल्-गैबि
 वश्शहा-दति हुवर्-रहमानुरहीम ० हुवल्लाहुल्लजी ला
 इला-ह इल्ला हु-व अल्मलिकुल्-कुद्दुसुस्-सलामुल्-
 मुअ्मिनुल्-मुहैमिनुल्-अजीजुल्- -जब्बारुल्-मु-तकब्बिरु,
 सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्चिकून् ० हुवल्लाहुल् खालिकुल्
 बारिउल् मुसव्विरु लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना, युसब्बिहु लहू
 मा फिस्समावाति वल्अर्जि व हुवल् अजीजुल्-हकीम ०

सुरह सफ़

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَبِّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
 آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ۝
 إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَرْمُومٌ ۝
 وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ لِمَ تَقُولُونَ لِمَ تَقُولُونَ إِنِّي رَسُولُ
 اللَّهِ إِلَيْكُمْ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝ وَإِذْ
 قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ بَنِي إِسْرَءِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِمَا
 بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ فَلَمَّا

सब-ह लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिल् अर्जि व
 हुवल अजीजुल-हकीम ० या अय्युहल्लजी-न आमनू
 लि-म तकूलू-न मा ला तफअलून ० कबु-र मक्तन
 इन्दल्लाहि अन तकूलू मा ला तफअलून ० इन्नल्ला-ह
 युहिब्बुल्लजी-न युकातिलू-न फी सबीलही सफ़न् क-अन्नुहुम्
 बुन्यानुम्-मस्सूस ० व इज् का-ल मूसा लिकौमिही या
 कौमि लि-म तुअजू-ननी व कत्-तअलमू-न अन्नी रसूलुल्लाहि
 इलैकुम्, फ-लम्मा जागू अजागल्लाहु कुलूबहुम्, वल्लाहु
 ला याहदिल्-कौमल्-फासिकीन ० व इज् का-ल ईसबु
 मय-म या बनी इसाई-ल इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम्
 मुसद्दिकल्-लिमा बै-न यदय्-य मिनत्तौराति व मुबशिशरम्
 बि-रसूलिन्-यअती मिम्बअदिस्मुहू अहमदु, फ-लम्मा

جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَىٰ إِلَى الْإِسْلَامِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝
 يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ ۚ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝
 هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظَاهِرَهُ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابِ أَلِيمٍ ۝ تَوْفَعُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ يَغْفِرَ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۚ

जा-अहुम् बिल्बय्यिनाति कालू हाजा सिहरुम-मुबीन ०
 व मन् अज्लमु मिम्-मनिफतरा अलल्लाहिल्-कजि-ब व
 हु-व युद्आ इलल्-इस्लामि, वल्लाहु ला
 याहदिल्-कौमज्जालिमीन ० युरिदू-न लियुत्फिऊनूरल्लहि
 बि-अफवाहिहिम्, वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही व लौ
 करिहल्-काफिरून ० हुवल्लजी अरस-ल रसूलहू बिल्हुदा
 व दीनिल्-हक्कि लियुज्जिह-रहू अलद्दीनि कुल्लिही व लौ
 करिहल्-मुशिरकून ० या अय्युहल्लजी-न आमनू हल्
 अदुल्लुकुम् अला तिजा-रतिन् तुन्जीकुम् मिन् अजाबिन्
 अलीम ० तुअमिन्-न बिल्लाहि व रसूलिही व तुजाहिदू-न
 फी सबीलिल्लाहि बि-अम्वालिकुम् व अन्फुसिकुम्, जालिकुम्
 खैरुल्-लकुम् इन् कुन्तुम्, तअलमून ० यफिर् लकुम्
 जुनू-बकुम्

يُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ذَلِكَ
 الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَأُخْرَى تُحِبُّونَهَا نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ وَبَشِيرٌ الْمُؤْمِنِينَ ۝
 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ
 مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ فَأَمَدَتْ طَائِفَةٌ مِنْ
 بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَتْ طَائِفَةٌ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ عِدْوِهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ۝

व युदखिल्कुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु व
 मसाकि-न तय्यि-बतन् फी जन्नाति अदनिन्,
 जालिकल्-फौजुल्-अजीम ० व उख्रा तुहिब्बूनहा
 नसरुम्-मिनल्लाहि व फतहुन् करीबुन्, व बशिशारिल्-
 मुअमिनीन ० या अय्युहल्लजी-न आमनु कूनु अन्सारल्लाहि
 कमा का-ल ईसबु मरय-म लिल्-हवारिय्यी-न मनु
 अन्सारी इलल्लहि, कालल्-हवारिय्यु-न नहनु अन्सारल्लाहि
 फ-आ-मनत् ताइ-फतुम् मिम्-बनी इसाई-ल व क-फरत्
 ताइ-फतुन् फ-अय्यदनल्लजी-न आमनु अला अदुव्विहिम्,
 फ-अस्बहू जाहिरीन ०

सुरह जुमा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ هُوَ
الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمَمِينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَ
الْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَآخِرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَدْحَأُوا مِنْهُ ۝ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝
مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا بِئْسَ مَثَلُ
الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा
फिल्अर्जिल्-मलिकिल्-कुद्दूसिल्-अजीजिल्-हकीम ०
हुवल्लजी ब-अ-स फिल्-उम्मिय्यि-न रसूलम्-मिन्हुम् यल्लू
अलैहिम् आयातिही व युजक्कीहिम् व
युअल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्हिक्म-त व इन् कानू मिन्
कब्बु लफी जलालिम्-मुबीनिंव ० व आ-खरी-न मिन्हुम्
लम्मा यल्हक् बिहिम्, व हुवल् अजीजुल्-हकीम ०
जालि-क फज्जुल्लहि युअतीहि मय्यशा-उ, वल्लाहु
जुल्-फज्जिल्-अजीम ० म-सलुल्लजी-न हुम्मिलुत्-तौरा-त
सुम्-म लम् यहिमलूहा क-म-सलिल्-हिमारि यहिमलु
अस्फारन्, बिअ-स म-सलुल्-कौमिल्लजी-न कज्जबू
बिआयातिल्लाहि, वल्लाहु ला यहिदल्कौमज्-जालिमीन
० कुल् या अय्युहल्लजी-न

① هَادُواْ إِن زَعَمْتُمْ أَنكُمْ أَوْلِيَاْ لِلّٰهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوْاْ الْمَوْتَ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ
 وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُ أَبَدًا بِهَا قَدْ مَتَّ أَيْدِيَهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ② قُلْ إِن الْمَوْتَ
 الَّذِي تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلَاقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ
 بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ③ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ
 فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ④ فَإِذَا
 قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَالْبَيْعُ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا
 لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ⑤ وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُّوْا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِمًا قُلْ
 مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ الدَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ⑥

हादू इन् ज-अम्तुम् अन्नकुम् औलिया-उ लिल्लाहि मिन
 दुनिन्तासि फ-तमन्नवुल्-मौ-त इन् कुन्तुम् सादिकीन ० व
 ला य-तमन्नौनहु अ-बदम्-बिमा कद्-मत एदीहिम्, वल्लाहु
 अलीमुम्-बिज्जालिमीन ० कुल् इन्नल्-मौतल्लजी तफिस्-न
 मिन्हु फ-इन्नहू मुलाकीकुम् सुम्-म तुरद्दु-न इला
 आलिमिल्-गैबि वशशहा-दति फयुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम्
 तअमलून ० या अय्युहल्लजी-न आमनू इजा नूदि-य
 लिस्सलाति मिय्यौमिल्-जुम्-अति फसऔ इला जिक्लिल्लाहि
 व जरल्-बै-अ, जालिकुम् खैरल्-लकुम् इन् कुन्तुम्
 तअलमून ० फ-इजा कुजि-यतिसल्लातुम् फन्तशिल् फिलअर्जि
 वब्तगू मिन् फजलिल्लाहि वजकुरुल्ला-ह कसीरल्-लअल्लकुम्
 तुफिलहून ० व इजा सऔ तिजा-स्तन् औ लह-व-निन्फज्जै
 इल्लैहा व त-स्कू-क कइमन्, कुल् मा इदल्लाहि खैरुम-मिनल्लाहि
 व मिनतिजारति वल्लाहु खैरु-राजिकीन ०

सुरेह तगाबुन

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ مُؤْمِنٌ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ ۚ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَيَعْلَمُ مَا تُرْسُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۚ وَاللَّهُ عَلَيْكُمْ بِدَاتٍ صُدُورٍ ۚ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ ۚ قَدَأَوْا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ يَبْتَغِي قَالُوا أَبَشْرٌ يَعْذُوبُنَا ۚ فَكَفَرُوا ۚ وَتَوَلَّوْا ۚ وَاسْتَعْصَى اللَّهُ ۚ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝ رَعِمَ

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिलुअर्जि
लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु व हु-व अला कुल्लि शैइन
कदीर ० हुवल्लजी ख-ल-कुम् फ-मिन्कुम् काफिरुव-व
मिन्कुम् मुअमिनु, वल्लाहु बिमा तअमलून बसीर ०
ख-लकस्-समावाति वलुअर-ज बिल्हक्कि व सव्व-रकुम्
फ-अहस-न सु-व-रकुम् व इलैहिल्-मसीर ० यअलमु
मा फिस्-समावाति वलुअर्जि व यअलमु मा तुसिरु-न
व मा तुअलिनू-न, वल्लाहु अलीमुम्-बिजातिस्सुदूर ०
अलम् यअतिकुम् न-बउल्लजी-न क-फरु मिन् कब्लु
फ-जाकू व बा-ल अम्रिहिम् व लहुम् अजाबुन् अलीम
० जालि-क बि-अन्नाहु कानत-तअतीहिम् रुसुलुहुम्
बिल्बय्यिनाति फकालू अ-ब-शरुय-यहदूनना फ-क-फरु
व तवल्लौ वस्तगूनल्लाहु, वल्लाहु गनिय्युन् हमीद ०
ज-अमल्लजी-न

الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَيْسَ يُبْعَثُوا قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ قَامُوا بِاللهِ وَرَسُولِهِ وَالْثَوْرَ الذِّئْبَ أَرْزَلْنَاهُ ۚ وَاللهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَوْمَ يُجْمَعُ لِيَوْمِ الْحُجَّةِ ذَلِكَ يَوْمُ التَّعَابِ ۚ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ قَلْبَهُ ۚ وَاللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَاطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ

क-फरु अल्लय्युबू-असू, कुलू बला व रब्बी ल-तुब्असुनू-न
सुमू-म ल-तुनब्ब-उन्-न बिमा अमिल्लुमू, व जालि-क
अलल्लाहि यसीर ० फआमिनु बिल्लाहि व रसूलिही
वन्नूरिल्लजी अन्जल्ला, वल्लाहु बिमा तअमलू-न खबीर
० यौ-म यजमऊकुमू लियौमिलू-जम्अ जालि-क
यौमुत्-तगाबुनि, व मय्युअमिम्-बिल्लाहि व यअमलू
सालिहंयू-युकफिफरू अन्हु सय्यिआतिही व युदखिल्लु
जन्नातिन् तज्री मिन् तहितहलू-अन्हारु खालिदी-न
फीहा अ-बदनू, जालिकलू फौजुलू-अजीम ० वल्लजी-न
क-फरु व कज्जबू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुन्नारि
खालिदी-न फीहा, व बिअसलू-मसीर ० मा असा-ब
मिम्-मुसी-बतिन् इल्ला बि-इज्जिल्ल्लाहि, व
मय्युअमिम्-बिल्लाहि याहदि कल्बहू, वल्लाहु बिकुल्लि
शैइन् अलीम ० व अतीउल्ला-ह अतीउरर्सू-ल फ-इन्
तवल्लैतुमू फ-इन्मा अला रसूलिन्-बलागुलू-मुबीन ०
अल्लाहु ला इला-ह इल्ला

وَعَلَى اللَّهِ قَلْبُكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن مِّنَ آيَاتِكُمْ وَآيَاتِكُمْ عَذَابٌ
 لَّكُمْ فَأَخَذُوا مِنْهُمُ ۖ وَإِن تَعْفُوا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۖ إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ
 وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۖ وَاللَّهُ عِنْدَ أَجْدٍ عَظِيمٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمِعُوا وَأَطِيعُوا
 وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِّأَنْفُسِكُمْ ۖ وَمَنْ يُوقِ شَهْنَفَهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۖ إِن تَقْرِضُوا
 اللَّهُ قَرْضًا حَسَنًا يُّضَاعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ۖ عَلِيمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
 الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۖ

हु-व, व अलल्लहि फलय-तवक्कलिल्- मुअमिनून ०
 या अय्युहल्लजी-न आमनू इन्-न मिन् अज्वाजिकुम् व
 औलादिकुम् अदुव्वल्-लकुम् फहजसहुम् व इन् तअफू व
 तसफहू व तगिफरु फ-इन्नल्ला-ह गफूररहीम ० इन्मा
 अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फित्-नतुन्, वल्लाहु इन्दहू
 अजुन् अजीम ० फत्तकुल्ला-ह मस्त-तअतुम् वस्-मउ
 व अतीउ व अन्फिकू खैरल्-लिअन्फुसिकुम्, व मय्यू-क
 शुह-ह नफिसही फ-उलाइ-क हुमुल्-मुफिलहून ० इन्
 तुक्रिजुल्ला-ह कर्जन् ह-सनयू-युजाइफह लकुम् व यगिफर
 लकुम्, वल्लाहु शकूरन् हलीम ० आलिमुल्-गैबि
 वशहा-दहिल्- अजीजुल्-हकीम ०

सुरह तहरीम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ تَبَتَّغِيَ مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ وَاللَّهُ غَفُورٌ
 رَحِيمٌ ۝ قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَلِيمُ
 الْحَكِيمُ ۝ وَإِذْ أَسْرَ النَّبِيُّ إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا نَبَاتَ بِهَا رَبُّهُ
 أَظْهَرَ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا نَبَاَهَا بِهَا قَالَتْ مَنْ
 أَنْبَاكَ هَذَا قَالَ نَبَاَنِي الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ۝ إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا
 وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ
 بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۝ عَسَىٰ رَبُّهُ أَنْ طَائِفًا مِّنْ أَزْوَاجِهِ خَيْرٌ لَّكُم مِّنْ

या अय्युहन्नबिय्यु लि-म तुहरिमु मा अ-हल्लल्लाहु ल-क
 तब्तगी मरजा-त अज्वाजि-क, वल्लाहु गफूर-रहीम ०
 कद् फ-रजल्लाहु लकुम् तहिल्-ल-त ऐमानिकुम् वल्लाहु
 मौलाकुम् व हुवल अलीमुल्-हकीम ० व इज् असर्सन्-नबिय्यु
 इला बअजि अज्वाजिही हदीसन् फ-लम्मा नब्ब-अत्
 बिही व अज्ह-र-हुल्लाहु अलैहि अर्-फ बअ-जहू व
 अअर-ज अम्-बअजिन् फ-लम्मा नब्ब-अहा बिही कालत्
 मन अम्ब-अ-क हाजा, का-ल नब्ब-अनि-यल्
 अलीमुल्-खबीर ० इन् ततूबा इलल्लाहि फ-कद् सगत्
 कुलूबुमा व इन् तजा-हरा अलैहि फ-इन्नल्ला-ह हु-व
 मौलाहु व जिब्रीलु व सालिहुल्-मुअमिनी-न वलमालोइ-कतु
 बअ-द जालि-क जहीर ० असा रब्बुहु इन् तल्ल-ककुन्-न
 अय्युब्दि लहू अज्वाजन् खैरम्-मिन्कुन्-न

لَنَا نُورَنَا وَاعْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ
وَالْمُنَافِقِينَ وَاعْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَا أُوهُمْ بِجَهَنَّمَ ۝ وَيَسَّ الْبَصِيرُ ۝ ضَرَبَ
اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتَ ثَوْجٍ وَامْرَأَتَ لُوطٍ ۖ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ
مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيا عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ
ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّٰخِلِينَ ۝ وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتَ فِرْعَوْنَ
إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ
وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَتُ فَرْجَهَا
فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا وَصَدَّقَ بِكَلِمَاتِ رَبِّهَا وَكَانَتْ مِنَ الْقَائِمِينَ ۝

या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल्-कुफ्फा-र वल्-मुनाफिकी-न
वगलुज् अलैहिम्, व मअवाहुम् जहन्नमु, व बिअसल्-मसीर
० ज-खल्लाहु म-सलल्-लिल्लजी-न क-फरुम्-र-अ-त
नूहिंव-वम्-र-अ-त लूतिन्, का-नता तह-त अब्दैनि
मिन् इबादिना सालिहैनि फ-खानताहुमा फ-लम् युगनिया
अन्हुमा मिनल्लाहि शैअंव-व कीलदखुलन्ना-र
मअद्-दाखिलीन ० व ज-खल्लाहु म-सलल्-लिल्लजी-न
आमनुम्-र-अ-त फिरऔ-न १ इज् कालत् रब्बिबूनि ली
इन्द-क बैतन् फिल-जन्ति व नज्जिनी मिन् फिरऔ-न
व अ-मलिही व नज्जिनी मिनल् कौमिज्जालिमीन ० व
मय-मब्-त इमूरानल्लती अह-सनत् फर्-जहा फ-नफरजा
फीहि मिरूहिना व सद-क्त् बि-कलिमाति-रब्बिहा व
कुतुबिही व कानत् मिनल्-कानितीन ०

مُسْلِمَاتٍ مُّؤْمِنَاتٍ قَنَاطَاتٍ سَابِغَاتٍ بِغَدِيَّتٍ سَاحِيَّاتٍ ثِيَابًا وَابْكَارًا ۝
 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا
 مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝
 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ثُبُّوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يُكَفِّرَ عَنْكُمْ
 سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ
 وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتْمِمْ

मुस्लिमातिम्-मुअमिनातिन् कानितातिन् ता-इबातिन्
 आबिदातिन् सा-इहातिन् सय्यिबतिन्-व अब्कारा ० या
 अय्युहल्लजी-न आमनू कूअन्फु-सकुम् व अहलीकुम्
 नारं-व-व कूदुहन्नासु वलहिजा-रतु अलैहा मलाइ-कतुन्
 गिलाजुन् शिदादुल्-ला यअसूनल्ला-ह मा अ-म-रहुम् व
 यफअलू-न मा युअमरुन ० या अय्युहल्लजी-न क-फरु
 ला तअतजिरुल्-यौ-म, इन्नमा तुज्जौ-न मा कुन्तुम्
 तअमलून ० या अय्युहल्लजी-न आमनू तूबू इलल्लाहि
 तौ-बतन्-नसूहन्, असा रब्बुकुम् अय्युकफिफ-र अन्कुम्
 सय्यिआतिकुम् व युदखि-लकुम् जन्नातिन् तज्री मिन्
 तहतिहल्-अन्हारु यौ-म ला युखिजल्लाहुन्-नबिय-य
 वल्लजी-न आमनू म-अहू नूरुहुम् यस्आ बै-न ऐदीहिम्
 व बि-ऐमानिहिम् यकूलू-न रब्बना अतमिम् लना नू-रना
 वग़फिर् लना इन्न-क अला कुल्लि शैइन् कदीर ०

सुरह मुल्क

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ
وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَفُورُ ۝ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ
سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا مَّا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِن تَفَوُّتٍ ۚ فَارْجِعِ الْبَصَرَ
هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ ۝ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَ
هُوَ حَسِيرٌ ۝ وَلَقَدْ مَنَنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحٍ وَجَعَلْنَا بَارُوجًا لِلشَّيْطَانِ وَ
أَعْتَدْنَا لَهُمُ عَذَابَ السَّعِيرِ ۝ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَيُسَمُّونَ الْمَصِيرُ ۝
إِذَا الْقَوَا فِيهِ مَسْمُوعُوا ۚ هَٰذَا هِيَ تَقْوَرُ ۝ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۚ كُلَّمَا

तबा-रकल्लजी बि-यदिहिल्-मुल्कु व हु-व अला कुल्लि
शैइन् कदीर ० निल्लजी ख-ल-कल-मौ-त कलहया-त
लि-यबबुल-वकुम् अय्युकुम् अहसनु अ-मलन, व हुवल
अजीजुल्-गफूर ० अल्लजी ख-ल-क सब-अ समावातिन्
तिबाकन् मा तरा फी खल्किरहमानि मिन् तफवुतिन्,
फरजिइल्-ब-स-र हल तरा मिन् फुतुर ० सुम्मार जिईल
बसर कर्तैनि यन्कलिब इलैकल्-ब-सरु खासिअव-व
हु-व हसीर ० व ल-कद् जय्यन्नस्समाअद्-दुनया
बि-मसाबी-ह व ज-अल्लाहा रुजूमल्-लिशशयातीनि व
अअतदना लहुम् अजाबस्सइर ० व लिल्लजी-न क-फरु
बिरब्बिहिम् अजाबु जहन्न-म, व बिअसल-मसीर ० इजा
उल्कू फीहा समिउ लहा शहीकव-व हि-य तफूर ०
तकादु त-मय्यजु मिनल्-गैजि, कुल्लमा

أَلْقَى فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ۝ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ
 فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۝ وَقَالُوا لَوْ
 كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝ فَأَعْرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحِّقًا
 لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝
 وَاسْتَزُوا قَوْلَكُمْ وَأَجْهَرُوا بِهِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَ
 هُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۚ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا
 وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ ۚ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ۝ آمَنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ

उल्कि-य फीहा फौजुन् स-अ-लहुम् ख-ज-नतुहा अलम्
 यअतिकुम् नजीर ० कालू बला कद् जा-अना नजीरुन्,
 फ-कज्जबना व कुलना मा नज्जलल्लाहु मिन् शैइन् इन्
 अन्तुम् इल्ला फी जलालिन् कबीर ० व कालू लौ कुन्ना
 नसूमउ औव नअकिलु मा कुन्ना फी असहाबिस्सईर ०
 फअ-त-रफू बिजम्बिहिम् फ-सुहकल-लि-असहाबिस्-सईर
 ० इन्नल्लजी-न यख्शौ-न रब्बुहुम् बिलौबि लहुम्
 मगफि-रतुंव-व अजरुन् कबीर ० व असिरु कौलकुम्
 अविज्-हरु बिही, इन्हू अलीमुम् बिजातिस्सुदूर ०
 अला यअलमु मन् ख-ल-क, व हुवल-लतीफुल्-खबीर
 ० हुवल्लजी ज-अ-ल लकुमुल-अर-ज जलूलन् फमशू
 फी मनाकिबिहा व कुलू भिरजकिही, व इलैहिन्-नुशूर
 ० अ-आमिन्तुम् मन् फिस्समा-इ अय्यखसि-फ बिकुमुल्-

الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورٌ ۝ أَمْ أَمِنْتُمْ مَنِ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا فَسَتَعْلَمُونَ
 كَيْفَ نَذِيرٌ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيفَ كَانَ نَكِيرٌ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ
 فَوْقَهُمْ صَفْتٍ وَيَقَرِّضْنَ مِمَّا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَنُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ۝ أَمَنْ هَذَا
 الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَكُمْ يَنْصَرُّكُمْ مِمَّنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِنَّ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ۝ أَمَنْ
 هَذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ بَلْ لَجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ۝ أَفَمَنْ يَمْشِي
 مُكِبًّا عَلَى وَجْهِهِ أَهْدَى أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ
 وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ فَلْيَاذَنْ لَكُمْ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ

अ-ज फ-इजा हि-य तुमूर ० अम् अमिन्तुम् मन्
 फिस्समा-इ अय्युरसि-ल अलैकुम् हासिबन्, फ-सतअलमू-न
 कै-फ नजीर ० व ल-कद् कज्ज-बलूलजी-न मिन्
 कबूलिहिम् फकै-फ का-न नकीर ० अ-व लम् यरौ
 इलत्तैरि फौकहुम् साफफातिव्-व यक्बिबज्-न मा
 युमसिकुहुन्-न इल्लरहमानु, इन्नुहू बिकुल्लि शैइम्-बसीर
 ० अम्मन् हाजल्लजी हु-व जुन्दुल-लकुम् यन्सुरुकुम्
 मिन् दूनिरहमानि, इनिल्-काफिरु-न इल्ला फी गुरुर ०
 अम्-मन् हाजल्लजी यरजुकुकुम् इन् अम्-स-क रिज्कहू
 बल्-लज्जू फी उतुव्विन्-व नुफूर ० अ-फमय्यम्शी
 मुकिब्बन् अला वजहिही अहदा अम्-मय्यम्शी सविद्यन्
 अला सिरातिम्-मुस्तकीम ० कुल् हुवल्लजी अन्श-अकुम्
 व ज-अल लकुमुस्सम्-अ वल्अब्सा-र वल्-अफइ-द-त,
 कलीलम्-मा तश्कुरन् ० कुल् हुवल्लजी ज-र-अकुम्

فِي الْأَرْضِ وَالْيَمِّ تَحْشَرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ
 إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ
 الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدْعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكْنِي اللَّهُ
 وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابِ الْيَوْمِ ۝ قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ أَمَنَّا
 بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ
 إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَعِينٍ ۝

फिल अर्जि व इलैहि तुहशरुन ० व यकूल-न मत्ता
 हाजल्-वअदु इन् कुत्तुम् सादिकीन ० कुल् इन्नमल्-इल्मु
 इन्दल्लहि व इन्नमा अ-न नजीरुम्-मुबीन ० फ-लम्मा
 रऔहु जुल्फ-तन् सी-अत् वुजूहल्लजी-न क-फरु व
 की-ल हाजल्लजी कुत्तुम् बिही तद्-उन ० कुल् अ-रऐतुम्
 इन् अह-ल-कनियल्लाहु व मम्-मइ-य औ रहि-मना
 फ-मंय्युजीरुल्-काफिरी-न मिन् अजाबिन् अलीम ०
 कुल् हुवर-रहमानु आमन्ना बिही व अलैहि तवक्कलना
 फ-स-तअलमू-न मन् हु-व फी जलालिम्-मुबीन ० कुल्
 अ-रऐतुम् इन् अस्ब-ह मा-उकुम् गौरन् फ-मंय्यअतीकुम्
 बिमाइम्-मइन ०

सुरह नूह

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ
 أَلِيمٌ ۝ قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ إِنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَ
 أَطِيعُوا ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُخْرِجْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۝ إِنِ
 أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤْخَرُ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي
 دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ۝ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَايَ إِلَّا فِرَارًا ۝ وَإِنِّي
 كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا
 ثِيَابَهُمْ وَأَصْرُوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝ ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جَهَارًا ۝ ثُمَّ إِنِّي

इन्ना अरसलना नूहन् इला कौमिही अनू अनूजिर
 कौ-मक मिन् कबूलि अय्यअति-यहुम् अजाबुन् अलीम
 ० का-ल या कौमि इन्नी लकुम् नजीरुम्-मुबीन ०
 अनिअबुदुल्ला-ह वत्तकूहु व अतीउन ० यग़फ़िर् लकुम्-मिन्
 जुनूबिकुम् व यु-अख़्ख़रकुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन्,
 इन्-न अ-जलल्लाहि इजा जा-अ ला यु-अख़्ख़रु लौ
 कुन्तुम् तअलमून ० का-ल रब्बि इन्नी दऔतु कौमी
 लैलंव-व नहारन ० फ-लम् यजिदहुम् दुआई इल्ला
 फिरारा ० व इन्नी कुल्लमा दऔतुहुम् लि-तग़फ़ि-र
 लहुम् ज-अलू असाबि-अहुम् फी आजानिहिम् वस्तग़शौ
 सिया-बहुम् व अस्सर्ब वस्तक्बरुसूतिक्बारा ० सुम्-म
 इन्नी दऔतुहुम् जिहारन ० सुम्-म इन्नी

أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۚ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ
 كَانَ غَفَّارًا ۚ يُرْسِلُ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۚ وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَ
 بَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّاتٍ فَ لَا تَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا ۚ مَا لَكُمْ
 لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۚ وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۚ أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ
 خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَفْوَاتٍ طِبَاقًا ۚ وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ
 الشَّمْسَ سِرَاجًا ۚ وَاللَّهُ أَنْبَتَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۚ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ
 فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۚ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ۚ لِتَسْكُنُوا
 مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۚ قَالَ نُوحٌ رَبِّ انْتَهَيْ عَمَّوَنِي ۚ إِنَّتَبَعُوا مِنِّي لَمْ

अअलन्तु लहुम् व असरस्तु लहुम् इसरारा ० फकुल्लुस्तगुफिर
 रब्बकुम्, इन्नहु का-न गफ्फारंय ० युरसिलित्समा-अ
 अलैकुम् मिदरारं- ० -व युमदिदकुम् बिअमवालिं-व
 बनी-न व यजअल-लकुम् जन्नातिं-व यजअल-लकुम्
 अनहारा ० मा लकुम् ला तरजू-न लिल्लाहि वकारा ०
 व कद् ख-ल-ककुम् अतवारा ० अलम् तरौ कै-फ
 ख-लक्ल्लाहु सब-अ समावातिन् तिबाका ० व ज-अलल
 क-म-र फीहिन्-न नूरं-व ज-अलशशम्-स सिराजा ०
 वल्लाहु अम्ब-तकुम् मिनल्-अर्जि नबाता ० सुम्-म
 युइदुकुम् फीहा व युख्रिरिजुकुम् इख्राराजा ० वल्लाहु
 ज-अ-ल लकुमुल्-अ-ज बिसाता ० लि-तसलुकू मिन्हा
 सुबुलन् फिजाजा ० का-ल नूहुर-रब्बि इन्नहुम् असौनी
 वत्त-बड़ मल्-लम्

يَزِدْهُ مَالَهُ وَوَلَدَهُ الْإِخْسَارَ ۚ وَمَكْرُؤًا مَكْرًا كَبِيرًا ۚ وَقَالُوا
 لَا تَنْزِرُنَا إِلَهُتَكُمْ وَلَا تَنْزِرُنَا وَدًّا وَلَا سَوَاعَا ۚ وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ
 وَنَسْرًا ۚ وَقَدْ أَهْلَكْنَا كَثِيرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ۝ مِمَّا
 خَطَبْتِهِمْ أُخْرِقُوا فَأُدْخِلُوا نَارًا ۚ فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ
 أَنْصَارًا ۝ وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْنِي عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ۝
 إِنَّكَ إِنْ تَذَرَهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ۝
 رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِي مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَ
 الْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ۚ

यजिद्हु मालुहु व व-लदुहु इल्ला खसारा ० व म-करु
 मकरु कुब्बारा ० व कालू ला त-जरुन-न अलि-ह-तकुमु
 व ला त-जरुन-न वददंव-व ला सुवाअंव-व ला यगू-स
 व यउ-क व नसरा ० व कद् अजल्लू कसीरु, व ला
 तजिदिज्जालिमी-न इल्ला जलाला ० मिम्मा खतीअतिहिम्
 उगुरिकू फ-उदखिलू नारु फ-लम् यजिदू लहुम् मिन्
 दूनिज्जालि अन्सारा ० व का-ल नूहुर-रब्बि ला तजर
 अलल-अर्जि मिनल-काफिरी-न दय्यारा ० इन्न-क इन्
 तजरहुम् युजिल्लू इबा-द-कं व ला यलिदू इल्ला फजिरु
 कफफारा ० रब्बिगफिर ली व लिवालिदय-य व लिमन्
 द-छा-ल बैत्ति-य मुअमिनंव-व लिल-मुअमिनी-न
 वल्-मुअमिनाति, व ला तजिदिज्जालिमी-न इल्ला तबारा ०

सुरह जिन्न

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ۖ يَهْدِي إِلَى
الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَمْ نُشْرِك بِرَبِّنَا أَحَدًا ۚ وَأَنَّهُ تَعَلَّى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا
وَلَدًا ۖ وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۖ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّنْ تَقُولَ
الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ وَأَنَّهُ كَانَ مِن رِّجَالٍ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ
بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۚ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَن لَّنْ يَنْبَغَتْ
اللَّهُ أَحَدًا ۖ وَأَنَّا لَبَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلْتَمِسَةً حَسِيسَةً ۖ وَإِنَّا كُنَّا

कुल ऊहि-य इलय-य अन्नुहस-त-म-अ न-फरुम्
मिनल्-जिन्नि फकालू इन्न समिअना कुरआनन् अजबय
० यहदी इलर-रुशदि फ-आमन्ना बिही, व लन्-नुशरी-क
बिरिब्बिन्ना अ-हदा ० व अन्नुह तआला जददु रब्बिन्ना
मत्त-ख-ज साहि-बतंव-व ला व-लदा ० व अन्नुह
का-न यकूलु सफीहुना अलल्लाहि श-तता ० व अन्ना
जन्नन्ना अल्-लन् तुकूलल्-इन्सु वलजिन्नु अलल्लाहि
कजिबा ० व अन्नुह का-न रिजालुम् मिनल्-इन्सियज्जू-न
बिरिजालिम् मिनल्-जिन्नि फजादुहुम् रहकंव ० व अन्नुहुम्
जन्नु कमा जन्नन्तुम् अल्लय-यब्-असल्लाहु अ-हदा ०
व अन्ना ल-मसूनस्समा-अ फ-वजदनाहा मुलिअत्त हरसन
शदीदंव-व शुहुबा ० व अन्ना कुन्ना

نَقَعْدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَنْ يَسْمَعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شَيْهَابًا رَصَدًا ۝ وَأَنَا لَا نَذَرُ
 أَشْرًا يَدِينَنَّ فِي الْأَرْضِ أَمَّا أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝ وَأَنَا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَ
 مِنَّا دُونَ ذَلِكَ كُنَّا طَائِفًا قَدَرًا ۝ وَأَنَا ظَنَنَّا أَنَّ لَنْ كُنْعِزَ اللَّهُ فِي الْأَرْضِ
 وَلَنْ نُعْجِزَهُ هَرَبًا ۝ وَأَنَا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ آمَنَّا بِهِ فَمَنْ يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ فَلَا
 يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ۝ وَأَنَا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ فَمَنْ أَسْلَمَ
 فَأُولَئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝ وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝ وَإِنْ لَوِ اسْتَقَامُوا
 عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَهُمْ غَدَقًا ۝ لَنَفْتَنَنَّ فِيهِ فَمَنْ يَعْزُضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ

नकड़दु मिन्हा मकाई-द लिस्समइ, फ-मंय्यस्तमिइल्-आ-न
 यजिद् लहू शिहाबर-र-सदंव ० व अन्ना ला नद्री
 अ-शरून उरी-द बिमन् फिलअर्जि अम् अरा-द बिहिम्
 रब्बुहुम् र-शदा ० व अन्ना मिन्स्सालिहू-न व मिन्ना
 दू-न जालि-क कुन्ना तराइ-क कि-ददा ० व अन्ना
 जनन्ना अल्-लन् नुअजिजल्ल-ह फिलअर्जि व लन्
 नुअजि-जहू ह-खंव ० व अन्ना लम्मा समिअनल्-हुदा
 आमन्ना बिही, फमंय्यअमिम् बिरब्बिही फला यव्वाफु
 बख्संव-व ला र-हका ० व अन्ना मिन्नल्-मुसलिमू-न व
 मिन्नल्-कासितू-न फ-मन् अस्ल-म फ-उलाइ-क त-हरौ
 र-शदा ० व अम्मल्-कासितू-न फकानू लि-जहन्न-म
 ह-तबंव ० व अल्-लविस्तकामू अलत्तरी-कति
 ल-अस्कैनाहुम् माअन् ग-दकल ० लिनफित-नहुम् फीहि,
 व मंय्युअरिज् अन् जिक्कि रब्बिही

يَسْأَلُكَ عَذَابًا صَعَدًا ۚ وَإِنَّ الْمَسْجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۚ وَآتَاهُ لَمَّا قَامَ
 عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۚ قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ
 بِهِ أَحَدًا ۚ قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۚ قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ
 اللَّهِ أَحَدٌ ۚ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۚ إِلَّا بَلَاغًا مِنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ
 وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا أَبَدًا ۚ
 حَتَّىٰ إِذَا سَأرَأَوْا أَنَّهُمْ يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ ۚ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ۚ
 قُلْ إِنْ أَدْرَيْتُمْ أَقْرَبُ مَا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ۚ عَلِيمُ الْغَيْبِ

यस्तु कहू अजाबन् स-अदवं ० व अन्नल्-मसाजि-द
 लिल्लाहि फला तदउ मअल्लाहि अ-हदा ० व अन्हू
 लम्मा का-म अब्दुल्लाहि यदउहु कादू यकूनू-न अलैहि
 लि-बदा ० कुल् इन्नमा अदउ रब्बी व ला अशरिकु
 बिही अ-हदा ० कुल् इन्नी ला अमलिकु लकुम्
 जरंव-व ला र-शदा ० कुल् इन्नी लंग्युजी-रनी मिनल्लाहि
 अ-हदुं-व लन् अजि-द मिन् दूनिही मुल्ल-हदा ०
 इल्ला बलागम् मिनल्लाहि व रिसालतिही, व मंग्यअसिल्ला-ह
 व रसूलहू फ-इन्-न लहु ना-र जहन्न-म खालिदी-न
 फीहा अ-बदा ० हत्ता इजा रऔ मा यू-अदू-न
 फसयअलमू-न मन् अजअफु नासिरं-व अकल्लु अ-ददा
 ० कुल् इन् अदरी अ-करीबुम्-मा तू-अदू-न अम्
 यजअलु लहु रब्बी अ-मदा ० आलिमुल्गैबि

فَلَا يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ أَحَدًا إِلَّا مَنِ ارْتَضَى مِنْ رَسُولٍ فَإِنَّهُ يَمْلِكُ
 مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ۚ لِيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبَدَغُوا رَسُولَ رَبِّهِمْ
 وَآخَاطَ بِهِمَا الدِّيْنُ ۚ وَاحْصِ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۝

फला युजूहिरु अत्ता गैबिही अ-हदन ० इल्ता मनिरतजा
 मिरसूलिन् फ-इन्हू यस्तुकु मिम्-बैनि यदैहि व मिन्
 खलफिही र-सदल ० लियअल-म अन् कद् अब्तगू
 रिसालाति रब्बिहिम् व अहा-त बिमा लदैहिम् व अहसा
 कुल्-ल शैइन् अ-ददा ०

बाज सुरतों के खास फाएँदे

फर्माया स. : सुरेह फातेहा को कलीदे जन्नत और हर मर्ज की
 दवा शिफाउन लिक्वल्ली दाइन फर्माया है.

फर्माया स. : आयते करीमा को हर मुशकील का हल और
 कशाईश हाजात फर्माया है. १०० बार रात को पढ़ें.

फर्माया स. : हसबीयल्लाहु ला इलाहा इल्ता हवु अलैहि
 तवक्कलतु वहुव रब्बुलअरशीलअजीम. हर रोज़ सात बार
 पढ़ें अल्लाह तआला दुनिया व आखिरत के महम्मात को काफी
 करेगा.

फर्माया य. : सुरेद कदर पारा ३० (इन्ता अनजलना) सुबह व
 शाम तीन तीन बार पढ़ने से फराखीए रिज़क और लोगो में
 इज्जत होती है.

सुरेह मुज्जम्मिल

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الْمُرْمِلُ ۚ قُمْ الْيَلَّ إِلَّا قَلِيلًا ۚ نَصْفَهُ أَوْ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا ۚ
 أَوْزِدْ عَلَيْهِ وَرَاقِلَ الْقُرْآنِ تَرْتِيلًا ۚ إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ۚ إِنَّ
 نَاشِئَةَ الْيَلِّ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلًا ۚ إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ۚ
 وَاذْكُرْ أَسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۚ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
 فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۚ وَأَصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ ۚ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ۚ وَذَرْنِي
 وَالْمُكَذِّبِينَ أُولَى النَّعْمَةِ وَمَهَلْهُمْ قَلِيلًا ۚ إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا ۚ وَطَعَامًا ذَا
 غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۚ يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا

या अय्युहल्-मुज्जम्मिल ० कुमिल्-लै-ल इल्ला कलीला
 ० निस्फहू अविन्कुस मिन्हु कलीलन ० औ जिद् अलैहि
 व रत्तिलिल्-कुरआ-न तरतीला ० इन्ना सनुल्की अलै-क
 कौलन् सकीला ० इन्-न नाशि-अतल्लैलि हि-य अशददु
 वतअंव-व अक्वमु कीला ० इन्-न ल-क फिन्हादि
 सब्हन् तवीला ० वज्कुरिस्-म रब्बि-क व त-बत्तल्
 इलैहि तब्तीला ० रब्बुल्-मशरिक् वल्-मगरिबि ला
 इला-ह इल्ला हु-व फत्तखिजहु वकीला ० वसबिर अला
 मा यकूलू-न वहजुरहुम् हज्रन जमीला ० व जरनी
 वल्-मुकज्जिबी-न उलिन्नअमति व महिहलहुम् कलीला
 ० इन्-न लदैना अन्कालंव-व जहीमा ० व तआमन् जा
 गुस्सतिंव-व अजाबन्अलीमा ० यौ-म तरजुफुल्-अरजु
 वल्-जिबालु व कानतिल्-जिबालु कसीबम्-महीला ०

مَهِيلاً ۝ اِنَّا ارْسَلْنَا اِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْنَكُمْ كَمَا ارْسَلْنَا اِلَىٰ فِرْعَوْنَ
 رَسُولًا ۝ فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَاَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلاً ۝ وَكَيْفَ
 تَتَّقُونَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۝ السَّمَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهِ ۚ كَانَ وَعْدُهُ
 مَفْعُولًا ۝ اِنْ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمِنْ شَاءِ اتَّخَذْنَا اِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝ اِنْ رَبَّكَ
 يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُومُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثِي اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ
 مِنَ الدِّينِ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ اَنْ لَّنْ نَّحْصُوهُ
 فَتَابَ عَلَيْنَكُمۡ ۚ فَاَقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ اَنْ سَيَكُونُ مِنْكُمْ
 مَرْضٰى ۚ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِى الْاَرْضِ يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ

इन्ना अरसल्ला इलैकुम् रसलन् शाहिदन् अलैकुम् कमा
 अरसलना इला फिरऔ-न रसुला ० फ-असा
 फिरऔनुर-रसू-ल फ-अखजनाहु अख्जं-व-वबीला फकै-फ
 तत्तकू-न इन् क-फरतुम् यौमय्यज्-अलुल्-विल्दा-न शीबनी
 ० स्समा-उ मुन्फतिरुम् बिही, का-न वअदुहू मफउला ०
 इन्-न हाजिही तजकि-रतुन् फ-मन् शाअत्त-ख-ज इला
 रब्बिही सबीला ० इन्-न रब्ब-क यअलमु अन्न-क
 तकुम् अदना मिन् सुलु-सयिल्लैलि व निस-फहू व
 सुलु-सहू व ताइ-फतुम् मिनल्लजी-न म-अ-क, वल्लाहु
 युक्दिरुल्लै-ल वन्नहा-र, अलि-म अल-लन् तुहसूहु फता-ब
 अलैकुम् फकरऊ मा त-यस्स-र मिनल्-कुरआनि, अलि-म
 अन् स-यक्नु मिन्कुम् मरजा व आ-खरु-न यजरिबु न
 फिल-अरजी यबतगुन मिन फजलील्लाह

وَأَخْرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَاَقْرَبُوا مَا تَسْرَمُونَ وَأَقْرَبُوا
 الصَّلَاةَ وَأَتُوا الزَّكَاةَ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ
 مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمُ أَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا لِلَّهِ
 إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

व आखरुना युकातिलू-न फी सबीलिल्लहि फक्कउमा
 त-यस्स-र मिन्हु व अकीमुस्सला-त व आतुज्-जका-त
 व अक्किजुल्ला-ह कर्जन् ह-सनन्, व मा तुक्दिमु
 लि-अन्फुसिकुम् मिन् खैरिन् तजिदुहु इन्दल्लहि हु-व
 खैरंव-व अअ-ज-म अज्रन्, वस्तगुफिरुल्ला-ह इन्ल्ला-ह
 गफूर-रहीम ०

बाज सुरतों के खास फाएदे

फर्माया स. : सुरेह अलहाकुमुत्तकासुर, पारा ३० पांच आयतें हैं, छोटी
 छोटी लेकिन हजार आयत के बराबर सवाब और रिज्क में फराखी
 फर्माया ।

फर्माया स. : सुरेह मुद्ससर पारा २९ (या अय्युहल मुद्ससीरु कुम्)
 मोहताज गरीब रोजाना पढा करे इन्शाअल्लाह गनी मालदार हो जाएगा.
 फर्माया स. : सुरेह कुरेश पढ कर खाना खाए नज़र बद से महफुज़ रहेगे.
 और तिलावत का सवाब जाएद ।

फर्माया स. : आखिर के दोनो कुल शरीफ पढ कर दम करें शरे हासिद
 व सहर व बलायात दुर होंगे ।

फर्माया स. : आंख का दरद सुरेह हमज़ा पढ कर दमकरें इन्शाअल्लाह
 आराम होगा चंद बार तक़ार करें ।

सुरह कियामा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا أُفْسِدُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ وَلَا أُفْسِدُ بِالنَّفْسِ الْوَآمَةِ ۖ اِيْحَسَبُ الْاِنْسَانُ
اَنْ تَجْمَعَ عِظَامُهُ ۖ بَلَىٰ فَيَذَرُهَا عَلَىٰ اَنْ تُسَمَّوْا بَنَانَهُ ۖ بَلَىٰ يُرِيدُ الْاِنْسَانُ
لِيَجْزِيَ اَمَامَهُ ۖ يَسْأَلُ اَيُّنَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ فَاِذَا ابْرَقَ الْبَصَرُ ۖ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۖ
وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۖ يَقُولُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفْزَرُ ۖ كَلَّا لَا وَزَرَ ۖ اِلَىٰ
رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۖ يَتَّبِعُوهُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ۖ بَلَىٰ الْاِنْسَانُ
عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۖ وَلَوْ اَلْقَىٰ مَعَاذِرَهُ ۖ لَا تُحْرِكُ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ۖ
اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ۖ فَاِذَا قُرْآنُهُ فَاتَتْهُ فُرْآنُهُ ۖ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ۖ

ला उक्सिमु बियौमिल्-कियामति ० व ला उक्सिमु
बिन्निफिसल्-लव्वामह् ० अ-यह्सबुल्-इन्सानु अल्-लन् नज्म-अ
इज्जामह् ० बला कादिरी-न अला अनू-नुसवि-व बनानह् ०
बल् युरिदुल्-इन्सानु लियफजु-र अमामह् ० यस्तलु अय्या-न
यौमुल्-कियामह् ० फ-इजा बरिकल्-ब-सरु ० व
ख-सफल-क-मरु ० व जुमिअश्शाम्सु वल्क-मरु ०
यकूलुल्-इन्सानु यौमइजिन् ऐनल्-मफरु ० कल्ला ला व-जर
० इला रब्बि-क यौमइजि-निल्-मुसतकर् ० युनब्बउल्-इन्सानु
यौमइजिम् बिमा कद्-द-म व अख्ब-र ० बलिल्-इन्सानु
अला गफिसही बसी-स्तुव् ० -व लौ अल्का मआजीरह् ०
ला तुहरिक् बिही लिसान-क लितअ-ज-ल बिह ० इन्-न
अलैना जम्-अह् व कुरआनह् ० फ-इजा कुरअनाहु
फत्तबिअ कुरआनह् ० सुम्-म इन्-न अलैना बयानह् ०

كَلَّا هَلْ نَرُجُّونَ الْعَاجِلَةَ ۖ وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ۚ وَجُودُهُ يَوْمَئِذٍ تَاضَرُّهُ ۖ إِلَى
 رَبِّهَا نَاطِرَةٌ ۖ وَجُودُهُ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۖ تَظُنُّ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۖ كَلَّا إِذَا
 بَلَغَتِ الثَّرَاقِي ۖ وَقِيلَ مِنْ عَرَاقٍ ۖ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ۖ وَالتَّقَى السَّاقِ
 بِالسَّاقِ ۖ إِلَى رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ۖ فَلَا صَدَقَ وَلَا صَلَّى ۖ وَلَكِنْ كَذَّبَ
 وَتَوَلَّى ۖ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَى أَهْلِهِ يَتَمَطَّى ۖ أُولَى لَكَ فَأُولَى ۖ ثُمَّ أُولَى لَكَ فَأُولَى ۖ
 أَيْحَسِبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدًى ۖ أَلَمْ يَكُنْ نُطْفَةً مِنْ مَنِيٍّ يُُمْنَى ۖ ثُمَّ
 كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّى ۖ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى ۖ
 أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقْدِرٍ عَلَيَّ أَنْ يُخَيَّرَ الْهَوَى ۖ

कल्ला बल् तुहिब्बुनल्-आजि-ल-त ० व त-
 जरूनल्-आखिरह ० वुजूहुय-यौमइजिन् नाजि-रतुन् ०
 इला रब्बिहा नाजिरह ० व वुजूहुय-यौमइजिम् बासि-रतुन्
 ० तजुन्नु अय्युफअ-ल बिहा फाकिरह ० कल्ला इजा
 ब-लगतित्-तराकि-य ० व की-ल मन्-राकिंव- ० -व
 जन्-न अन्नहुल् फिराक ० वल्-तफफतिस-साकु बिस्साकि
 ० इला रब्बि-क यौमइजि- निल्-मसाक ० फत्ता सद-द-क
 व ला सल्ला ० वलाकिन् कज्ज-ब व त-वल्ता ० सुम्-म
 ज-ह-ब इला अहिलही य-तमत्ता ० औला ल-क फ-औला
 ० सुम्-म औला ल-क फ-औला ० अ-यहसबुल्-इन्सानु
 अय्यत्-र-कसुदा ० अल्म् यकु नुत्फ-तम् मिम्- मनिय्यिय-युन्ना
 ० सुम्-म का-न अ-ब-कतन् फ-ख-ल-क फ-सब्बा ०
 फ-ज-अ-ल मिहज्-जौजैनिज्-ज-क-र वल् उत्ता ० अलै-स
 जालि-क बिकादिरिन् अला अय्युहयि- यल्-मौता ०

सुरह दहिर

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُورًا ۝ إِنَّا خَلَقْنَاهُ
الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝ إِنَّا هَدَيْنَاهُ
السَّبِيلَ ۖ إِمَّا شَاكِرًا ۖ وَإِمَّا كَفُورًا ۝ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا وَأَغْلَاقًا
وَسَعِيرًا ۝ إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۖ عَمِيمًا
يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۖ يُوفُّونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ
شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۖ وَيُطْعَمُونَ فِيهَا الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ۖ
إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ۖ إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا

हल अता अलल-इन्सानि हीनुम्-मिनद्-दहिर लम् यकुन्
शैअम्-मज़्कूरा ० इन्ना खलक्नल्-इन्सा-न् मिन् नुत्फतिन्
अम्शाजिन्- नब्तलीहि फ-जअल्लाहु समीअम्-बसीरा ०
इन्ना हदैनाहुस्सबी-ल इम्मा शाकिरंव-व इम्म कफूरा ०
इन्ना अअतदना लिल्-काफिरी-न सल्लासि-ल व अल्लालंव-व
सईरा ० इन्नल्-अब्रा-र यशरबू-न मिन् कअसिन् का-न
मिजाजुहा काफूरा ० अैनय्-यशरबु बिहा इबादुल्लाहि
युफज्जिस्नहा तफ्जीरा ० यूफू-न बिन्नज़रि व यख्राफू-न
यौमन् का-न शरूहु मस्ततीरा ० व युतअिमूनत्तआ-म
अला हुब्बिही मिस्कीनंव-व यतीमंव-व असीरा ० इन्नमा
नुतअीमुकुम् लिवज्जिल््लाहि ला नुरीदु मिन्कुम् जजाअंव-व
ला शुकूरा ० इन्ना नख्राफु मिर्रिब्बिना

اِنْ هَذَا اَكَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَشْكُورًا ۝ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيكَ الْقُرْآنَ
 تَنْزِيلًا ۝ فَاَصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَطِعْ مِنْهُمْ اِثْمًا اَوْ كُفُورًا ۝ وَاذْكُرْ اَسْمَرَ رَبِّكَ
 بُكْرَةً ۝ وَاَصْبِلًا ۝ وَمِنْ اَيْلٍ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ۝ اِنْ هَؤُلَاءِ
 يَجِبُونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذْرُونَ وِرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۝ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا
 اَسْرَهُمْ ۝ وَاِذَا شِئْنَا بَدَلْنَا مِثْلَهُمْ تَبْدِيلًا ۝ اِنْ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۝ فَمَنْ
 شَاءَ اتَّخَذْ اِلٰى رَبِّهِ سَبِيلًا ۝ وَمَا تَشَاءُونَ اِلَّا اَنْ يَشَاءَ اللّٰهُ ۝ اِنْ اللّٰهُ
 كَانَ عَلَيْهِمْ حَكِيمًا ۝ يُّدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ اَعَدَّ لَهُمْ
 عَذَابًا اَلِيمًا ۝

इन्-न हाजा का-न लकुम् - जजा-अंव-व का-न
 सअयुकुम्-मश्कूरा ० इन्ना नहनु नज्जल्ला अलैकल्-कुरआ-न
 तन्जीला ० फस्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तुतिअ
 मिन्हुम् आसिमन् औ कफूरा ० वज्कुरिस्-म रब्बि-क
 बुक-तंव-व असीला ० व मिनल्लैलि फसजुद लहु व
 सब्बिहहु लैलन् तवीला ० इन्-न हा-उला-इ युहिब्बुनल्
 आजि-ल-त व य-जरू-न वरा-अहुम् यौमन् सकीला ०
 नहनु खलक्नाहुम् व शददना अस्-रहुम् व इजा शिअना
 बदल्ला अम्सालहुम् तब्दीला ० इन्-न हाजिही तज्जि-रतुन्
 फमन् शाअत्त-ख-ज इला रब्बिही सबीला ० व मा
 तशाऊ-न इल्ला अय्यशा-अल्लाहु, इन्नल्ला-ह का-न
 अलीमन् हकीमय ० युदखिलु मय्यशा-उ फी रहमतिही
 वज्जालिमी-न अ-अद्-द लहुम् अजाबन् अलीमा ०

اِنْ هَذَا اَكَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَشْكُورًا ۝ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيكَ الْقُرْآنَ
 تَنْزِيلًا ۝ فَاَصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَطِعْ مِنْهُمْ اِثْمًا اَوْ كُفُورًا ۝ وَاذْكُرْ اَسْمَرَ رَبِّكَ
 بُكْرَةً وَّاَصِيلاً ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلاً ۝ اِنْ هَؤُلَاءِ
 يَجِبُونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذْرُونَ وَّرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلاً ۝ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا
 اَسْرَهُمْ ۝ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيلاً ۝ اِنْ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ
 شَاءَ اتَّخَذْ اِلٰى رَبِّهِ سَبِيلاً ۝ وَمَا تَشَاءُونَ اِلَّا اَنْ يَشَاءَ اللّٰهُ ۝ اِنْ اللّٰهُ
 كَانَ عَلَيْهِمْ حَٰكِمًا ۝ يَدَّخِلْ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ اَعَدَّ لَهُمْ
 عَذَابًا اَلِيماً ۝

इन्-न हाजा का-न लकुम् जजा-अंव-व का-न
 सअयुकुम्-मश्कूरा ० इन्ना नहनु नज्जल्ला अलैकल्-कुरआ-न
 तन्जीला ० फस्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तुतिअ
 मिन्हुम् आसिमन् औ कफूरा ० वज्जुरिस्-म रब्बि-क
 बुक़-तंव-व असीला ० व मिनल्लैलि फसजुद् लहु व
 सब्बिहहु लैलन् तवीला ० इन्-न हा-उला-इ युहिब्बुनल्
 आजि-ल-त व य-ज्रु-न वरा-अहुम् यौमन् सकीला ०
 नहनु खलक्नाहुम् व शददना अस्-रहुम् व इजा शिअन्ना
 बदल्ला अम्सालहुम् तब्दीला ० इन्-न हाजिही तज्जि-स्तुन्
 फमन् शाअत्त-ख-ज् इला रब्बिही सबीला ० व मा
 तशाऊ-न इल्ला अय्यशा-अल्लाहु, इन्नल्ला-ह का-न
 अलीमन् हकीमय ० युदखिलु मय्यशा-उ फी रहमतिही
 वज्जालिमी-न अ-अद्-द लहुम् अजाबन् अलीमा ०

सुरह नबा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيمِ الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ۝ كَلَّا
 سَيَعْلَمُونَ ۝ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۝ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهْدًا ۝ وَالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۝
 وَخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ۝ وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ۝ وَجَعَلْنَا
 النَّهَارَ مَعَاشًا ۝ وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۝ وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ۝ وَ
 اَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا ۝ لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ۝ وَجَنَّاتٍ
 اَلْفَاافًا ۝ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ۝ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ۝
 وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۝ وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝ اِنَّ جَهَنَّمَ

अम्-म य-तसा-अलून ० अनिन्-न-बइल्-अजीम ०
 अल्लजी हुम् फीहि मुख्तलिफून ० कल्ला स-यअलमून
 ० सुम्-म कल्ला स-यअलमून ० अलम् नज्अलिल्-अर-ज
 मिहादंव्- ० -वल्-जिबा-ल औतादंव्- ० -व-खलक्नाकुम्
 अज्वाजंव्- ० -वजअलन नौमकुम सुबाता ० -व जअल्लल्लै-ल
 लिबासंव्- ० -व जअल्लन्-नहा-र मआशा ० व बनैना
 फौ-ककुम् सबअन् शिदादंव्- ० -व जअल्ला सिराजंव्-वहहाजा
 ० व अन्जल्ला मिनल्-मुअसिराति मा-अन् सज्जाजल्- ०
 -लिनुख्खरी-ज बिही हब्बंव्-व नबातंव्- ० -व जन्नातिन्
 अफाफा ० इन्-न यौमल्-फस्लि का-न मीकातंय्- ०
 -यौ-म युन्फखु फिस्सूरि फ-तअतू-न अफ्वाजंव् ० व
 फुति-हतिस्-समा-उ फ-कानत् अब्बाबंव्- ० -व
 सुय्यि-रतिल्-जिबालु फ-कानत् सराबा ० इन्-न जहन्न-म

كَانَتْ مِرْصَادًا ۖ لِلظَّغِينِ مَابًا ۖ لِّلَّيْثِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ۚ لَا يَذُوقُونَ فِيهَا
 بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ۚ إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ۚ جَزَاءُ وَفَاقًا ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ
 حِسَابًا ۚ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَابًا ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ۚ فَذُوقُوا فَلَنْ
 نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۚ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ۚ حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ۚ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۚ وَ
 كَأْسًا دِهَاقًا ۚ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَابًا ۚ جَزَاءُ مِمَّنْ رَّبَّكَ عَطَاءُ حِسَابًا ۚ
 رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَآبِئُهَا الرَّحْمَنُ لَا يَمْلِكُ لَكَ مِنَ الْإِثْمِ كُفْرًا ۚ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ
 وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا ۚ لَا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا ذُنُّ لَهُ الرَّحْمَنُ وَقَالَ صَوَابًا ۚ ذَلِكَ الْيَوْمُ

कानत् मिरसादल्-०-लित्तागी-न म-आबल्-०-लाबिसी-न
 फीहा अहकाबा ० ला यजूक्-न फीहा बरदंव-व ला
 शराबन् ० इल्ला हमीमंव-व गस्साकन् ० जजाअंव-विफाका
 ० इन्नुहम् कानू ला यरजू-न हिसाबंव ० व कज्जबू
 बिआयातिना किज्जाबा ० व कुल्-ल शैइन् अहसैनाहु
 किताबन् ० फजूक् फ-लन् नजी-दकुम् इल्ला अजाबा
 ० इन्-न लिल्मुत्तकी-न मफाजन् ० हदाइ-क् व
 अअनाबंव-०-व कवाइ-ब अतराबंव-०-व कअसन्
 दिहाका ० ला यसमउ-न फीहा लगवंव-व ला किज्जाबा
 ० जजाअम्-मिर्बिबि-क् अताअन् हिसाबा ० रब्बिस्समावाति
 वल्अर्जि व मा बैनुहमरहमानि ला यम्लिकू-न मिन्हु
 खिताबा ० यौ-म यकूमुरूहु वल्मलाइ-कतु सप्फल ला
 य-तकल्लम्-न इल्ला मन् अजि-न लहरहमानु व का-ल
 सवाबा ० जालिकल् यौमुल्-

الْحَقُّ" فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ مَا بَاءً ۚ إِنَّا أَنْذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا ۖ يَوْمَ يَنْظُرُ
الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَلَيْتَنِي كُنْتُ شَرًّا ۚ

हक्कु फ-मन् शाअत्त-ख-ज इला रब्बिहि मआबा ०
इन्ना अनजरनाकुम् अजाबन् करीबय्-यौ-म यन्जुरुलमरउ
मा कद्द-मत् यदाहु व यकूलुल्-काफिरु या लैतनी कुन्तु
तुराबा ०

नजात व फलाह आखेरत के लिए

विरद कलमा शरीफ हमेशागी नमाज़. हर नमाज़ के

बाद अयतलकुर्सी. सुबह सुरेह यासीन और दरुदे शरीफ,
सोते वक्त सुरेह मुल्क और इस्तगफार.

सुबह व शाम : अल्लाहुम्मा अजीरनी मिनन्नार. ७—७

बार और फसुबहानल्लाहि हिन तुमसुन वहिन तुसबिहुन.

वलहुल हम्दु फिस्समावाति ता तुखरजुन ०

सुरेह आला

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ الَّذِي خَلَقَ فَتَوَصَّى ۝ وَالَّذِي نَفَذَ فَعْدَهُ ۝ وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى ۝ فَجَعَلَهُ غُثَاءً
أَخِرَ ۝ سَقَرْتُكَ فَلَا تَنْتَلِي ۝ إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۝ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَى ۝ وَيَنْتَرِكُ لِلْيَسْرَةِ ۝ فَذَكَرَ
إِنْ نَفَعَتِ الذِّكْرَةَ ۝ سَيَذَكُرُ مَنْ يَخْشَى ۝ وَيَجْعَلُهَا آتِشَ ۝ الَّذِي يَضِلُّ الثَّكْرَ الْكَبْرَةَ ۝ ثُمَّ
لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۝ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّى ۝ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّى ۝ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝
وَالْآخِرَةَ خَيْرَ ۝ إِنَّ هَذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَى ۝ صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ۝

सब्बिहिसू-म रब्बिकलू-अअला ० अल्लजी ख-ल-क
फ-सव्वा ० वल्लजी कद्द-र फ-हदा ० वल्लजी
अख्र-जलू-मरआ ० फ-ज-अ-लहू गुसाअन् अहवा ०
सनुक्रीउ-क फला तन्सा ० इल्ला मा शा-अल्लहु, इन्नहू
यअलमुलू-जह-र व मा यक्फा ० व नुयसिरु-क
लिलयुसरा ० फजाविकर् इन् न-फ-अतिज-जिक्रा ०
स-यज्जक्करु मय्यखशा ० व य-तजन्नबुहलू-अश्क- ०
-ल्लजी यस्तलू-नारलू-कुब्रा ० सुम्-म ला यमूतु फीहा व
ला यहया ० कद् अफल-ह मन् तजक्का ० व
ज-करस्-म रब्बिही फ-सल्ला ० बल्
तुअसिरुनलू-हयातद्-दुनया ० वलू-आखिरतु खैरुव-व
अब्का ० इन्-न हाजा लफिस-सुहफिलू-ऊला ० सुहफि
इब्राही-म व मूसा ०

असनादे मन्जिल

ये मन्जिल आसैब, सहर और बाज़ दुसरे खतरात से हिफाज़त के लिए एक मुजर्रीब अमल है । ये आयात किसी कदर कमि बेशी के साथ “अलकौल अलजमील” और “बहेशती ज़ेवर” में भी लिखी है । अलकौल अलजमील में हज़रत शाह वली अल्लाह मोहद्दीस दहलवी कुदस सररहु तहरीर फर्माते है :

“ये ३३ तैतीस आयतें है जो जादु को दफ़ा करती है और शयातीन और चोरों और दरिंदे जानवरो से पनाह हो जाती है.”

और बहेशती ज़ेवर में हज़रत मौलाना शरफ अली थानवी नुरअल्लाह मुरकदा तहरीर फर्माते है :

“अगर किसी पर आसेब का शुबा हो तो आयात ज़ेल लिख कर मरीज़ के गले में डाल दें और पानी पर दम करके मरीज़ पर छिड़क दें.”

और अगर घर में असर हो तो इन को पानी पर पढ कर घर के चारो गोशो में छिटक दें ।

मन्जिल

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ مَلِكُ يَوْمِ الدِّينِ ۝ اِنَّا كَ
نَعْبُدُ وَاِنَّا كَنَسْتَعِيزُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِينَ
اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ۝ (امين)

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन ० अर्रहमा निर्रहीम ०
मालिकि यौमिदीन ० इय्याक नाअबुदु वइय्याक नस्तईन
० इहदिनसिरातल मुस्तकीम ० सिरातल्लजीन अन्जम्त
अलैहिम गैरिल मगजुबि अलैहिम वलज्जाल्लीन ०

रसुल अल्लाह स. ने फर्माया जिस ने दीन में कोई ऐसा काम किया जिस की बुनियाद शरीअत में मौजूद नहीं वो काम मरदुद है. (बुखारी व मुस्लिम)

यू तो दिने इस्लाम में बिदआत का इजाफा अब रोज मर्रा का मामुल बन चुका है लेकिन इजकार व वजाईफ में खुसुसन इतनी ज्यादा खुद साखता और गैर मसनुन चिजें शामिल करदी गई है के मसनुन अदीया व इजकार ताक नसीयां बन कर रह गए हैं. दिगर खुद साखता और गैर मसनुन इजकार व वजाईफ की तरह दरुद व सलाम में भी बहोत से खुद साखता और गैर मसनुन दरुद व सलाम राएज हो चुके हैं. मसलन दरुद ताज, दरुद लिखी, दरुद मुकद्दस, दरुद अकबर, दरुद माहि, दरुद तंजीना वगैरा. इन में से हर दरुद के पढ़ने का तरीका और वक्त अलग अलग बताया गया है और इन के फवाइद (जो के ज्यादा तर दुनयाबी है) का भी अलग अलग तज्केरा कुतुब में लिखा गया है. मजकुरा दरुदों में से कोई एक दरुद भी ऐसा नहीं जिस के अलफाज रसुल अकरम स. से साबित हो. लेहाजा इन्हें पढ़ने का तरीका और इन से हासिल होने वाले फवाइद अज खुद बातिल उठरते हैं. रसुल अल्लाह स. की नाराजगी और अल्लाह तआला के गज़ब का बाइस बने लेहाजा वही वजाईफ पढ़े जो रसुल अल्लाह स. से साबित है. याद रखीए रसुल अल्लाह स. की ज़बान से निकला हुआ एक लफज़ दुनिया के सारे अवलीया और सॉल्लेह के बनाए हुए कलमाते खैर से ज्यादा अफज़ल और कीमती है.

(बराए महरबानी मोमिन पंचसुरा पढीए)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْمَرْ ذَلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ
وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝ وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا
أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۝ وَالْآخِرَةَ هُمْ يُوقِنُونَ ۝ أُولَئِكَ عَلَى
هُدًى مِنْ رَبِّهِمْ ۝ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَالْهَٰكُمُ إِلَهُ وَاحِدٌ ۝ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ

बिस्मिल्लाहि र्हमानि रहीम ०

अलिफ लाम मीम ० जालिकल किताबु ला रैब फिही
हुदलल्लि मुत्तकीन ० अल्लजीन युअमिनून बिलगैबि व
युकीमुनस्सलॉत व मिम्मा रजकनाहुम युनफिकून ०
वलल्लजीन युअमिनून बिमा उन्जिल इलैक वमा उन्जिल
मिन कब्लिक व बिलआखिरतिहुम युकिनून ० उलाइक
अला हुदमिररब्बिहिम व उलाइक हुमुल मुफिलहुन ०
इन्नल लजीन कफरु व सवाउन अलैहिम अअन्जरतुहुम
अम लम तुन्जिरहुम ला युअमिनून ० खतमल्लाहु अला
कुलूबिहिम व अला समइहिम ॥ व अला अबसारिहिम
गिशावतुंवलहुम अजाबुन अजीम ०

أَلَهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝ لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ
الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ
الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُمْ
مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أُولَئِكَ هُمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُمْ مِنَ النُّورِ
إِلَى الظُّلُمَاتِ أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

अल्लाहु लाइलाहि इल्ला हु अलहय्युल कय्युम ला ताखुजुहु
सिनतुंवल्ला नौम लहु माफिस्समावाति वमा फिल अर्ज
मन जल्लजी यश्फउ इंदहु इल्ला बिश्मनिह याअलमु
माबैन ऐदिहिम वमा खल्फहुम वला युहीतुन बशैइमिन
इल्मिहि इल्ला बिमाशाअ वसीअ कुसीयुहुस्समावाति वलअर्ज
वला यउदू हिफजुहुमा वहुव अलीय्युल अजीम ० ला
इक्रा-ह फिद्दीनि कत्तबय्यन-रुशदु मिनल्ल-गय्यि फ-मय्यक्फु
बित्तागूति व युअमिम्-बिल्लाहि फ-कदिस्तमूस-क बिल्ल-
उरवतिल्ल-वुस्का लनफिसा-म लहा, वल्लाहु समीउन्,
अलीम ० अल्लाहु वलिय्युल्लजी-न आमनू युख्रिजुहुम्
मिनज्जुलुमाति इलन्नूरि, वल्लजी-न कफरु औलिया-
उहुमुत्तागूतु युख्रिजु-नहुम् मिनन्नूरि इलज्जुलुमाति, उलाइ-क
अस्हाबुन्नारि हुम् फीहा खालिदून ०

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاِنْ تُبَدُّوْا مَآفِیْ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تَخْفَوْهُ مَحٰسِبُهُمْ
 بِهٖ اَدَّبُ ۙ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اَمَنْ
 الرَّسُوْلُ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ ۚ وَالْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ اَمَنْ بِاللّٰهِ وَمَلٰئِكَتِهٖ
 وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ لَا نَفَرِقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِنْ رُّسُلِهٖ ۚ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ
 رَبَّنَا ۙ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يَكْفِيْكَ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا
 اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نُسِيتْنَا ۙ اَوْ اَخْطَاْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اَصْرًا
 كَمَا حَمَلْتَهُ عَلٰی الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۙ رَبَّنَا وَلَا تُحِثْ عَلَيْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۙ وَاَعْزُ عَنَّا
 وَاغْفِرْ لَنَا ۙ وَارْحَمْنَا ۙ اَنْتَ مَوْلَانَا ۙ فَانصُرْنَا عَلٰی الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ ۝

लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिलअर्जि व इन् तुब्दू
 मा फी अन्फुसिकुम् औ तुख्फुहु युहासिब्कुम् बिहिल्लाहु,
 फ-यगफिरु लिमय्यशा-उ व युअज्जिबु मय्यशा-उ, वल्लाहु
 अला कुल्लि शैइन् कदीर ० आमनरसूलु बिमा उज्जिल
 इल्लैहि मिरिब्बिहि वल मूअमिनून। कुल्लुन आमन बिल्लिहाहि
 व मलाइकतिहि व कुतुबिहि व रुसूलिह ला नुफरिक्कु बैन
 अहदिम्मी रुसूलिह। व कालू समअना व अतअना
 गुफरानक रब्बना व इलैकल मसीर ० ला युक्ल्लिफुल्लाहु
 नफसन इल्ला वुस्अहा। लहा माक्सबत व अलैहा
 मकतसबत। रब्बना ला तुअखिजना इन्न सीना व
 अख्ताना रब्बना व ला तहमिल अलैना इसन कमा
 हमल्लतहु अलल्लजीन मिन कब्लिना रब्बना व तुहम्मिलना
 मा ला ताकत लना बिह। व अफु अन्ना वगफिरलना
 वरहम्ना अन्त मौलाना फन्सुल्ला अलाल कौमिन काफिरीन ०

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ لَا إِلَهَ إِلَّا
هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِنْ تَشَاءُ وَتُعْزِزُ
مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ تُولِجُ اللَّيْلَ
فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ
الْحَيِّ وَتَسْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ إِنَّ رَبَّكُمْ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
فِي يَوْمٍ أَيْدٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ
حَثِيثًا وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۝ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ خَلَقَ وَالْأَمْرُ لِلَّهِ

शहिदल्लाहु अन्नुह ला इलाह इल्ला हुववलमलाइकतु व
उलूलइल्मि काइमम्बिलकिस्त, ला इला-ह इल्ला हुवल
अजीजुल हकीम ० कुलिल्लाहुम्म मालिकल मुल्कि
तुअतिल मुल्कि मन तशाउ व तन्जिउल मुल्कि मिम्मन
तशाउ व तुइज्जु मन तशाउ वतुजिल्लु मन्तशाअ,
बियदिकल खैर, इन्नक अला कुल्लि शैइन कदीर ०
तूलिजुल्लैल फिन्नहारि व तूलिजुन्नहार फिल्लैलि व तुख्रिजुल
हय्य मिनल् मय्यति व तुख्रिजुल् मय्यत मिनल् हय्य
व तरजुकु मन्तशाउ बिगैरि हिसाब ० इन्न रब्बकुमुल्लाहुल्लजी
खलकस्-समावाति वलअर्ज फी सित्ति अय्यामिन्
सुम्मस्-तवा अलल अर्शि युगशी-ल् लैलन्नहार यल्लुबुह
हसीसंब्बश्-शम्स वलकमर वन्नुजूम मुसख्खरातिम्-बिअग्निही
अला लहुल खल्कु वल् अम्न, तबारकल्लाहु

رَبُّ الْعَالَمِينَ ○ ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ○ وَلَا تُفْسِدُوا فِي
الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ○ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ○
قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوْ ادْعُوا الرَّحْمَنَ ○ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ○ وَلَا تَجْهَرُ
بِصَلَاتِكَ ○ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ○ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي
لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا ○ أَوَّلَ مَا يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ ○ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِّنَ الدُّلَى
وَكَبِيرَةٌ تَكْبِيرًا ○

रब्बुल आलमीन ○ उद्दु रब्बकुम तजरुअंव खुफियह,
इन्नहू ला युहिब्बुल मुअतदीन ○ वला तुफिसदू फिल्
अर्जि बअद इस्लाहिहा वदुहू खौफंव-व तमआ, इन्न
रहमतल्लाहि करीबुम्-मिनल् मुहिसनीन ○ कुलिदउल्ला-ह
अविदुर्जरहमा-न, अय्यम् मा तदु फ-लहुल्-अस्माउल्-हुस्ना
व ला तज्हर बि-सलाति-क व ला तुखफित् बिहा
वब्तगि बै-न जालि-क सबीला ○ व कुलिल्-हम्दु
लिल्लाहिल्लजी लम् यत्तखिज् व-लदंव-व लम् यकुल्-लहू
शरीकुन् फिल्मुल्कि व लम् यकुल्लाहू वलिय्युम्-मिनज्जुल्लि
व कब्बिरुहू तक्बीरा ○

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ۝ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ
الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ۝ وَمَن يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ
لَّهُ بِهِ فَإِنَّهَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ۝ وَقُلْ تَرِبْتُ
أَعْظَمَ وَأَرْحَمَ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝

अफहसिब्तुम अन्नमा खलक्नाकुम् अबसंव्वअन्नकुम् इलैना
ला तुरजउन् ० फतआल्ललाहुल मलिकुलहक्कु, ला
इलाह इल्लाहु, रब्बुलअर्शिल् करीम ० व मंय्यदउ मअल्लाहि
इलाहन् आखर ला बुरहान लहू बिही फइन्नमा हिसाबुहू
इन्द रब्बिही, इन्नहू लायुफलिहुल काफिरुन् ० व कुर्रिब्बिगफिर
वरहम् व अन्त खैरुर्राहिमीन ०

हिन्दी में पहली बार

अल-हिज्बुल आजम

इसी तराह हज की मुकम्मल और
बहतरीन मालुमात, तरीका व दुआए

हज का तरीका व दुआए

बहोत जल्द मंजुरे आम पर आ रहे है ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالصَّٰفَّٰتِ صَفًّا ۚ فَالزَّجْرٰتِ زَجْرًا ۚ فَالتَّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۚ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝
 رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝ اِنَّا ذَيْكَا السَّمٰوٰتِ
 الدُّنْيَا بِيْنِيْكَ ۙ اِلٰكٍ وَّاَكِيْبٌ ۙ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝ لَا يَسْتَمِعُوْنَ
 اِلَى الْمَلَا الْاَعْلٰى وَيُقَدَّرُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُخُوْرًا ۙ وَ لَهُمْ عَذَابٌ
 وَّاصِبٌ ۙ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاتَّبَعَهُ شَهَابٌ ثَاقِبٌ ۝ فَاسْتَفْتِمُوهُمْ
 اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مِّنْ خَلْقٍ اٰنَا خَلَقْنَاهُمْ ۙ اِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ۝

वस्सॉ-प्फाति सप्फन ० फज्जाजिराति जजून फत्तलियाति
 जिक्न इन्न इलाहकुम लवाहिद ० रब्बुस्समावाति वलअर्जि
 व मा बैनुहमा व रब्बुल मशारिकि ० इन्ना जय्यन्नस्समाअद्
 दुनया बिजीनति निलकवाकिब ० व हफ्जम्मिन् कुल्लि
 शैतानिम्मरिदि ० ला यस्सम्मउन्न इलल मलाइल
 अला व युक्जफून मिन कुल्लि जानिबिन ० दुहूरंव्व
 लहुम अजाबुव्वासिबु ० इल्ला मन खातिफल खात्फत
 फअत्बअहू शिहाबुन् साकिबु ० फस्तफतिहिम् अहुम्
 अशद्दु खालक्कन् अम्मन् खालक्ना, इन्ना खालक्नाहुम
 मिन तीनिल्लाजिबि ०

يَمْعَشَرُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِنْ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ
فَانْفُذُوا وَلَا تَنْفُذُوا إِلَّا بِسُلْطَانٍ ۝ فَيَأْتِي الْآيَاتُ بَيْنَكُمْ بَيْنَ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا
شَوْاطِطٌ مِّنْ نَّارِهِ وَنَحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرُونَ ۝ فَيَأْتِي الْآيَاتُ بَيْنَكُمْ بَيْنَ ۝ فَلَا الشَّقِيَّةَ السَّمَاءُ
فَكَانَتْ وَرَدَةً كَالذَّهَابِ ۝ فَيَأْتِي الْآيَاتُ بَيْنَكُمْ بَيْنَ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُشْلُ عَنْ
ذُنُوبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌ ۝ فَيَأْتِي الْآيَاتُ بَيْنَكُمْ بَيْنَ ۝ لَوْ أَنْزَلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى
جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَ

या मअ-शरल्-जिन्नि वल्इन्सि इनिस्त-तअतुम् अन् तन्फुज्
मिन अकतारी-ससमावाती वल अर्जी. फन्फुजु ला तनफुजुन
इल्ला बिसुल्तान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा
तुकज़िबान ० युर-सलु अलैकुमा शुवाजुम्- मिन्-नारिव-व
नुहासुन् फला तन्तसिरान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा
तुकज़िबान ० फ-इजन् शक्कतिससमा-उ फ-कानत्
वर-दतन् कद्विहान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा
तुकज़िबान ० फयौमइजिल्-ला युसअलु अन् जम्बिही
इन्सुंव-व ला जान् ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा
तुकज़िबान ० लौ अन्जल्ना हाजल कुरआन अला
जबलिल्लऐतहू ख़ाशिअम्मुतसदिअम्मिन ख़ाशियतिल्लाहि,
व तिल्कल अम्सालु नज़ि बुहा लिन्नासि लअल्लहुम
यतफक्कसन् ० हुवल्लाहुल्लजी ला इला-ह इल्ला हु-व
आलिमुल्-गैबि

الشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقَدُّوسُ
 السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝
 هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ
 وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

वशहा-दति हुवर-रहमानुरहीम ० हुवल्लाहुल्लजी ला
 इला-ह इल्ला हु-व अल्मलिकुल-कुदुसुस्-सलामुल्-
 मुअमिनुल्-मुहैमिनुल्-अजीजुल्- -जब्बारुल्-मु-तकब्बिरु,
 सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्चिकून ० हुवल्लाहुल् खालिकुल्
 बारिउल् मुसब्बिरु लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना, युसब्बिहु लहु
 मा फिस्समावाति वल्अर्जि व हुवल् अजीजुल्-हकीम ०

मोमिन पंचसुरा

जिस में सिर्फ आप स. से साबित दरुद व वजाईफ है.

☆ अल्लाह तआला के नाम व ख्यास

☆ कुरआन शरीफ की फजीलत व ख्यास

☆ दरुद शरीफ की फजीलत व ख्यास

☆ तौबा व अस्तगफार की फजीलत

☆ दुआ व अजकार की फजीलत

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ۖ يَهْدِي إِلَى
الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَمْ نُفْرِكْ لِرَبِّنَا أَحَدًا ۖ وَأَنَّهُ تَعَلَّى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا
وَلَدًا ۖ وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۖ

कुल ऊहिय इलय्य अन्नहुस्तमअ नफरुम मिनलू जिन्नि
फकालू इन्ना समिअना कुरआना अजबां ० यहदी
इलरुशद फआमन्ना बिही, वलन्नुश्रिक बिरब्बिना अहदा
० व अन्नहु तआला जहुरब्बना मततखज साहिबतंव्वला
वलदंव ० व अन्नहु कान यकूलु सफीहुना अलल्लहि
शतता ०

हिन्दी में पहली बार

अल-हिज्बुल

आज्म

मंजरे आम पर आ चुकी है ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ۖ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۖ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُوا مَا
أَعْبُدُ ۖ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ ۖ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُوا مَا أَعْبُدُ ۚ لَكُمْ
دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۝

कुल या अय्यूहल काफ़ीरुन ○ ला आअबुदू मा
ताअबुदून ○ वला अन्तुम आबिदूना मा आअबुदू ○
वला अना आबीदुम-मा अबत्तुम ○ वला अन्तुम
आबिदुन मा आअबुद ○ लकुम दीनुकुम वलियदीन ○

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۖ اللَّهُ الصَّمَدُ ۖ لَمْ يَلِدْهُ وَلَمْ يُولَدْ ۖ
وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

कुल हुवल्लाहु अहद ○ अल्लाहुस्समद ○ लम यलिद
व लम यूलद ○ व लम यकुल्लहू कुफुवन अहद ○

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝

कुल आअूजु बिरब्बिल फलक ० मिन शरि मा खलक ० व मिन शरि गासिकिन इजा वकब ० व मिन शरिन्नफ्फासाति फिल अुकद ० व मिन शरि हासिदिन इजा हसद ०

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلَهِ النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

कुल अअूजु बिरब्बिन्नासि ० मलिकिन्नासि ० इलाहीन्नासि ० मिन शरिल वस्वासिल खन्नासि ० अललजी युवस्विसु फी सुदूरिन्नास ० मिनल जिन्नति वन्नास ०

हादसात से बचने का वजीफा

हज़रत तलक रहमतुल्लाह अलै. फर्माते हैं के एक शख्स हज़रत अबुदरदा सहाबी रज़ि. की खिदमत में हाज़िर हुआ और अरज़ किया के आप का मकान जल गया. फर्माया : नहीं जला. फिर दुसरे शख्स ने यही इत्तेला दि तो फर्माया : नहीं जला. फिर तीसरे शख्स ने यही खबर दी, आप ने फर्माया : नहीं जला. फिर एक शख्स ने आकर कहा के ऐ अबुदरदा रज़ि. ! आग के सरारे बहुत बुलंद हुए मगर जब आप के मकान तक आग पहुंची तो बुझ गई । फर्माया मुझे मालूम था के अल्लाह तआला ऐसा नहीं करेगा (के मेरा मकान जल जाए) क्योंकि मैं ने रसुल अल्लाह स. से सुना है के जो शख्स सुबह वो वक्त ये कलमात पढ़ ले शाम तक इस को कोई मुसीबत नहीं पड़ेंगेगी. (मैं ने सुबह ये कलमात पढ़े थे इस लिए मुझे यकीन था के मेरा मकान नहीं जल सकता) वो कलमात ये हैं :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيِّ مَا شَاءَ اللهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ وَلَا حَوْلٌ وَلَا قُوَّةٌ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَاَنَّ اللّٰهَ قَدَّ احَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ اَنْتَ اَخِذُ بِهَا صِيَتَهَا اِنْ رَّبِّيْ عَلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ

अल्लाहुम्मा अनता रब्बी ला इलाहा इल्ला अनता
अलैका तवक्कलतु व अनत रब्बुल अरशील करीम

माशाअल्लाहु कान वमा लम यशालम यकुंवला हौला
 वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयीलअजीम आलमु
 अन्नल्लाहा अला कुल्ली शैईन कदीरुव्वअन्नल्लाहा कद
 अहात बिकुल्ली शैईन इलमा ० अल्लाहुम्मा इन्नी
 आउजूबिका मिन शररी नफसी व मिन शररी कुल्ली
 दाब्बतीन अनता आखीजुम बिना सियतीहा इन्न रब्बी
 अला सिरातीम्मुसतकीम ०

मंजीयात

अल्लामा इब्ने सैर बिर रहमतुल्लाह अलै. के ज़रिए से तजरुबे
 के साथ मुसीबत व गम को दूर करने वाली ये सात आयतें जो
 मंजीयात के नाम से मारुफ हैं वो ये हैं :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ०

○ قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ
 कुल्लैय्युंसीबना इल्ला मा कतबल्लाहु लना हुव मौलाना
 व अलल्लाहि फलयतवक्कलीलमुअमीनून ०

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ०

○ وَإِنْ يَسْسِسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ
 يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

व इय्यमससकल्लाहु बिजुररीन फला काशिफ लहू इल्ला
 हुव व इय्युरिदका बिखैरीन फला राददा लिफजलीह
 यूसीबु बिही मय्यशाउ मिन इबादिहि. वहुवलगाफुरुरहीम ०

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا
كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ

वमा मिन दाबबती फिल अरजी इल्ला अलल्लाहि
रिजकुहा वयाअलमु मुसतकररहा व मुसतौवदअहा कुल्लुन
फि किताबीम्मुबीन ०

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبَّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلَى
صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ

इन्नी तावकल्लु अललल्लाहि रब्बी व रब्बीकुम् मा मिन
दाब्बतिन इल्ला हुव आखिजुम बिना सियातोहा इन्न
रब्बी अल्ला सिरातिम्मुस्तकीम ०

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَكَايْنٍ مِّنْ دَابَّةٍ لَا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ
वकअय्यीममिन दाब्बतीनलला ताहमिलु रिजकहा अलल्लाहु
यरजुकुहा व इय्याकुम वहुवस्समीउलअलीम ०

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مَا يَفْتَحُ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا وَمَا يُمْسِكُ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

मा यफतहिल्लाहु लिन्नासि मिररहमतीन फला मुमसिक
लहा वमा युमसिक फला मुरसिल लहु मिम बादिहि
वहुवल अजीजुलहकीम ०

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَلَكِنَّ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ الْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّيهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتُ رَحْمَتِهِ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ

वलइन सअलतहुम्मन खलकस्समावाती वल अरजा लयकुलुन्नलल्लाहु कुल अफरअैतुम्मा तदउन मिन दुनिल्लाहि इन अरादनीयल्लाहु बिजुरीन हल हुन्ना काशीफातू जुरीहि अवअरादनी बिराहमतीन हल हुन्न मुमसिकातु रहमतीही कुल हसबीयल्लाहु अलैहि यतवक्कलुलमुतवक्कीलून ०

दुआए मांगने की फजीलत

हदीस शरीफ में आया है के रसूल अल्लाह स. ने इर्शाद फर्माया के अल्लाह तआला के यहां दुआ से ज्यादा और किसी चीज़ की वकअत नहीं.

एक और हदीस शरीफ में आया है के आहज़रत स. ने इर्शाद फर्माया : जो शख्स ये चाहे के अल्लाह इस की दुआ सख्तीयों और मुसीबतों के वक्त कुबुल फर्माए, इस को चाहिए के वो फराखी और खुश हाली में भी कसरत से दुआ मांगा करे.

एक और हदीस में आया है के रसुले अकरम स. ने इर्शाद फर्माया के दुआ मोमिन का हथीयार है, दीन का सुतुन है और आसमान व ज़मीन का नुर है. अगर दुशमन मुसलमानों का मुहासेरा करलें तो ये दुआ पढे :

اللَّهُمَّ اسْتَرْعُورَاتِنَا وَأَمِنْ رَوْعَاتِنَا.

अल्लाहुम्मसतुर अव रातिना वआमिरखआतिना

“ ऐ अल्लाह ! तु हमारी कमजोरीयों को छुपा ले और हमारे डर और खौफ को अमन व अमान दे दे.”

जब भी किसी मुसीबत व बला या खौफनाक अमर के पेश आने का अंदेशा हो या किसी बहोत बड़ी मुसीबत में गिरफतार हो जाए तो कसरत से इस का विरद रखे :

حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا.

हसबुनल्लाहु वनिअमलवकीलु अलल्लाहि तवक्कलना०

“ काफी है हमारे लिए अल्लाह , और वो बहोत हि अच्छा कारसाज है. अल्लाह ही पर हम ने भरोसा किया है.”

मोमिन पंचसुरा

जिस में सिर्फ आप स. से साबित दरुद व वजाईफ है.

☆ अल्लाह तआला के नाम व ख्यास

☆ कुरआन शरीफ की फजीलत व ख्यास

☆ दरुद शरीफ की फजीलत व ख्यास

☆ तौबा व अस्तगफार की फजीलत

☆ दुआ व अजकार की फजीलत

मस्नून व मकबूल दुआएं

① سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الْعَظِيمَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ

१. सुब्हानल्लहि व बिहमिद्ही सुब्हानल्लहिल अजीम, अस्तफिरुल्लाहल अजीम व अतूबु इलैह ०

जो शख्स इन चार कल्मात को पढेगा तो कल्मात जैसे उस ने पढे (जूं के तूं) लिख दिए जाएंगे। फिर अर्श के साथ लटका दिए जाएंगे, कोई भी गुनाह जो वो करेगा इन कल्मात को नहीं मिटा सकेंगे। यहां तक के जब वो शख्स कयामत के दिन अल्लाह से मिलेगा तो इन कल्मात को जूं का तूं सरबमुहर पाएगा। (हसन हुसैन)

② جَزَى اللَّهُ عَنَّا مُحَمَّدًا أَمَا هُوَ أَهْلُهُ

२. जजल्लाहु अन्ना मुहम्मदम मा हुव अहलुहु,

ये दुआ सरकारे दो आलम स. के लिए है। जो इस को एक बार पढेगा उस के लिए सत्तर हजार फरिश्ते एक साल तक नेकियां लिखते रहते हैं।

③ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

३. जो शख्स लाहौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह, पढा करे उस के लिए ९९ बीमारीयों की दवा है जिस में सबसे हल्की बीमारी फिक्र व परेशानी है।

⑤ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَاَنْزِلْهُ الْقَعْدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ

४. अल्लहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन्व अन्जिल्हुल मक्अयल मुकर्रब इन्दक यौमल कियामह,

हज़रत रुवैफअ रज़ि. हुज़ूर अकसद स. का ये इशादि नकल करते हैं के जो शख्स ये दुरुद पढे उस के लिए मेरी शिफाअत वाजिब है। (फज़ाइले आमाल)

⑥ رَزَا ۲۴ رَّبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ

५. रोज़ाना २७ बार रब्बीगफिरली वलीवालदिय्य व लिलमुअमीनीन वलमुमीनाति यौम यकुमुलहिसाब ०

① اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِيْ فِي الْمَوْتِ وَفِي مَا بَعْدَ الْمَوْتِ

६. शहादत हासिल करने का तरीका : अल्लाहुम्मा बारिक ली फिल् मौति व फि मा बअदल मौत

जो शख्स दिन में २५ बार मौत को याद करेगा वो अल्लाह पाक के हुक्म से शहादत की मौत से सुखरू होगा।

७. मर्जुल मौत की दुआ : जो शख्स इस दुआ को मर्जुल मौत में चालीस बार पढेगा उस को शहादत का सवाब मिलेगा।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

ला इलाह इलल्लाहु वल्लाहु अक्बरु व ला हो-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अजीम

बीमारी में इस दुआ का विर्द किया जाए मुमकिन है वही मर्जुल मौत हो।

① سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ

८. सुब्हानल्लाहि व बिहमिद्ही सुब्हानल्लाहिल अजीम,
ये दो कलमात ज़बान पर हलके और वज़न में भारी है और
अल्लाह को बहोत पसंद है । (हुसने हसीन)

② سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ

९. सुब्हानल्लाहि व बिहमिद्ही

हुजुर स. ने फर्माया जो शख्स एक मर्तबा ला इलाह इलल्लाहु
कहे इस के लिए जन्नत वाजिब होंगी और जो शख्स सुब्हानल्लाहि
व बिहमिद्ही सौ १०० मर्तबा पढ़ेगा इस के लिए १ लाख २४
हज़ार नेकीयां लिखी जाएगी। अल्लाह तआला के नज़दीक ये
कलमा पहाड के बकदर सोना खर्च करने से भी ज़्यादा महबूब
है। (फज़ाईले आमाल)

③ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ أَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ
يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ

१०. ला इलाह इलल्लाहु वहदहू लाशरीक लहू अहदन
समदल्लम यलिद् वलम् यूलद् वलम् यकुल्लहू कुफुवन
अहद ० एक मर्तबा पढ़ने वाले के लिए बीस २० नेकियां
लिखी जाती हैं।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاحِدٌ أَحَدٌ صَمَدٌ لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ

११. ला इलाह इलल्लाहु वहिदं अहदन समदल्लम
यत्तखिज् साहिबतं व्वला वलदा ० वलम् यकुल्लहु कुफुवन
अहद ० दस मर्तबा पढ़ने से चालीस हजार नेकियां उस के
लिए लिखी जाती हैं।

हज़रत माअकुल बिन यसार रहमतुल्लाह अलै. का
बयान है के रसुल अल्लाह स. ने इर्शाद फर्माया जिस का
मफहम है के जो शख्स सुबह को तीन मर्तबा

⑩ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

१२. आउजुबिल्लाहि स्समिइल अलीमी मिनशशैतानिररजीम
० पढ़ कर सुरेह हशर की तीन आखरी आयात पढ़े.

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقَدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

हुवल्लाहुल्लजी ला इला-ह इल्ला हु-व आलिमुल्-गैबि
वशशहा-दति हुवर-रहमानुरहीम ० हुवल्लाहुल्लजी ला
इला-ह इल्ला हु-व अल्मलिकुल-कुहुसुस्-सलामुल्-
मुअमिनुल्-मुहैमिनुल्-अजीजुल्-जब्बारुल्-मु-तकब्बिरुल्-
सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्चिकून् ० हुवल्लाहुल् खालिकुल्
बारिउल् मुसव्विरु लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना, युसब्बिहु लहु
मा फिस्समावाति वल्अर्जि व हुवल् अजीजुल्-हकीम ०

तो इस के लिए खुदावंदे तआला ७० हजार फरीशते मुकरर फर्मादिगा जो शाम तक इस पर रहमत भेजते रहेंगे और अगर इस दिन मर जाएगा तो शहीद मरेगा और जो शख्स शाम को ये अमल करे तो इस के लिए अल्लाह तआला ७० हजार फरीशते मुकरर करेगा जो इस पर सुबह तक रहमत भेजते रहेंगे। और अगर इसी रात मर जाएगा तो शहीद मरेगा. (तिर्मीजी)

१३. रसूल अल्लाह स. ने हज़रत जुवेरिया रज़ि को (जो फजर की नमाज़ से चाशत के वक्त तक मुसल्ले पर तस्बीहात में मशगूल थीं) फरमाया मैं ने तुझ से जुदा होने के बाद चार कल्मे पढ़े हैं, अगर उन को उन सब के मुकाबले में तोला जाए जो तुम ने सुबह से पढ़ा है तो वो ग़ालिब हो जाएं। वो कल्मे ये हैं।

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ عَدَدُ خَلْقِهِ وَرِضَا نَفْسِهِ وَزِنَةُ عَرْشِهِ وَمِدَادُ كَلِمَاتِهِ

१३. सुब्हानल्लाहि व बिहमिदी अदद खल्किही व रिज़ा नफिसही व जिनत अर्शिही व मिदाद कलिमातिही.

१४. जुमा के दिन के मखसूस आमाल व औराद सूर कहफ जो कोई जुमा के दिन पढ़ेगा दूसरे जुमा तक उसके गुनाहों का कफ़ारा हो जाएगा और उसके लिए नूर चमकेगा। इसी तरह अलबाकी जो कोई जुमा के दिन सौ बार पढ़े तो उसके तमाम नेक आमाल मकबूल हो जाएंगे। जुमा की नमाज़ के बाद सौ मर्तबा पढ़े : यागफ़ारु इग़फीरली जुनूबी तो हक तआला उसकी मग़फ़िरत फरमा देंगे। जुमा के रोज़ बाद नमाज़े असर अपनी जगह से हटने से पहले अस्सी बार ये दुरूद पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْاَمِيِّ وَعَلَى اٰلِهِ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا

अल्लाहुम्मा सल्लिअला मुहम्मदिन्बीय्हील उम्मिय्ही व
अला आलिही व सल्लिम तस्लीमा

तो अल्लाह तआला उस के अस्सी साल के गुनाह मआफ
फरमादेगें। जुमा की शब को चालीस बार चौथा कल्मा पढेगा तो
हज का सवाब पाएगा।

१५. दोज़ख की आग से निजात

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِي مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्मा अजिरनी मिननार

अगर ये दुआ सुबह फजर और मगरिब की नमाज़ के बाद सात
मर्तबा पढी जाए तो अल्लाह तआला दोज़ख की आग से
महफूज़ रखेंगे।

१६. अल्लामा औनी रहमतुल्लाह अलै ने शरह बुखारी में एक
हदीस नक्ल की है के जो शख्स एक मर्तबा ये दुआ पढे और
इस के बाद ये दुआ करे या अल्लाह ! इस का सवाब मेरे
वालिदैन को पहुँचादे तो इस ने वालिदैन का हक अदा कर
दिया. दुआ ये है :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَلَهُ الْكِبْرِيَا
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيْمُ لِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ وَلَهُ الْعِظَمَةُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيْمُ هُوَ الْمَلِكُ
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ وَلَهُ الْتَوَكُّلُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيْمُ

१७. जामेअ दुआ

हजरत अबू उमामा रज़ि ने हुजुरे अक़दस स. से अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह स. दुवाएं तो आप ने बहुत सी बता दी हैं और सारी याद नहीं रहतीं, कोई ऐसी मुख़्तसर दुआ बता दिजिए जो सब दुवाओं को शामिल हो जाए। इस पर हुजुर स. ने ये दुआ तालीम फरमाई :

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلْنَاكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاءُ وَلَا اَحْوَالَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ (ترمذی)

अल्लाहुम्मा इन्ना नसअलुक मिन खैरि मा सअलक मिन्हु नबीय्यु-क मुहम्मदुन सलल्लहु अलैहि व सल्लम व नउजु बिक मिन शरिमस्तआजक मिन्हु नबीय्युक मुहम्मदुन सलल्लहु अलैहि व सल्लम व अन्तल मुस्तआन व इलैकल बलागु व ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह (तिर्मिज़ि शरीफ)

सुबह व शाम के वज़ाएफ़
तीसरे कलमे की तस्बीह

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا اَحْوَالَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

सुब्हानल्लाहि वल हम्दुनिल्लाहि वला इला-ह इलल्लाहु वल्लाहु अकबरु व ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लहिल अलिय्यील अजीम,

दुरुद शरीफ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ
 अल्लहुम्मा सल्लि अला सय्यिदिना मौलाना मुहम्मदिव्व
 बारिक व सल्लिम,

(दुरुदे इब्राहीमी पढ़े तो ज्यादा बहतर है।)

अस्तगफार

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِي لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَاتُوبُ اِلَيْهِ
 अस्तगफीरुल्लाहल्लजी ला इलाहा इल्ला हुवल हय्युल
 कय्युम व अतूबु इलैह.

सूरे इन्आम की फजीलत

जो शख्स सूरे इन्आम की शुरु की तीन आयतें (मातक्सिबून)
 तक पढ़ेगा

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
 بِرَبِّهِمْ يَعْزِبُوْنَ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى اَجَلًا وَّاجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ
 لَكُمْ اَنْتُمْ تَعْتَرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَوَجْهَكُمْ
 وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ۝

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी खलकस्समावाति वल अर्ज व
 जअलज्जुलुमाति वन्नूर, सुम्मल्लजीन कफरु बिरब्बिहिम
 यअदिलून ० हुवल्लजी खलककुम्मिन् तीनिन सुम्म कजा
 अजला, व अजलुम्मुसम्मन इंदहु सुम्म अंतुम तम्तरून ०

व हुवल्लाहु फिस्समावाति व फिल अर्ज, यअलमु
सिरकुम वजहरकुम वयअलमु मा तक्सिबून ०

इस के लिए चालीस फरिश्ते मुकरर किए जाएंगे, वो चालीस ४० फरिश्ते कयामत तक इबादत करेंगे, सारा सवाब पढ़ने वाले के नामे आमाल में लिखा जाएगा। और एक फरिश्ता आस्मान से लोहे का गरज लेकर नाज़िल होता है, जब पढ़ने वाले के दिल में शैतान वस्वसे डालता है तो वो फरिश्ता गरज से उसकी खबर लेता है। सत्तर पर्दे बीच में हाइल हो जाते हैं। कयामत के दिन अल्लाह रब्बुल आलमीन फरमाएंगे तु मेरे जेरे साया चल, जन्नत के फल खा, हौजे कौसर का पानी पी। सलसबील की नहर में नहा। तू मेरा बंदा मैं तेरा रब (हवाला कमालीन शरह जलालीन शरीफ)

जुमा के रोज़ कसरते दुरूद शरीफ

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि की हदीस में ये नकल किया गया है के जो शख्स जुमा के दिन असर की नमाज़ के बाद अपनी जगह से उठने से पहले अस्सी मर्तबा

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَعَلَى آلِهِ وَسَلِّمْ تَسْلِيمًا

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन्नीबीय्हील उम्मिय्ही
व अला आलिही व सल्लिम् तस्लीमा ०

पढ़ें तो उसके अस्सी साल के गुनाह मआफ और अस्सी साल की इबादत का सवाब उसके लिए लिखा जाएगा।

वाल्देन के हक में दुआ

رَبِّ اَرْحَمُهُمَا كَمَا رَبَّيْتَنِي صَغِيرًا

रब्बि रहम्हुमा कमा रब्बयानी सगीरा ०

एक मुफीद तरीन दुआ

जो आदमी हर नमाज़ के बाद इस को पाबंदी के साथ पढ़े खुसुसन जुमा की नमाज़ के बाद तो अल्लाह तआला हर खौफ की चिज़ से इस की हिफाज़त करेगा और इस के दुशमनो पर इस की मदद करेगा और इस को गनी करदेगा और इस को ऐसी जगह से रिज़्क पहुंचाएगा जहां इस का ख्याल भी ना जाए और इस की जिंदगी इस पर आसान कर देगा और इस का कर्ज़ा अदा कर देगा अगरचे पहाड के जितना कर्ज़ा हो अल्लाह तआला अपने फज़ल व करम से इस को पुरा करेगा.

يَا اَللّٰهُ يَا اَحَدُ يَا وَاحِدُ يَا مُجَوِّدُ يَا جَوَادُ يَا بَاسِطُ يَا كَرِيْمُ يَا وَهَّابُ يَا ذَا الطَّوْلِ يَا غَنِيُّ يَا مُغْنِيُّ يَا فَتَّاحُ يَا رَزَّاقُ يَا عَلِيْمُ يَا حَكِيْمُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ يَا بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ اِنْفَخْنِيْ مِنْكَ بِنَفْحَةٍ خَيْرٍ تُغْنِيْنِيْ بِهَا عَنْ سَوَالِكَ اِنْ تَسْتَفِيْحُوْا فَقَدْ جَاءَكُمْ الْفَتْحُ اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا نُّصَرِّفُ مِنْ اِلٰهِهِ وَقَتَحْ قَرِيْبُ اَللّٰهُمَّ يَا غَنِيُّ يَا حَسِيْدُ يَا مُبْدِيُّ يَا مُعِجِدُ يَا وَدُوْدُ يَا ذَا الْعَرْشِ الْمَجِيْدِ يَا فَعَّالًا لَا يُلْبِیْ دُعَا الْاِقْفٰی بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَنْ سَوَالِكَ وَاحْفَظْنِيْ بِهَا حِفْظًا بِهِ الذِّكْرُ وَانْصُرْنِيْ بِهَا نَصْرًا بِهِ الرُّسُلُ اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

या अल्लाह या अहदु या वाहिदु या मौजुदु या जब्बादु

या बासितु या करीमु या वहहाबु या जत्तौली या
गनीय्यु या मुगनी या फत्ताहु या रज़्ज़ाकु या अलीमु या
हकीमु या हय्यु या कय्युमु या रहमानु या रहीमु या
बदीअस्समावाती वलअरज़ी या जलजलालि वलइकरामी
या हन्नानु या मन्नानु इनफाहनी मिनका बिनफहती
खैरीन तुगनीनी बिहा अम्मन सिवाक इन तसतफतीहु
फकद जाअकुमुल फतहु इन्ना फताहना लका
फतहम्मुबीनन्नसरुमीनल्लाहि व फतहु करीब अल्लाहुम्मा
या गनीय्यु या हमीदु या मुबदीउ या मुईदु या वदुदु या
जलअरशीलमजीदी याफाअल्ललीमा युरीद इकफिनी
बिहलालिक अन हरामिक व अगनीनी बिफजलिका
अम्मन सिवाक वहफजनी बिमा हफिजत बिहिज्जीकरा
वनसुरनी बिमा नसरता बिहिरुसुल इन्नका अला कुल्ली
शैईन कदीर.

किसी बड़ी मुसीबत के पेश आने पर

إِنَّا لِلّٰهِ وَأِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

अव्वल इन्न लिल्लाहि व इन्नाइलैहि राजीउन पढे फिर इस
दुआ को पढे

اللّٰهُمَّ اجْرِنِي فِي مَصِيبَتِي وَاحْلُفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا

अल्लाहुम्मा अजीस्नी फि मुसीबती वखलुफ ली खैरम्मिनहा.

आयाते शिफा

कुरआन मजीद की मंदरजा जैल आयात को आयाते शिफा कहा जाता है. ये आयात हुसुले शिफा के लिए बहोत मुफीद है बशर्तयेके इन आयात को बारगाहे रब्बुलइज्जत में खुलुस से पढ़ा जाए. अगर कोई मरीज हो तो इन आयात को २१ मर्तबा पढ़ कर पानी पर दम कर के पिलाया जाए और ये अमल गयाराह यौम तक किया जाए. शुरु में बिस्मील्लाह शरीफ और तीन बार सुरेह फातेहा पढ़ी जाए, अगर ये ना किया जा सके तो फिर इन आयात को बिस्मील्लाह और सुरेह फातेहा के साथ चीनी की रिकाबी पर लिख कर पानी से धोकर मरीज को पिलाए इन्शाअल्लाह बहोत जल्द सहत याबी हासील होगी.

وَيَشْفِي صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ۖ وَيَذْهَبُ غَيْظَ قُلُوبِهِمُ ۚ (القرآن १०)

वयशफिसुदुर कौमिमुअमीनीन व युजहिब गैजा कुलुबिहिम.

(अलकुरआन ९/१६)

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَ تَكْمُلُ مَوْعِظَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ (القرآن १०)

لِّلْمُؤْمِنِينَ (القرآن १०)

या अय्युहन्नासु कद जाअतकुम मौइजतुममिररब्बिकुम व शिफाउल्लीमा फि सुदुरि वहुदव्वराहमतुललिलमुअमीनीन

(अलकुरआन १०/५७)

يَخْرُجُ مِنْ بَطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلَفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ ۚ (القرآن १०)

यख्रुजु मिमबुतुनिहा शराबुम्मखतलिफुन अलवानुह फिही शिफाउल्लीन्नासि. (अलकुरआन १६/६९)

وَنَزَّلَ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ۝
वनुनज़्ज़ीलु मिनलकुरआनि मा हुव शिफाउव्वराहमतुल
लिलमुअमीनीन वल्ला यज़ीदुज़्ज़ालीमीन इल्ला खसारन
(१७/८२)

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ۝ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ۝ وَإِذَا امْرَأَتِي هُوَ يَشْفِينِ ۝
अल्लजी ख़लकनी फहुव याहदीन० वल्लजी हुव युतइमुनी
वयुसकीन ० वइजा मुरीजतु फहुव यशफीन० (२६/७८-८०)
قُلْ هُوَ الَّذِي آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۝

कुल हुव लिल्लजीना आमनु हुदव्वशिफाउ (४१-४२)

इस्तेकामत और तलबे रहमत की दुआ

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ (الْقُرْآن २/२५०)
रब्बना अफरिग अलैना सबरंव्वसब्बित अकदा मना वनसुरना
अल्लकौमिलकाफिरीन. (अलकुरआन २/२५०)

“ऐ हमारे परवरदीगार ! हमारे दिलों में सब्र डाल
दे और हमारे कदम जमाए रख और इन काफिरों के मुकाबले
में हमारी मदद फर्मा.”

चंद खास कुरआनी दुआएं

कबुले इबादत व हसुले इमान व तलबे हिदायत की दुआ

ये दुआ हज़रत इब्राहिम व हज़रत इस्माईल अलै

की है जो के बैतुल्लाह शरीफ के बनाते वक्त बिलहामे खुदावंदी की थी :

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ (अलकुरआन २/१२७/१२८)

रब्बना तकब्बल मिन्ना० इन्नका अंतस्समीउल अलीम०
रब्बना वजअलना मुसलिमयनी लका व मिन जुरीयतीना
उम्मतम्मसलिमतल्लका व अरिना मना सिकना व तुब
अलैना इन्नका अंतत्तव्वाबुरहीम० (अलकुरआन २/१२७/१२८)

तर्जुमा : “ऐ हमारे प्रवरदीगार ! तू हम से कबुल

फर्मा, तु हि सुनने जानने वाला है. ऐ हमारे परवरदीगार ! और हम को बनाले अपना फर्माबरदार और हमारी अवलाद में से भी एक जमात अपनी फर्माबरदार बना और दिखा हम को हमारी इबादत के तरीके और हम पर तवज्जो फर्मा बेशक तु हि तवज्जो फर्माने वाला बड़ा महरबान है.”

दुनिया व आखिरत की भलाई की दुआ

इस दुआ में दोनों जहां की भलाई तलब की गई है। रसूल अल्लाह स. इस को अकसर पढ़ा करते थे :

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (الْبَقَرَةُ २०१)

रब्बना आतिना फिदुनिया हसनतव्वफिल आखिरती
हसनतुव्वकिना अजाबन्नार (अलकुरआन २/२०१)

“ऐ हमारे परवरदीगार ! हमें दुनिया में भी नेकी अता फर्मा और आखिरत में भी नेकी अता फर्मा और दोज़ख के अज़ाब से बचा.”

तौबा व अस्तगफार

गुनाहो से अगर बाज़ आएँ और करें तौबा
अभी सब दूर हों जितनी बलाएं आसमानी है

कुरआन मजीद में तौबा व अस्तगफार की बार
बार ताकीद फर्माई गई है, एक मुकाम पर इशार्द है :

وَأَنِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يَتَّبِعْكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَيُؤْتِ كُلَّ
ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ ۖ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيرٍ ۝

व अन्निस्तगफिरु रब्बकुम सुम्म तूबू इलैहि
युमत्तीअकुम्मताअन हसनन इला अजलीम्मसम्मव्वयुति
कुल्ल जि फज़्लीन फज़लहु व इन तवल्लौ फइन्नी
अखाफु अलैकुम अज़ाब यौमिन कबीर ०

इस इशार्दि रब्बानी से मालूम होता है के तौबा व
अस्तगफार के ज़रीए अल्लाह तआला की नेअमतें हासिल होती

है और मसाईब व मुशकीलात से निजात मिलती है और रिज़क में इज़ाफा होता है।

अंबिया किराम अलैहिमस्सलाम ने हर दौर में उम्मत को अस्तगफार और तौबा की तलकीन फर्माई है। चुनांचे हज़रत नुह अलै. ने अपनी कौम को इस तरह तरगीब फर्माई:

اَسْتَغْفِرُكُمْ اِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُرْسِلُ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۝ وَيُمْدِدْكُمْ بِامْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنَّتٍ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهَارًا (ن. ११, १२, १३)

इस्तगफिरु रब्बकुम इन्हु कान गफ्फारय्युरसिलिस्समाअ अलैकुम मिदरारा ० व युमदिदकुम बिअमवालिंव्वबनीन वयजअल्लकुम जन्नातिव्वयजअल्लकुम अनहारा०

(नुह, पारा २९ आयत १० ता १२)

وَيَقُومُ اَسْتَغْفِرُكُمْ اِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُرْسِلُ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلَىٰ قُوَّتِكُمْ (ن. १३, १४)

व याकौमिस्तगफिरु रब्बकुम सुम्म तूबू इलैहि युरसीलिस्समाअ अलैकुममिदरारव्वयजीदकुम कुव्वतन इला कुव्वतिकुम ०

(हुद, पारा १२, आयात ५२)

इस आयाते मुबारका में गौर तलब बात ये है के अस्तगफार व तौबा दोनों का हुक्म हुआ है। दरअसल अस्तगफार के मानी है : अपने पिछले गुनाहों की बख्शीश और मगफिरत अल्लाह तआला से तलब की जाए और तौबा का मतलब ये है के इन्सान अपने गुनाहों पर शर्मिंदा हो और आइंदा गुनाहों से बाज़ आने का मुसम्मम अज़म यानी पुख्ता इरादा करें।

अहादीस मुबारका में भी तौबा व अस्तगफार की बड़ी ताकीद फर्माई गई है. चुनांचे एक हदीस शरीफ में सरवरे काएनात फख्रे मौजुदात सय्यदना हज़रत मोहम्मद मुसतफा स. का इशादि गिरामी है :

ऐ लोगो ! तौबा करो. "मैं भी दिन में सौ १०० मर्तबा तौबा करता हूं." (मिशकात)

मकामे हैरत है के रसुल अकरम स. जो के सरापा मासूम और गुनाहो से पाक है, रोज़ाना सौ १०० मर्तबा अस्तगफार पढ़ते हैं और हम जो सरापा खता हैं, दिन में एक बार भी तौबा व अस्तगफार ना पढ़ें.

एक और हदीस पाक में इशादि रसुल अल्लाह स. है के जो आदमी बाकाएदगी के साथ बिलानागा अस्तगफार करता है अल्लाह तआला इस के लिए हर तंबी और निजात के रास्ते निकाल देते हैं, रंज व फिक्र से निजात फर्माते हैं और बेगुमान रिज़्क नसीब फर्माते हैं. (मुसनदे अहमद, अबुदाउद, इब्ने माजा)

हज़रत महबुब सुब्हानी कुतुबे रब्बानी शेख अब्दुलकादर जिलानी रहमतुल्लाह अलैह अपनी किताब "फतुहुगैब" में फर्माते हैं :

"जैसा के अहादीस में मज़कुरा है के हुजुर अकरम स. बकसरत अस्तगफार फर्माते, इस लिए के अस्तगफार तज़कीया रुह और जलाए क़लब का बाअस है और हर मोमिन के लिए मुफीद है. तौबा व अस्तगफार हर हाल में अबद (बंदा) की दो लाज़मी सिफात है और ये दोनो सिफात हज़रत आदम अलै. की मुकद्दस मिरास है और यही खुदा के सच्चे आशिको

और दोस्तों की सुन्नत है जो निजात की ज़ामिन है."

हज़रत आदम अलै. से भी जब गलती और ख़ता सरज़द हुई थी तो वो ख़ता तौबा व अस्तगफार के ज़रीए ही माफ़ करदी गई थी. कुरआन मजीद में हज़रत आदम अलै. की ये दुआ मज़कूर है :

رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ

रब्बना ज़लमना अनफुसना व इल्लम तगफिरलना व तरहमना लनकुनन्ना मिनल खासीरीन ०

चुनांचे अस्तगफार के इन कलमात की अदाएगी के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलै. का वो कसुर माफ़ फर्मा दिया. अहादिस में अस्तगफार के मुख्तलीफ कलमात मज़कूर है वो ये है :

रसुल अल्लाह स. ये कलमा अस्तगफार सौ १०० मर्तबा पढते थे.

۞ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَتُبْ عَلَيَّ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

रब्बिगफिरली वतुब अलय्य इन्नका अनततत्तब्बाबुरहीम०

۞ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ

अस्तगफिरुल्लाहिल्लजी ला इलाहा इल्ला हुवलहय्युल कय्युमु वअतुबु इलैह०

(३) सय्यदुलअस्तगफार य है :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَلٰى عَمْدِكَ وَوَعْدِكَ
مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِيْ
فَاغْفِرْ لِيْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

अल्लाहुम्मा अनता रब्बी लाइलाहा इल्ला अनता खलकतनी
व अन्ना अबदुका अइन्ना अला अहदिक ववअदिक
मसतताअतु आउजुबिक मिन शरीमा सनअतु अबुउ
लका बिनीअमतिक अलय्य वअबुउ बिजंबी फगफिरली
फइन्नुह लायगाफिरुज्जुनुब इल्ला अनता ०

हुजुर अनवार स. ने फर्माया : सय्यदुलइस्तगफार
के ये कलमात जो शख्स सुबह को दिल के पुरे यकीन के साथ
पढे और फिर इसी रोज़ इतैकाल हो जाए तो वो जन्नती है और
जो शख्स रात को यकीन कामिल के साथ पढे और सुबह होने
से कबल वफात पा जाए तो वो अहले जन्नत में से है. (बुखारी)

(४) हज़रत आईशा रज़ि. बयान करती है के रसुल अल्लाह स.
ने फर्माया के जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलै. को
ज़मीन पर उतारा तो वो उठ कर मकामे काबा में आए और दो
रक़त नमाज़ पढ कर इस दुआ को (बिलहामि इज़दी) पढा.
अल्लाह तआला ने इसी वक्त वही भेजी के "ए आदम अलै.
! मैं ने तेरी तौबा कबुल की और तेरा गुनाह माफ किया और
तेरे अलावा जो कोई मुझ से इन कलमात से दुआ करेगा मैं इस
के भी गुनाह माफ कर दूंगा. और इस की मुहिम को फताह
करूंगा और शयातीन को इस से रोकूंगा और दुनिया इस के

दरवाजे पर नाम घसटती चली आएगी, अगरचे वो इस को ना देख सके. वो दुआ ये है :

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّيْ وَعَلَانِيَتِيْ فَاَقْبَلْ مَعْذِرَتِيْ وَتَعْلَمُ حَاجَتِيْ فَاَعْطِنِيْ سُوْاِلِيْ
وَتَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ ۙ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ اِيْمَانًا يُّبَشِّرُ قَلْبِيْ وَبِقِيْنًا صَادِقًا
حَتّٰى اَعْلَمَ اَنَّهُ لَا يُصِيبُنِيْ اِلَّا مَا كَتَبْتَ لِيْ وَرِضًا يُّبَاقِمَتِيْ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ۝

अल्लाहुम्मा इन्का ताअलमु सिरीयी व अला नियती
फअकबल माजीरती व ताअलमु हाजति फआतिनी
सुआली व ताअलमु मा फि नफसी फगफिरली जंबी
अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका इमानय्युबा शिरु कलबी व
यकीनन सादिकन हत्ता आलम अन्हु ला युसीबुनी
इल्ला मा कतबता लि व रिज़म बिमा कसमत लि या
अरहमराहीमीन ० तिबरानी व बेहकी

(५) बाज़ अहादीस में ये कलमात मज़कुर है :

اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ

अस्तगफिरुल्लाह रब्बी मिन कुल्ली जंबी व अतुबु इलैह.

हज़रत शेख जलालुद्दीन सीवती रह. से मनकुल
है के फहम इल्म और कसरते माल के लिए बाद नमाज़े फजर
रोज़ाना तीन मर्तबा ये अस्तगफार पढे :

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيْمَ الَّذِيْ لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ بِدُعِ السَّمَوَاتِ وَالْاَرْضِ
وَمَا بَيْنَهُمَا مِنْ جَمِيعِ جُرْمِيْ وَاسْرَافِيْ عَلٰى نَفْسِيْ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

अस्तगफिरुल्लाहल अजीमल्लजी ला इलाहा इल्ला हुवल

हय्युलकय्युमु बदीउस्समावाती वलअरजी वमा बैनहुमा
मिन जमीइ जुरुमि व इसराफि अला नफसी वअतुबु
इलैह. ये अमल मुजररीब

शेखुल मशाईख हजरत शेख कलीमुल्लाह जहां
आबादी रह. ने मरका शरीफ में तहरीर फर्माया है के जो शख्स
दो माह तक बिलानागा रोजा चार सौ बार ये अस्तगफार पढे तो
अल्लाह तआला इसे इल्म नाफे या माले कसीर अता फर्माए.
यानी अगर निय्यत हुसुले इल्म है तो इल्म हासिल होगा और
अगर तालिबे माल की निय्यत से पढेगा तो वो मिलेगा वो
अस्तगफार ये है :

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ يَدْبِغُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
مِنْ جَمِيعِ جُرْمِي وَظَلَمِي وَإِسْرَافِي عَلَى نَفْسِي وَأَتُوبُ إِلَيْهِ

अस्तगफिरुल्लाहल्लजी ला इलाहा इल्ला हुवलहय्युल
कय्युमुररहमानुररहीम बदी उस्समावाती वलअरजी मिन
जमीइ जुरुमि व जुलमि व इसराफि अला नफसी
वअतुबु इलैह.

तौबा व अस्तगफार में जितनी जल्दी की जाए
उतना हि बेहतर है. जैसे हि गुनाह सरजद हो तो फौरन अल्लाह
तआला के हुजुरे सरे नदामत झुका कर अपने कुसुर और
कोताहि की माफी मांगनी चाहिए, वरना मरते दम तक शैतान
की ये कोशिश होती है के वो दिन में ये खुश फहमी पैदा
करता रहता है के अभी तो तुम्हारी उम्र हि क्या है, बाद में तौबा
कर लेना. यहां तक के मौत सर पर आ खडी होती है और

इन्सान तौबा से महरूम हो कर तबाह व बरबाद हो जाता है, दूसरी अहम बात ये है के तौबा सिर्फ ज़बानी काफी नहीं है क्योंकि असली और सच्ची तौबा ये है के इन्सान सच्चे दिल से ये अहद करे के आइंदा इस गुनाह के करीब नहीं जाएगा. कुरआन हमीक का इर्शाद है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا

या अय्युहल्लाजीना आमनू तूबु इलल्लाहि तौबतं नसुहा.

रसुल अल्लाह स. ने फर्माया जिस ने दीन में कोई ऐसा काम किया जिस की बुनियाद शरीअत में मौजूद नहीं वो काम मरदुद है. (बुखारी व मुस्लिम)

यूं तो दिने इस्लाम में बिदआत का इजाफा अब रोज मर्ग का मामुल बन चुका है लेकिन इजकार व वज़ाईफ में खुसुसन इतनी ज़्यादा खुद साखता और गैर मसनून चिज़ें शामिल करदी गई है के मसनून अदीया व इजकार ताक नसीयां बन कर रह गए हैं. दिगर खुद साखता और गैर मसनून इजकार व वज़ाईफ की तरह दरुद व सलाम में भी बहोत से खुद साखता और गैर मसनून दरुद व सलाम राएज हो चुके हैं. मसलन दरुद ताज, दरुद लिखी, दरुद मुकद्दस, दरुद अकबर, दरुद माहि, दरुद तंजीना वगैरा. इन में से हर दरुद के पढ़ने का तरीका और वक्त अलग अलग बताया गया है और इन के फवाइद (जो के ज़्यादा तर दुनयावी है) का भी अलग अलग तज़केरा कुतुब में लिखा गया है. मज़कुरा दरुदों में से कोई एक दरुद भी ऐसा नहीं जिस के अलफाज़ रसुल अकरम स. से साबित हो. लेहाज़ा इन्हें पढ़ने का तरीका और इन से हासिल होने वाले फवाइद अज़ खुद बातिल ठहरते है. रसुल अल्लाह स. की नाराज़गी और अररहम तआला के गज़ब का बाइस बने लेहाज़ा वही वज़ाईफ पढ़े जो रसुल अल्लाह स. से साबित है. याद रखीए रसुल अल्लाह स. की ज़बान से निकला हुआ एक लफज़ दुनिया के सारे अवलीया और सॉलेह के बनाए हुए कलमाते खैर से ज़्यादा अफज़ल और कीमती है.

(बराए महरबानी मोमिन पंचसुरा पढीए)

चहल रब्बना माअ चहल दरुद

बिस्मील्लाहिर्रहमानिरहीम

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَعَلَى آلِهِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ —

अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यीदिना मोहम्मदिन्नबीयीलउम्मी
व अला आलिही व बारिक व सल्लीम.① رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ○ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ
إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ ○रब्बना तक्बल मिन्ना इन्न क अन तस समीअुल
अलीमु ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यीदिना मोहम्मदिवं
वआला आलि सय्यीदिना मोहम्मदिन कमा सल्लैयत
अला इब्राहिम वअला आलि इब्राहिम इन्नका हमिदुम्मजीद○اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى
إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ ○ ② رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ
لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُسْلِمَةً لَكَ رَوِّا رَأْمَانَا بِسُكُونٍ وَعَلَيْكَ إِنَّكَ أَنْتَ
التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ○अल्लाहुम्मा बारिक अला सय्यीदिना मोहम्मदिवं वआला
आलि सय्यीदिना मोहम्मदिन कमा बारक्त अला इब्राहिम
वआला आलि इब्राहिम इन्नक हमिदुम्मजीद ○ रब्बना
वजअलना मुसलिमैनी लक व मिन जररीयतिना
उम्मतम्मुसलीमतल लक व अरिना मना सिकना वतुब
अलैना इन्नक अनतत्तव्वाबुरहीम ○

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِالنَّبِيِّ الْأَرْقَى وَأَزْوَاجِهِ
أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ وَذُرِّيَّتِهِ وَأَهْلِ بَيْتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ إِثْنَا
خَمْسِينَ مَرَّةً ॥

अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यीदिना मोहम्मदिन्नबीईल
उम्मीई वअजवाजिही उम्महा तिलमुअमीनीन व जुरीयातिहि
व आहलि बैतिही कमा सल्लैयत अला इब्राहिम इन्का
हमीदुम्मजीद ०

۵ رَبَّنَا إِنَّا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةٌ وَقَدْ آذَابَ السَّارِ ॥
रब्बना आतिना फिदुनिया ह स न तवँ व फिल आखि
रति ह स न तवँ व किना अजाबन्नारि ०

اللَّهُمَّ رَبِّ الْحِلِّ وَالْحَرَامِ وَرَبِّ الشَّعْبِ الْحَرَامِ وَرَبِّ الْبَيْتِ الْحَرَامِ وَرَبِّ الرُّكْنِ
وَالْمَقَامِ أَيْلُغِ لِرُؤُوسِ سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مِمَّا السَّكَلَامِ ॥

अल्लाहुम्मा रब्बल हिल्ली वलहरामि व रब्बल मशअरिल
हरामि व रब्बलबैतिलहरामि व रब्बरुकनि वल मकामि
अबलिग लिरुहि सय्यीदिना व मौलाना मुहम्मदिम
मिन्नसलाम ०

۶ رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَبَشِيتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ॥
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِالنَّبِيِّ الْأَرْقَى وَإِلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَسَلَّمَ ॥

रब्बना अफरिग अलैना सब रवँ व सब्बित अकदा मना
वन सुरना अलल कौमिल काफिरीन ० अल्लाहुम्मा
सल्ली अला सय्यीदिना मुहमदिनिन्नबीईल उम्मी व
आलिहि व असहाबिही व सल्लीम ०

⑤ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ لَيْسَ بِنَا أَوْ خَطَاْنَا اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَأَنْزِلْهُ
الْكَزْزَلَ الْمُقَرَّبَ مِنْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ○

रब्बना ला तुआ खिजना इन्न सीना अव अख्ताना
अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यीदिना मुहम्मदिवँ व अनजीलहुल
मंजिलल मुकर्रबा मिनका यौमल कियामा ○

⑥ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا أَصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا اللَّهُمَّ
صَلِّ عَلَى رُوحِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْأَرْوَاحِ وَعَلَى جَسَدِهِ فِي الْأَجْسَادِ وَعَلَى قَبْرِهِ
فِي الْقُبُورِ ○

रब्बना वला तहमिल अलैना इसरन कमा ह मल तहू अ
लल लजी न मिन कब लिना ○ अल्लाहुम्मा सल्ली
अला रुहि सय्यीदिना मुहम्मदिन फिलअरवाहि व अला
जसदिहि फिलअजसनादि व अला कबरीहि फिल कुबुर ○

⑦ رَبَّنَا وَلَا تَحْكُمْلَنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۝ وَاعْفُ عَنَّا وَنِعْمَ الْوَاعِظُ لَنَا ۝ وَارْحَمْنَا ۝ إِنَّكَ
أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ○ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى
أَلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ وَفِي الْعَمَلَاءِ أَلَا عَلَى إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ○

रब्बना वला तुहम्मिल ना माला ता क त लना बिही
वाअफु अन्ना ○ वगफिर लना ○ वर हमना . अन त
मौलाना फन सुरना अलल कौमिल काफिरी न ○
अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला
आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन फिलअव्वलीन वल आखिरीन
व फिल मल इल अला इला यौमिदिन ○

⑤ رَبَّنَا لَا تُزِمْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ
الْوَهَّابُ ॥ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَواتُكَ
تَكُونُ لَكَ رِضَاءً وَلِحَقِّقَةِ آدَاءٍ وَأَعْطِهِ الْوَسِيلَةَ وَالْمَقَامَ الَّذِي وَعَدْتَهُ ॥

रब्बना ला तुजिग कुलू बना बाअ द इज हदय तना व
हब लना मिल्ल दुन क रह म तन इन्न क अनतल
वहहाब ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मोहम्मदिव
व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिव सलातन तकुनु
लका रजाअव व लिहविकहि अदाअव व आतिहिल
वसीलता वलमकामल्लजी व अत्तहु ०

⑥ رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ إِذْ أَنْتَ اللَّهُ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَرَسُولِهِ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ ॥

रब्बना इन्न क जामिउन नासि लि यौमिल ला रैब फीहि
इन्नल्लाह ला युखलिफुल मीआद ० अल्लाहुम्मा सल्ली
अला सय्यिदिना मुहम्मदिन अबदिक व रसुलिक व
सल्ली अलल मुअमीनीन वल मुअमीनाती वलमुसलीमीन
वल मुसलीमात ०

⑦ رَبَّنَا إِنَّنَا أَمْنَا فَأَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَفِرَّاعَدَابَ السَّكَارِ ॥ اللَّهُمَّ صَلِّ
عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَلِّ ॥

रब्बना इन्न ना आमन्ना फग फिरलना जुनु बना व
किना अजाबन्नार ० अल्लाहुम्म सल्ली अला सय्यिदिना
मुहम्मदव व अला आलीहि व सल्लीम ०

۱۱ رَبَّنَا أَمَّا بِنَا أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْفُتْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ ۝

रब्बना आमना बिमा अन जल त वत्त बअनर रसू ल
फक तुब्ना म अश्शा हिदीन ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला
सय्यिदिना मुहम्मदिन अबदिक व नबीय्यीकन्नबीयिल
उम्मी ०

۱۲ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى

الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ ۝

रब्बनग फिर लना जुनू बना व इसरा फना फी अमरिना
व सब्बित अकदा मना वन सुरना अलल कौमिल
काफिरीन ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ
व अला आलि सय्यिदिना मोहम्मदिवँ व अला आहलि
बैतिहि ०

۱۳ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ اللَّهُمَّ

صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْأَوَّلِينَ وَصَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْآخِرِينَ

وَصَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الشُّبُّهِ وَصَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الرُّسُلِينَ

وَصَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْمَلَأِ الْأَعْلَى إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ۝

रब्बना मा खलकत हाजा बातिलन सुबहा न क फकिना
अजाबन्नार ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन
फिलअव्वलीन व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन
फिलआखीरीन व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन
फिन्नबीयीन व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन
फिलमुरसलीन व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन
फिलमलइल आला इला यौमिदिन ०

﴿ १७ ﴾ رَبَّنَا إِنَّكَ مَعَهُ تَدْخِلُ السَّمَاءَ فَقَدْ تَحَرَّقَتْهُ وَنَالِ الظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارِ
 اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ وَرَسُولِكَ الشَّيْخِ الْأَرْبَعِيِّ وَعَلَى
 آلِهِ وَآزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ وَسَلِّمْ وَعَدِّ خَلْقِكَ وَرِصَّةِ نَفْسِكَ وَزِينَةِ عَرْشِكَ
 وَمِدَادِ كَلِمَاتِكَ ○

रब्बना इन्न क मन तुद खि लिन्ना र फ कद अखजै
 तहू व मा लिज्जा लिमी न मिन अनसार ○ अल्लाहुम्मा
 सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन अबदिक व नबीय्यीक
 व रसुलिकन्नबीयील उम्मी व अला आलिहि व अजवाजिहि
 व जुरीयातिहि व सल्लिम अदद खलकीक व रिजाआ
 नफसिक वजिनता अरशिका व मिदाद कलिमतिक ○

﴿ १८ ﴾ رَبَّنَا إِنَّتَ أَسْمَعُنَا مَادِيَّائِيَّاتِي لِلْإِيمَانِ أَنْ أَوْفَا بِرَبِّكُمْ فَأَمْنًا
 اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَمَنْ صَلَّى عَلَيْهِ وَصَلَّى عَلَى سَيِّدِنَا
 مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ مَنْ لَمْ يُصَلِّ عَلَيْهِ وَصَلَّى عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ كَمَا أَمَرْتَ بِالصَّلَاةِ
 عَلَيْهِ وَصَلَّى عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ كَمَا حُبَّ أَنْ يُصَلَّى عَلَيْهِ وَصَلَّى عَلَى
 سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ كَمَا تَنْبَغِي الصَّلَاةُ عَلَيْهِ ○

रब्बना इन्न ना समिअना मुनादि ययँ युनादी लिल
 ईमानि अन आमिनु बि रब्बिकुम फ आमन्ना ○
 अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन बिअददि
 मिन सल्ली अलैहि व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन
 बिअददि मल्लम युसल्ली अलैहि व सल्ली अला सय्यिदिना
 मुहम्मदिन कमा अमरत बिस्सलाति अलैहि व सल्ली
 अला सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा तुहिब्बु अय्युसल्ला
 अलैहि व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा
 तंबगीस्सलातु अलैहि ○

۱۸ رَبَّنَا فَاعْفُ رُبَّنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّطْنَا مَعَ الْآبِرَارِ
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِالسَّيِّئَةِ الْأُتْرِ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلِّمْ
عَدَدَ مَا عَظِمَتْ وَرِثَةُ مَا عَظِمَتْ وَمِلَّةَ مَا عَظِمَتْ ॥

रब्बना फग फिर लना जुनूबना व कफिर अन्ना सय्यिआ
आतिना व त वप्फना मअल अबरारि ० अल्लाहुम्मा
सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन्नबीयील उम्मी व अला
आलिहि व साहबिहि व सल्लीम अदद मा अलिमत व
जिन्ता मा अलिमता व मिलआ मा अलिमत ०

۱۹ رَبَّنَا وَأَتِ مَا وَعَدْتَنَا عَلَى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ
إِنَّكَ لَا تَخْلِفُ الْوَعْدَ ॥ اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِالنُّورِ
الذَّائِي وَالْبَسْرِ السَّارِي فِي سَكَاثِ الْأَسْمَاءِ وَالْصِّفَاتِ ॥

रब्बना व आतिना मा व अत्तना अला रुसुलि क व
ला तुख्रिजिना यौमल किया मति इन्न क ला तुख्रिफुल
मीआद ० अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लीम व बारिक अला
सय्यिदिना मुहम्मदिनिननुरी ज्जाति व स्सीररीस्सारियी फि
साइरलअसमाइ वस्सीफात ०

۲۰ رَبَّنَا آمِنَّا فَاغْنِنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ॥ اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ
وَبَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآدَمَ وَنُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى وَمَا بَيْنَهُمْ
مِنَ النَّبِيِّينَ وَالْمُرْسَلِينَ صَلِّ عَلَى اللَّهِ وَسَلَامُهُ عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ॥

रब्बना आमन्ना फग तुब्ना म अशशहिदीन ० अल्लाहुम्मा
सल्ली व सल्लीम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिनव
आदम व नुहिव्व इब्राहिम व मुसा व इसा व मा बैनहुम
मिन्नबीयीन वलमुरसलीन सलवातुल्लाहि व सलामुहु अलैहिम
अजमईन ०

① رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عَيْدًا إِلَّا وَلَيْنَا وَآخِرُنَا
وَأَيُّكُمْ مِنْكَ وَأَزْرُقْنَا وَأَنْتَ خَبِيرُ الرَّازِقِينَ ॥ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِي عِلْمِ اللَّهِ صَلَوةً دَائِمَةً بِحَدِّ وَأَمْرِ مُلْكِ اللَّهِ ॥

रब्बना अन्जिल अलैना माइ द तम मिनस समाई तक्नु
लना ईदल्ली अव्वलिना व आखिरिना व आ य तम
मिन क वरजुकना व अन त खैरुर राजिकी न ०
अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन अदद मा फि
इलमिल्लाहि सलातन दाईमतन बिदा वामि मुल्किल्लाह ०

② رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ
الْخَاسِرِينَ ॥ اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ
عَدَدَ كَمَالِ اللَّهِ وَكَمَالِ بَيْتِهِ بِكَمَالِهِ ॥

रब्बना ज लमना अनफु सना ० व ईल्लम तगफिर लना
व तर हमना ल नक्कू नन न मिनल खासिरी न ०
अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लीम व बारिक अला सय्यिदिना
मुहम्मदिवँ व आला आलिही अदद कमालिल्लाहि व
कमा यलीकु बिकमालिहि ०

③ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ॥ اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ
وَبَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ عَدَدَ رِغَامِ اللَّهِ وَأَفْضَالِهِ ॥

रब्बना ला तज अल्ला म अल कौमिज जालिमी न ०
अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लीम व बारिक अला सय्यिदिना
मुहम्मदिवँ व आला आलिहि अद द इनआमिल्लाहि व
इफजालिह ०

۲۷ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِالشَّيْبِ الْأُمِّيِّ الْحَبِيبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيمِ الْجَاهِدِ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلِّمْ ۝

रब्बनफ तह बै नना व बै न कौमिना बिल हक्के व अन त खैरुल फातिही न ० अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लिम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिनिन्नबीयील उम्मील हबिबिल आलिलकदरिलअजीमिल जाहि व अला आलिहि व साहबिहि व सल्लिम ०

۲۸ رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوْفَنَّا سَلِيمِينَ ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ صَلَوةً أَنْتَ لَهَا أَهْلٌ وَهِيَ لَهَا أَهْلٌ ۝

रब्बना अफरिग अलैना सबरवँ व तवप्फना मुस्लिमीन ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व आला आलिहि सलातन अंता लहा आहलुवँ व हुव लहा अहलुन ०

۲۹ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَتَجْنِبْ رَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَوةً تَكُونُ لِلنَّجَاةِ وَسَيِّئَةً وَلِلْعُلُوِّ الذَّرَجَاتِ كُنَيْئَةً ۝

रब्बना ला तज अलना फित न तल लिल कौमिज जालिमी न व नज्जीना बि रह मति क मिनल कौमिल काफिरी न ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व आला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन सलातन तकनु लिनजाति व सीलतिवँ व लिउ लुववी ददरजाति कफीला ०

﴿٢٧﴾ رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا تُخْفِي عَلَيْنَا وَمَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ○ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَوةً تُقَبَّلُ بِهِمُ الْكَرْبُ وَتُحَلُّ بِهِمُ الْعُقَدُ ○

रब्बना इन्न क तअ लमु मा नुखफी व मा नुअलिन व
मा यखफा अलल लाहि मिन शैइन फिल अर्जी वला
फिस समाई ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना
मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन सलातन
तुर्फरजु बिहलकुरबु व तुहल्लु बिहलउकद ○

﴿٢٨﴾ رَبَّنَا وَقَبَّلْ دُعَاءَ ○ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَوةً تَكُونُ لَكَ رِضَاءٌ وَلِحَقِيقَةٍ أَذَاءٌ ○

रब्बना व तकब्बल दुआय ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला
सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिवँ
सलातन तकनु लक रिजा अवँ व लिहक्कीहि अदाअ ○

﴿٢٩﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِإِخْوَتِي وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ○ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَوةً دَائِمَةً مَقْبُولَةٌ تُوَدَّى بِهِمُ عَائِنَا حَقُّهُ الْعَظِيمُ ○

रब्बनग फिरली व लि वालिदय्य व लिल मोअमिनी न
यौ म यक्मुल हिसाबु ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला
सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन
सलातन दाइमतम्मकबुलता तुअददि बिहा अन्ना
हक्कहुलअजीम ○

﴿٣٠﴾ رَبَّنَا إِنَّا أَمَّا لَكَ رِجَاءٌ وَمِنْكَ رَحْمَةٌ ○

○ صَلِّ عَلَى النَّبِيِّ الْأَمِينِ ○

रब्बना आतिना मिल्ल दुन क रह मतवँ व हय्यी लना मिन
अमरिना र श दा ० सलल्लाहु अलन्नबीयील उम्मी ०

① رَبَّنَا أَنْتَ خَافُ أَنْ يَفْرُطَ عَلَيْكَ أَوْ أَنْ يُطْفِئُ ۝ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ صَلَوةَ الرِّضَى وَأَرْضَ عَنْ أَصْحَابِهِ رِضَاءَ الرِّضَى ॥

रब्बना इन्न ना नखाफु अय्यफरुत अलैना अव अय्यतगा
० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन सलात
रिजा वरजा अन असहाबिहि रिजाअरीजा ०

② رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَى كُلَّ شَيْءٍ حَلْقَهُ ثُمَّ هَدَى ۝ اللَّهُمَّ صَلِّ
وَسَلِّمْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي كُلِّ لَحْزَةٍ
وَنَقِيرٍ بِكَدِّ كُلِّ مَعْلُومٍ لَكَ ॥

रब्बनल्लजी अअता कुल्ल शैइन खल कहू सुम्म हदा ०
अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ
व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन फि कुल्ली लमहतिवँ
व नफसिमबाअद दि कुल्ली माअलुमिल्लक ०

③ رَبَّنَا آمَنَّا بِكَ غُفِرَ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝ اللَّهُمَّ
صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا نَجِبُ وَتَرْضَاهُ ॥

रब्बना आमन्ना फगफिर लना वर हमना व अन त खैरुर
राहिमीन ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ
व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा तुहिब्बु व
तरजाहु लहु ०

وَبَيْنَا أَصْرُفَ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ عُزَابًا ۚ
 ۞ أَلَمْ نَسْأَلْكَ مُسْتَقْرَأً مَّقَامًا ۚ ۞ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِ الْأَنْبِيَاءِ وَرَبِّكَ لِلرُّسُلِينَ
 ۞ الْخَيْرِ وَأَعِزِّ مَوْلَى أَظْلَمَ عَلَيْهِ اللَّيْلُ ۖ وَأَشْرَقَ عَلَيْهِ النَّهَارُ ۚ

रब्बनस रिफ अन्ना अजा ब जहन्नम इन्न अजाबहा का
 न गरामन० इन्नहा सा अत मुस त कर्ब व मुकामन०
 अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यदिलअबरारि व
 जैनिलमुसलीनल अखयारी व अकरामि मन अजलम
 अलैहिल्लैलु व अशरक अलैहिन्नहार ०

۞ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ ۖ وَاجْعَلْ لَنَا لِمُؤْمِنِينَ إِمَامًا
 ۞ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
 عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ جَمِيدٌ مُجِيدٌ ۚ

रब्बना हब लना मिन अजवा जिना व जुरीय्या तिना
 कुर त अअंयु निव वज अल्ला लिल मुत्तकी न
 इमामा० अल्लाहुम्मा सल्लीम अला सय्यदिना मुहम्मदिव
 व अला आलि सय्यदिना मुहम्मदिन कमा सल्लमत
 अला इब्राहिम व अला आलि इब्राहिम इन्नका हमीदुम्मजीद०

۞ رَبِّهِ الْقُدُّوسُ الْغَفُورُ ۚ ۞ اللَّهُمَّ أَنْبِغْهُ مِنْكَ السَّلَامُ ۖ كَمَا ذَكَرَ السَّلَامُ
 ۖ وَالسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

रब्बना ल गफूरुन शकूर ० अल्लाहुम्मा अबलिग हु मिन्न
 ससलाम कुल्लमा जुकिरससलामु वससलामु अलन्नबीय्यी व
 रहमतुल्लाहि व बरकातहु

٢٥ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ○ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ وَرَسُولِكَ الْكَافِي وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلِّمْ ○

रब्बना व सिअ त कुल्ल शयइर रह म तवँ व ईलमन
फगफिर लिल्लजी न ताबू वत्त बअू सबी ल क व
किहिम अजाबल जहीमि ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना
मुहम्मदिन अबदिक व नबीयीक व सुलिक नबीय्यील उम्मी
व अला आलिहि व साहबिहि व सल्लिम ०

٣٥ رَبَّنَا وَادْخُلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ
 أُولَئِكَ هُمْ فِيهَا ۖ وَكَرِهِيَهُمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ ٣٦ وَقِهِمُ النَّيَّاتِ وَمَنْ تَقِ
 النَّيَّاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُمْ ۖ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ ٣٧ اللَّهُمَّ صَلِّ
 عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَسَلِّمْ عَلَيْهِ وَاجْزِهِ عَنَّا مَا هُوَ أَفْضَلُ لَهُمْ كَيْفَ يَكُونُ

रब्बना व अद खिलहुम जन्नाति अदनि निल्लती व
अत्तहुम व मन स ल ह मिन आबाई हिम व अज्वाजि
हिम व जुरीय्याति हिम ० इन्न क अन तल अजीजुल
हकिम ० व कि हि मुस सय्ई आति व मन तकिस सय्ई
आति यौ मई जिन फ कद रहिम तह व जालि क
हुवल फौजुल अजीमु ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला
सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व सल्लिम अलैहि वजजिहि अन्ना
मा हुव आहलुहु हबीबुक ०

(१५) رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا
عِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ ॥ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى
أٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ ॥

रब्बनग फिर लना व लि इब्बा नि नल्लजी न स ब
कूना बिल ईमानि व ला तज अल फी कुलूबिना
गिल्लल लिल्लजी न आ मनु रब्बना इन्न क रुफुर
रहीम ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिव
व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन ०

(१६) رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْظِرْ لَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ॥ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْمَلَأِ الْأَعْلَى إِلَى يَوْمِ
الَّذِينَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ ॥

रब्बना ला तजअलना फितनतल लिललजीन कफरु
वगफिर लना रब्बना ० ईन्नक अन्तलअजिजुल हकिम
० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन फिल
मलईल आला ईला यौमी ददिन मा शाअल्लाहु ला
कुव्वत ईल्ला बिल्लाहिल अलिईल अजिमि ०

(१७) رَبَّنَا أَتَيْنَاكَ تُبَّارًا وَاعْظِرْ لَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ॥
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُولِكَ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي آمَنَ بِكَ
وَبِعِصَّتِكَ وَأَعْطَاهُ أَفْضَلَ رَحْمَتِكَ وَأَسْمَاهُ الشَّرَفَ عَلَى خَلْقِكَ يَوْمَ الْفَيْكَةِ وَأَجْزِمِ
خَيْرَ الْجَزَاءِ وَالسَّلَامَ عَلَيْهِ وَرَحْمَةً اللَّهُ وَبَرَكَاتُهُ ॥ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ
الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ॥ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ॥

रब्बना अत मिम लना नू र्ना वग फिर लना इन्न क
अला कुल्ले शयइन कदीर ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला

सय्यिदिना मुहम्मदिन अबदिक व रसुलिकन्नबीय्यील
उम्मील्लजी आमन बिक व बिकिताबिक व आततिहि
अफजल रहमतक व आतिहिशशरफ अला खलकिक
यौमिल कियामति वजजिहि खैरल जजाइ वस्सलामु
अलैहि व रहमतुल्लाहि वबरकातहु ० सुबहान रब्बीका
रब्बील इज्जती अम्मा यसीफुन ० व सलामुन अल्ल
मुरसलीन ० वलहम्दु लिल्लाहि रब्बीलआलमीन ०

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ
وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदि
निन्नबीय्यील उम्मी व अला आलिहि व बारीक व
सल्लीम ०

मोमिन पंचसुरा

जिस में सिर्फ आप स. से साबित दरुद व वजाईफ है.

☆ अल्लाह तआला के नाम व ख्वास

☆ कुरआन शरीफ की फजीलत व ख्वास

☆ दरुद शरीफ की फजीलत व ख्वास

☆ तौबा व अस्तगफार की फजीलत

☆ दुआ व अजकार की फजीलत

बिस्मील्लाह हिररहमान निरहीम

मिनटो में करोड पती बनाए

हजरत तमीम दारी रज़ि. हुजुर अकरम स. सै
रिवायत करते हैं के हुजुर स. ने इर्शाद फर्माया के जो शख्स
दस मर्तबा ये कलमात कहे तो अल्लाह तआला इस को चार
करोड नेकियों का सवाब इनायत फर्माते हैं और रमजानुल
मुबारक में हर नेकी का सवाब सत्तर गुनाह ज़्यादा मिलता है
तो इस लेहाज़ से इन अलफाज़ का सवाब दो अरब अस्सी
करोड मिलेगा. वो कलमात ये हैं.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ الْهَاءُ وَاحِدٌ أَحَدٌ أَصَدُّ الْمَرْيُتُغَذُ صَاحِبُهُ
وَلَا وَلَدٌ أَوْ لَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ

अशहदुअल्ला इलाहा इलल्लाहु वाहदहु ला शरीका लहु
इलाहव्वाहिदन अहदन समदन लम यत्तखिज साहिबतं
व ला वलदवँ वलम यकुल्लहु कुफुवन अहद ०

तिलावत से पहले पढ़े जाने वाले दरुद शरीफ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَعَلَى
إِلِهِمْ وَأَصْحَابِهِ الْبَرَّةِ الْكِرَامِ وَعَلَى سَائِرِ النَّبِيِّينَ

अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिनिन
नबीय्यील उम्मीय्यी वअला आलिहि व असहाबिहिल
बररतिलकिराम व अला साइरीननबीय्यीन.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ نُوْرٍ اَلَا نُوْرٍ وَسِّرٍ اَلَا سِرَّارٍ وَ
 تَرْيَاقٍ اَلَا غِيَارٍ وَمِفْتَاحٍ بَابِ الْيَسَارِ سَيِّدِنَا
 مُحَمَّدٍ الْمُخْتَارِ وَاِلَيْهِ الْاَطْهَارُ وَعَلَىٰ وَاِلَيْهِ
 اَصْحَابِهِ الْاَخْيَارُ عَدَدَ نِعَمِ اللّٰهِ وَافْضَالِهِ

अल्लाहुम्मा सल्ली अला नुरिल अनवारि व सररीलअसरारी
 व तिरयाकिल अगयार वमीफताहि बाबिल यसार सय्यिदिना
 मुहम्मदि निलमुखतार व आलिहिल अतहार व अला व
 आलिहि व असहाबिहिल अखयार अद द निअमल्लाहि
 व अफजालिहि

أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ الْإِنْسَانَ
 مِنْ عَلَقٍ ۚ اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۚ عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ

आऊजुबिल्लाहि मिनशशैतानिररजीम

बिस्मील्लाहि रहमा निररहीम

इकरा (सल्लल्लाहु अलैक सय्यिदुना मुहम्मदुन सल्लल्लाहु
 अलैहि व सल्लम) बिस्मी रब्बीकल्लजी खलक खलकल
 इन्सान मिन अलक इकरा व रब्बुकल अकरमुल्लजी
 अल्लम बिलकलमि अल्लमल इन्सान मा लम याअलम.
फज्जिलत : इल्म ज़ाहिरी व बातीनी हासिल होगा. दिल रौशन
 और ज़बान पर खुदा के कलाम की खानी पैदा हो जाती है.
 ख्यालात नेक पैदा होना शुरू हो जाते हैं.

फजाईले आमाल

जो आदमी जुमा की नमाज़ के बाद १०० मर्तीया 'सुब्हानल्लाहिलअज़ीम व बिहमदिहि' पढ़ेगा तो हज़रत मोहम्मद स. ने फर्माया के इस के पढ़ने वाले को एक लाख गुनाह माफ होंगे और इसके वालेदैन के चौबीस हज़ार गुनाह माफ होंगे.

(हदीस रवाह इब्ने अलसुन्नी फिल अमलुलयौम वालैलता सफा १४६०)



हज़रत बुरेदा सलमा रज़ि. को आप स. ने फर्माया के ऐ बुरेदा रज़ि. जिस के साथ अल्लाह पाक खैर का इरादा फर्माते है इस को मंदरजा जैल कलमात सिखा देते है, वो कलमात ये है :

اللَّهُمَّ إِنِّي ضَعِيفٌ فَقْوِي رِضَاكَ صُغْفِي وَخُذْ أِلَى الْخَيْرِ
بِنَاصِيَّتِي وَاجْعَلِ الْإِسْلَامَ مُنْتَهَى رِضَايَ اللَّهُمَّ إِنِّي
ضَعِيفٌ فَقْوِي وَإِنِّي ذَلِيلٌ فَأَعِزَّنِي وَإِنِّي فَقِيرٌ فَأَغْنِنِي
يَا أَرْحَمَ الرَّحِمِينَ

अल्लाहुम्मा इन्नी जईफुन फकब्बिनी रिजाक जुअफि व खुजलिलखैर बिना सियती वजअलिल इस्लाम मुनतहा रिजाई अल्लाहुम्मा इन्नी जईफुन फकब्बिनी व इन्नी जलीलुन फअ-ईज्जनी व इन्नी फकीरुन फअगनिनी या अरहमरराहिमीन.

आगे आप स. ने फर्माया जिस को अल्लाह ये कलमात सिखाता है फिर वो मरते दम तक नहीं भूलता. (आहया उलउलूम जिल्द १ सफा २७७)



एक सहाबी रज़ि. ने हुजुर अकरम स. से पुछा के मुझे वज़ीफा बताइये. आप स. ने फर्माया के

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

सुब्हानल्लाहि वलहमदुलिल्लाहि वला इलाहा इलल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हौल वलाकुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयील अजीम ○

पढा करो सहाबी ने कहा ये तो मेरे अल्लाह के लिए कलमात है मेरे लिए क्या वज़ीफा है. आप स. ने फर्माया के इस के बाद ये कहा करो.

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاهْدِنِي وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي.

अल्लाहुम्मगफिरली वरहमनी वाहदनी व आफिनी वर जुकनी. वो सहाबी रज़ि. उठ कर खाना हो गए तो आप स. ने फर्माया के ये देहाती अपने दोनो हाथो में बहोत खैर को ले जा रहा है. इस के पढने का अहतेमाम करो. सुबह और शाम सौ सौ मर्तबा पढ लिया करो तो इन्शाअल्लाह तआला खुब बरकत होगी. (हयातुलसहाबा अरबी, जिल्द ३ सफा ४३०)



عَسَىٰ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ
 हसबीयल्लाह ला इलाहा इल्ला हुव अलैहि तवक्कलालु
 वहुव रब्बुल अरशील अजीम सुबह और शाम सात सात
 मर्तबा पढ़ना चाहिए अल्लाह तआला इस के मआमलात दुरुस्त
 करेगा. परेशानीयां दूर होगी. हज़रत अबुदरदा रज़ि. फर्माते हैं के
 ये कलमात तो सच्चे दिल से पढ़ या झुटे दिल से हर हाल में
 अल्लाह तेरा काम बनाएगा. (हयातुस्सहाबा, जिल्द ३, सफा ४४७)



फजर के बाद या ज़ोहर के बाद दस मर्तबा सुरेह
 इखलास अगर कोई पढ़ ले. आप स. ने फर्माया के उस दिन
 इस आदमी से गुनाह सरज़द ना होगा अगर शैतान कोशिश
 करेगा तब भी गुनाह सादिर ना होगा. (दुर्मेनशुर, कनजुलअमाल जिल्द
 १ सफा २२३. हयातुस्सहाबा अरबी जिल्द ३ सफा ४२०)



बिमार आदमी की हालत में चालीस मर्तबा ये
 आयते करीमा पढ़े.

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ
 ला इलाहा इल्ला अनता सुबहानका इन्नी कुन्तु
 मिनज़ालीमीन.

फज़ीलत : हदीस शरीफ में आया है के जिस मुसलमान ने
 अपनी बिमारी की हालत में चालिस मर्तबा मज़कुरा बाला
 आयते करीमा पढ़ ली तो अगर इस बिमारी में वफात पा गया
 तो शहीदो का अजर पाएगा और अगर तंदरुस्त हो गया तो इस
 के तमाम गुनाह बखश दिए जाएंगे. (हुसने हसीन)



किसी अंधे को हाथ पकड़ कर किसी शख्स ने चालीस कदम चला दिया तो इस चलाने वाले के अल्लाह अगले पिछले सारे गुनाह माफ करदेगा. (तनवीरुलहवालिक जिल्द १ सफा ८३ लसैवती)



अगर दो मुसलमान भाई मुसाफा करते वक्त एक मर्तबा दरुद शरीफ पढ़ लें तो अल्लाह इन दोनों के गुनाह माफ फर्मा देगा. (तनवीरुलहवालिक जिल्द १ सफा ८३ लसयतवी)



जब मोअज़्ज़न अज़ान देते देते **أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** अशहदुअल्लाइलाहा इलल्लाहु पर पहुंचे तो एक मर्तबा ये पढ़ ले.

رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ

دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَسُولًا وَنَبِيًّا.

रजीतु बिल्लाहि रब्बवँ व बिलइसलामि दिनवँ व बिमुहम्मदिन सलल्लाहु अलैहि व सल्लम रसुलवँ व नबीय्यन. तो अल्लाह तआला पढ़ने वाले के सारे गुनाह माफ फर्मादेगा.

(तनवीरुलहवालिक जिल्द १ सफा ८३ ललसैवती)



जब अज़ान शुरु हो तो ये दुआ पढ़े.

مَرْحَبًا بِالْقَائِلِينَ عَذْلًا مَرْحَبًا بِالصَّلَاةِ أَهْلًا وَسَهْلًا.
मरहबन बिलकाइलीन अदलन मरहबा बिस्सलाति आहलवँ व साहलन.

फजीलत : इस दुआ के पढ़ने से दो करोड़ नेकियां दो करोड़ गुनाह माफ, दो करोड़ दर्जात बुलंद होंगे.

आयाते शिफा

मुकम्मल "सुरेह फातेहा" बिस्मील्लह के साथ पहले पढ़े.

وَيَشْفِي صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ

वयशफि सुदुर कौमिम मुअमिनीन और इमान वाली कौम के सिनो को अल्लाह तआला शिफा अता फर्माएगा:

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَ تَكْمُلُ مَوْعِدَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ

لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ

याअय्युहन्नासु कद जाअतकुम्मौइजतुन मिररब्बीकुम व शिफाउल्लिमा फी सदुरि व हुदंव व रहमतुल्लीलमुअमीनीन.
ऐ इन्सानो ! तुम्हारे पास एक नसीहत नामा तुम्हारे रब की तरफ से आचुका है और सीनो की तमाम बिमारीयों का इलाज भी इसी में है. जो इमान लाएंगे हिदायत का रास्ता इन को मिल जाएगा. साथ ही साथ अल्लाह की रहमत भी पालेंगे.

يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ

فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ

यखरजु मिम बतुनिहा शराबुममुखतलिफुन अलवानुहु फिहि शिफाउल्लीन्नास.

शहद की मखखी के पेट से पीने की चिज़ (यानी शहद) निकलता है (अल्लाह के हुक्म से) जिस के रंग अलग अलग होते हैं और इस में इन्सानो के लिए शिफा है.

وَنَزَّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ

वनुनज़ीलु मिनलकुरआनि मा हुव शिफाउवँ व राहमतुललील मुमिनीन.

और हम उतारते हैं कुरआन जिस में शिफा है और रहमत है इमान वालों के लिए.

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ

व इज़ा मरीजतु फहुव यशफीन ०

और जब मैं बिमार पड़ू तब वही मुझे शिफा अता फर्माता है.

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنشَأَنِي وَشَفَانِي

कुल हुवल्लज़ीन आनु हुदवँव शिफा.

ऐ नबी स. ! आप फर्मा दो के ये कुरआन इमान वालों के लिए रहे हिदायत है और बिमारों में शिफा भी है.

रोजाना सत्ताईस बार

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ

रबीगफिरली वलिवालीदय्यी वलीलमुअमीनीन वलमुअमीनात यौम यकुमुल हिसाब.

पढ़ें क्योंकि इस के सत्ताईस बार पढ़ने से अल्लाह पाक हज़रत आदम अलै. से ले कर कयामत तक के मुसलमानों के बराबर सवाब अता फर्माएंगे.

दिल के अमराज से हिफाजत

يَا قَوِيُّ الْقَادِرُ الْمُقْتَدِرُ قَوِّنِي قَلْبِي.

या कवीय्युलकादिरुल मुक्तदिरु कब्बीनी कलबी

हर फर्ज नमाज के बाद तीन मर्तबा दरुद शरीफ पढ़ कर अपना सीधा हाथ कलब पर रख कर जो इस दुआ को सात मर्तबा पढ़ेगा. अल्लाह पाक उस को दिल की बिमारीयों से महफुज रखेगा.

وَلْيَرْبِطْ عَلَى قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتْ بِهِ الْأَقْدَامَ.

वलीयरबित अला कुलुबिकुम व युसब्बीत बिहिलअकदाम.

फजीलत : सुबह और शाम आगे पिछे दरुद शरीफ एक एक मर्तबा पढ़ें और सात मर्तबा ये दुआ. इन्शाअल्लाह तआला हार्ट फेल और दिल के तमाम अमराज से निजात मिलेगी.

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

फइन तवल्लौ फकुल हसबीयल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुव अलैहि तवक्कलतु वहुव रब्बुलअरशील अजीम ०

तर्जुमा : मेरे लिए अल्लाह तआला काफी है जिस के सिवा कोई माबुद होने के लायक नहीं, इस पर मैं ने भरोसा कर लिया. और वो अर्शे अजीम का मालिक है.

फजीलत : हज़रत अबुदरदा रज़ि. से रिवायत है के फर्माया जनाब रसुलुल्लाह स. ने के जो शख्स सुबह व शाम सात मर्तबा ये दुआ पढ़ ले तो अल्लाह तआला इस के दुनिया और

आखेरत के हर गम के लिए काफी हो जाएगे.

(रुहुलमआनी पारा ११ सफा ५३)

मायुस ना हो अहले ज़मीन अपनी खता से
तकदीर बदल जाती है मुज़तर की दुआ से

कर्ज व रंज व गम से निजात दिलाने की दुआ

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ
الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَأَعُوذُ بِكَ
مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ ۝

अल्लाहुम्मा इन्नी आउजुबिका मिनलहम्मी वलहुजनी
वआउजुबिका मिनल अजजी वलकसलि व आउजुबिका
मिनलबुखलि वलजुबनी व आउजुबिका मिन गलबतिद्दैनि
वकहरीरजाल ०

तर्जुमा : ऐ अल्लाह मैं पनाह चाहता हूं फिकर से और रंज (रंज
गम) से और पनाह चाहता हूं बेबसी व सुस्ती से और पनाह
चाहता हूं बुखल और बुजदिली से और पनाह चाहता हूं कसरत
कर्ज से और लोगों की जोर आवरी से. (रवाह अबुदाउद) (मरकाता
जिल्द ५ सफा २१७) (मिशकात सफा २१५ बाबुलइस्तेआजा)

फज़ीलत : हज़रत अबुसईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है के एक
शख्स ने अर्ज किया के ऐ अल्लाह के रसुल ! मुझे घेर लिया
है गमों और कर्जों ने यानी कसरते कर्ज की वजह से अदाएगी
की फिक्र से परेशान हूँ. हुजुर स. ने फर्माया के क्या मैं तुझे
ऐसी दुआ ना बता दूँ के जिस के पढ़ने से अल्लाह तेरे गमों को

दुर कर दे और तेरे कर्ज को अदा कर दे. अर्ज किया के कथो नहीं यानी ज़रूर बताइये. आप स. ने फर्माया के सुबह व शाम यूं दुआ मांगा करो (जो माअ तर्जुमा के उपर गुज़र चुकी है)

जिस के पढ़ने से आसमानी और ज़मीनी तमाम बलाओं से हिफाज़त रहती है.

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

बिस्मिल्लाहिल्लजी ला यजुरु मअइसमिहि शैउन फिलअरज़ी वला फिस्समाई वहुवस्समीउल अलीम. (मिशकात सफ़ा २०९)

तर्जुमा: अल्लाह के नाम से हम ने सुबह की (या शाम की) जिस नाम के साथ आसमान या ज़मीन में कोई चिज़ नुकसान नहीं दे सकती और वो सुनने वाला और जानने वाला है.

फज़ीलत : हज़रत अब्बान बिन उस्मान रज़ि. से रिवायत है के मैं ने अपने वालिद को कहते हुए सुना के रसुलुल्लाह स. ने फर्माया के जो बंदा सुबह और शाम तीन तीन बार ये दुआ पढ़ लेगा जो उपर गुज़री है इस को कोई चिज़ नुकसान नहीं पहुँचा सकती. (मिशकात)

नोट : मुनाजात मकबुल की एक मंज़ील अगर रोज़ पढ़ लि जाए तो सात दिन में अकसर अदाइया कुरआन पाक और अहादिल मुबारका की विर्द हो जाएगी.

दुआ हर परेशानी और बेचैनी को दफा करने के लिए

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ

या हय्यु या कय्युमु बिरहमतिका असतगीसु.

फज़ीलत : हज़रत अनस रज़ि. रियायत करते हैं के हुजुर स. को जब कोई कुर्ब यानी बेचैनी और परेशानी होती थी तो या हय्यु या कय्युमु बिरहमतीक असतगीसु पढा करते थे. यानी ऐ जिंदा हकीकी, ऐ संभालने वाले आप हि की रहमत से फर्याद करता हूं.

اَللّٰهُمَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ وَالْحَقُّنَا بِالصَّالِحِيْنَ

غَيْرْخَزَايَا وَلَا مَفْتُوْنِيْنَ ۝

अल्लाहुम्मा तवप्फना मुसलीमीन वलहिकना बिस्सॉलहीन गैर खजाया वला मफ्तुनीन.

इमान पर खातमे के लिए बेहतरीन दुआ है.

दीन पर साबीत कदम रहने की दुआ

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلٰى دِيْنِكَ

या मुकल्लिबलकुलुबि सब्बीत कल्बी अला दिनीका.

फज़ीलत : हज़रत शहर इब्ने होशब रज़ि. फर्माते हैं के मैं ने हज़रत उम्मे सलमा रज़ि. से अर्ज किया के ऐ उम्मुलमोअमिनीन हुजुर स. की अकसर दुआ किया होती थी जब आप के घर होते थे. हज़रत उम्मेसलमा रज़ि. ने फर्माया के आप स. अकसर ये दुआ फर्माया करते थे.

या मुकल्लीबल कुलुबि सब्बीत कलबि अला दिनीक.
ऐ दिलो को फेरने वाले मेरे दिल को दिन पर कायम रखीए.

(जवाहिरुलबुखारी सफा ५७१)

जो शख्स इस दुआ को मांगता रहेगा इन्शाअल्लाह तआला
दीन पर साबित कदम रहेगा जिस की बरकत से खातेमा इमान
पर होगा.

अलहाम हिदायत और नफस के शर से हिफाजत की दुआ

اللَّهُمَّ الْهَمْنِي رُشْدِي وَأَعِزَّنِي مِنْ شَرِّ نَفْسِي.

अल्लाहुम्मा अलहिमनी रुशदि व अइजनी मिन शरी
नफसी.

फजीलत : हज़रत इम्रान इब्ने हसीन रज़ि. से रिवायत है के
रसुलुल्लाह स. ने मेरे वालिद हसीन रज़ि. को दुआ के ये दो
कलमे सिखाए जिन को वो मांगा करते थे.

ऐ अल्लाह हिदायत को मुझ पर अलहाम फर्माते
रहिए यानी हिदायत की बातों को मेरे दिल में डालते रहिए और
मेरे नफस के शर से मुझे बचाते रहिए. (जवाहिरुलबुखारी सफा ५७१)

बर्स, जनुन, कोढ़ और तमाम बुरे अमराज से हिफाजत की दुआ

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبَرَصِ وَالْجُنُونِ وَالْجَذَامِ وَسَائِرِ الْأَسْقَامِ.

अल्लाहुम्मा इन्नी आउजुबिका मिनलबरस वलजनुनी
वलजुजामि वसय्यीइल असकाम.

फज़ीलत : हज़रत अनस रज़ि. से रिवायत है के हुजुर स. ये दुआ मांगा करते थे के ऐ अल्लाह, मैं आप की पनाह चाहता हूं बरस से, पागल पन से, कोढ़ से और तमाम बुरे अमराज़ से.

(जवाहिरुलबुखारी सफ़ा ५७०)

आज कल के ज़माने में जब के हर रोज़ नए नए मोहलिक अमराज़ पैदा हो रहे हैं इस दुआ का खास अहत्तमाम करना चाहिए और इस के साथ साथ तमाम गुनाहों से बचना चाहिए क्योंकि नई नई बिमारीयां गुनाहों की कसरत की वजह से पैदा होती है और गुनाहों को छोड़ने की तदबीरें किसी अल्लाह वाले से पुछना चाहिए. अल्लाह वालों की सोहबत की बरकत से गुनाहों से बचने की हिम्मत पैदा होती है.

अल्लाह तआला से माफी व मगफ़िरत दिलाने वाली दुआ

اللَّهُمَّ إِنَّكَ عَفَّوٌّ كَرِيمٌ تُجِيبُ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي.

अल्लाहुम्मा इन्नक अफुव्वुन करीमुन तुहिब्बुल अफव फाअफुअन्नी.

फज़ीलत : हज़रत आईशा रज़ि. से हुजुर अकरम स. की ये दुआ मनकूल है के ऐ अल्लाह आप बहुत ज़्यादा माफ़ फर्माते वाले करीम हैं. माफ़ फर्माते को पसंद फर्माते हैं, पस मुझ को माफ़ फर्मा دیجीए.

बाज़ रिवायत में सरवरे आलम स. ने शबे कद्र में भी ये दुआ मांगने की तालीम फर्माई है. लेहाज़ा शबे कद्र में इस दुआ का खास अहत्तमाम करना चाहिए. (जवाहिरुलबुखारी सफ़ा ५७०)

अज़ाबे कब्र व दोज़ख और मालदारी व फ़क्र के शर से पनाह की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ
عَذَابِ النَّارِ وَمِنْ شَرِّ الْغِنٰی وَالْفُقْرِ

अल्लाहुम्मा इन्नी आउजुबिका मिन फितनतील कबरी व
अज़ाबन्नारि व मिन शररीलगिना वलफुकरी.

फज़ीलत : उम्मुलमोमिनीन हज़रत आईशा रज़ि. से रिवायत है
के सरवरे आलम स. इन कलमात के साथ दुआ मांगा करते थे
के ऐ अल्लाह मैं आप की पनाह चाहता हूं कब्र के फितने से
और दोज़ख के अज़ाब से और मालदारी व फ़क्र के शर से.

(जवाहिरुलबुखारी सफ़ा ५७१)

हिदायत, तकवा, पाकदामनी और मालदारी के लिए दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ الْهُدٰی وَالتَّقٰی وَالعِفَافَ وَالْغِنٰی

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुकल हुदा वल्लुका वलअफाफ
वलगिना.

फज़ीलत : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसउद रज़ि. से रिवायत है
के हुजुर स. ने फर्माया ऐ अल्लाह मैं आप से सवाल करता हूं
हिदायत का, तकवा का, पाकदामनी का और मालदारी का.

(जवाहिरुलबुखारी सफ़ा ५७५)

बिसमी तआला

हजरत हम्माद बिन अबी हनीफा रह. से रिवायत है के मेरे वालिद (इमाम अबु हनीफा रह.) ने ख्वाब में निनानवे मर्तबा अल्लाहु रब्बुलु इज्जत की ज़ियारत की. फिर मेरे वालिद साहब रह. ने अपने दिल में सोचा के अब की मर्तबा अगर अल्लाह रब्बुलइज्जत की ज़ियारत हो तो ज़रूर बिज़रूर अल्लाह तआला से पुछूंगा के या अल्लाह वो कौनसी चीज़ है जिस की वजह से आप अपने बंदो को क़यामत के दिन नजात देंगे. चुनांचे वालिद माजिद को ये शर्फ़ हासिल हुआ. और उन्होंने अल्लाह तआला से पुछा. अल्लाह पाक ने फ़र्माया के जो शख्स सुबह और शाम ये कलमात पढ़ेगा इस को क़यामत के दिन नजात दूंगा. वो कलमात ये है.

سُبْحَانَ الْاَبَدِيِّ الْاَبَدِ सुब्हानलअबदियीलअबद
पाक है वा ज़ात जो हमेशा रहने वाला है.

سُبْحَانَ الْوَاحِدِ الْاَحَدِ सुब्हानल वाहिदिल अहद
पाक है वो ज़ात जो एक अकेला है.

سُبْحَانَ الْفَرْدِ الصَّمَدِ सुब्हानलफरदीस्समद
पाक है वो ज़ात जो तनहा बे नियाज़ है.

سُبْحَانَ رَافِعِ السَّمَاءِ بِغَيْرِ عَمَدٍ
सुब्हान राफ़िइस्समाइ बिगैरी अमद.

पाक है वो ज़ात जो बगैर सुतून के आसमान को बुलंद करने वाला है.

سُبْحَانَ مَنْ خَلَقَ الْخَلْقَ فَلْخَصَاهُمْ عَدَدًا.

सुबहान मन खलकलखलक फलहसा हुम अददा.

पाक है वो ज़ात जिस ने तमाम मखलुकात को पैदा किया. पस इन को गिन कर शुमार कर लिया.

سُبْحَانَ مَنْ قَسَمَ الرِّزْقَ وَلَمْ يَكُنْ أَحَدًا.

सुबहान मन कसमरीज़क वलम यअस अहदन.

पाक है वो ज़ात जिस ने रोज़ी तकसीम की और किसी को ना भुला.

سُبْحَانَ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا.

सुबहानल्लजी लम यत्ताखिज़ साहिबतव वला वलदन

पाक है वो ज़ात जिस ने ना बीवी बनाई और ना कोई अवलाद.

سُبْحَانَ الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ

لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ

सुबहानल्लजी लम यलिद वलम यूलद वलम यकुल्लहु

कुफुवन अहद.

पाक है वो ज़ात के जिस ने ना जना, ना जना गया और इस के बराबर का कोई नहीं है.



हज़रत अबुदरदा रज़ि. जो अपनी कुन्नीयत से मशहुर हुए और जो बड़े फकीह आलिम और हकीम थे. शाम में सुकुनत इख्तियार की और दमिशक में इंतैकाल फर्माया वो रिवायत करते हैं के रसुलुल्लाह स. ने इर्शाद फर्माया के : हज़रत दाऊद अलै. ये दुआ मांगा करते थे.

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ یُّحِبُّكَ وَالْعَمَلَ
 الَّذِیْ یُبَلِّغُنِیْ حُبَّكَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ اَحَبَّ
 اِلَیَّ مِنْ نَفْسِیْ وَاَهْلِیْ وَمِنْ الْمَاءِ الْبَارِدِ .

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका हुब्बका व हुब्ब मंय्युहिब्बुका
 वलअमलल्लजी युबल्लिगुनी हुब्बक अल्लाहुम्मजअल हुब्बक
 अहब्ब इलैय्या मिन नफसी वअहली व मिनलमाइलबारिद०

(रवाहुलतिर्माजी (अजजवाहिरुलबुखारी सफा ५७२)

फजीलत : ऐ अल्लाह मैं आप से आप की मोहब्बत मांगता हूं और इस शख्स की मोहब्बत मांगता हूं जो आप से मोहब्बत करता है और मांगता हूं वो अमल जो आप की मोहब्बत तक पहुंचा दे. ऐ अल्लाह आप अपनी मोहब्बत मुझे मेरी जान से ज्यादा और अहल व अयाल से ज्यादा और ठंडे पानी से ज्यादा महबुब कर दीजिए.

फजीलत : अल्लाह वालों की मोहब्बत ऐसी नेअमत उज़्मा है जो अल्लाह तआला की मोहब्बत और आमाले सालेहा की मोहब्बत का निहायत ही ज़रीया है, जैसा के इस हदीस से वाजेह है.

बदनजरी से हिफाज़त

बदनजरी से हिफाज़त पर हलावते इमान अता होने का वादा है. हलावते ईमान जब दिल को एक बार अता हो जाएगी. फिर कभी ना वापस ली जाएगी. पस हुसने खातमा की बशारत इस अमल पर भी है.

हुजुर स. इर्शाद फर्माते है :

ان النظر سهم من سهام ابليس مسموم

من تركها مخافتى ابدلته ايمانا يجد حلاوته في قلبه

इन् नज़र सहमुम मिन सिहामि इबलीस मसमुम मन
तरकहा मखाफती अबदलतुहु इमानन यजिद हलावतहु
फि कलबिही. (तिवरानी अब इब्ने मसउद रज़ि., कुंजलुलआमाल जिल्द ५, सफ़ २४८)

ईमान मौजूदा पर शुक्र है

यानी हर रोज़ मौजूदा पर शुक्र अदा करना और
वादा है के लइन शकर तुम ला जिदन्नकुम (सुरेह इब्राहिम
पारा १३) अगर तुम लोग शुक्र अदा करोगे तो हम अपनी
नेअमतो में ज़रूर बिज़रूर इज़ाफा करेंगे. पस ईमान पर शुक्र
इमान की बका बल्के तरक्की का ज़रीया है.

दुआ अदाएगी कर्ज

اللَّهُمَّ اكْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَأَغْنِنِي

بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ ०

अल्लाहुम्मकफिनी बिहलालिक अन हरामिक व अगनिनी
बिफज़लीक अम्मन सिवाक ०

अदाएगी कर्ज के लिए हुजुर अकदस स. ने
हज़रत अली रज़ि. को तालीम फर्माई और फर्माया के अगर
पहाड के बराबर भी कर्ज होगा तो अदा हो जाएगा. (तिर्मीज़ी)

اَللّٰهُمَّ فَارِجَ الْهَمِّ كَاشِفَ الْغَمِّ مُجِيبَ دَعْوَةِ
 الْمُضْطَرِّينَ رَحْمَنَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَرَحِيْمَهَا
 اَنْتَ اَرْحَمُنِيْ فَاَرْحَمْنِيْ بِرَحْمَةٍ تَغْنِيْنِيْ
 بِهَا عَنْ رَّحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ

अल्लाहुम्म फारिजल हम्मी काशिफलगम्मी मुजीब
 दावतिलमुजतर्रीन रहमानददुनिया वलआखिरति व रहीमहुमा
 अन्ता सरहमनी फरहमनी बिरहमतित तुगनीनी बिहा अररहमती
 मन सिवाक ०

ये भी अदाएगी कर्ज और गम व फिक्र दूर करने
 के लिए दुआ है.

(मुसतदरक हाकिम वगैराह)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْخَلَّاقُ الْعَظِيْمُ، اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ سَمِيْعٌ
 عَلِيْمٌ، اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ، اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ
 رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ الْجَوَادُ
 الْكَرِيْمُ فَاغْفِرْ لِيْ وَرَحْمَتِيْ وَعَافِنِيْ وَسُرِّقِنِيْ
 وَاسْتُرْنِيْ وَاجْبُرْنِيْ وَارْفَعْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَلَا تُضِلَّنِيْ
 وَادْخِلْنِيْ الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

अल्लाहुम्मा अनतलखल्लाकुलअजीमु, अल्लाहुम्मा, इन्नका
 समीउन अलीमुन, अल्लाहुम्मा इन्नका गफुररहीमु,
 अल्लाहुम्मा इन्नका रब्बुल अरशील अजीमु, अल्लाहुम्मा
 इन्नकलजवादुलकरीमु फगफिरली वरहमनी वआफिनी

वरजुकनी वसतुरनी वजबुरनी वअरफअनी वाहदिनी वला
तुजिल्लनी वअदखिलनिल जन्नता बिरहमतिक या
अरहमरराहिमीन ०

ऐ मेरे अल्लाह ! तू खालिके अजीम है तु समीअ
व अलीम (सब कुछ सुनने और जानने वाला) है तु गफुर व
रहीम (बखशने वाला और निहायत महरबान है) तु मालिके
अर्शे अजीम है तु निहायत फय्याज़ और करीम है. अपनी इन
आली सिफात के सदके में तु मुझे बख्श दे मुझ पर रहमत
फर्मा. मुझे आफियत अता फर्मा. मुझे रिज़्क नसीब फर्मा, मेरी
परवा दारी फर्मा, मेरी शिकसतगी को जोड़ दे, मुझे इज़्ज़त व
रफअत अता फर्मा, मुझे अपनी राह पर चला, मुझे गुमराही से
बचा और ऐ अरहमरराहीमीन (मरने के बाद आखेरत में) अपनी
रहमत से मुझे जन्नत में दाखला नसीब फर्मा. (हज़रत जाबिर
रज़ि. कहते हैं के रसुलुल्लाह स. ने ये दुआ तलकीन फर्माई
और आप से इर्शाद फर्माया) इस को सीख लो और अपने बाद
वालो को सिखाओ.

(मुसनदे फिरदौस बयलमी)

اللَّهُمَّ قِنِي شَرَّ نَفْسِي وَأَعِزِّمْنِي عَلَىٰ أَرْشِدِ أَمْرِي

अल्लाहुमा किनी शर नफसी वाअजिम लि अला अरशदि
अमरी

शुर नफस से हिफाज़त और हिदायत के लिए बहेतरीन दुआ है.
हुजुर अकरम स. ने ये दुआ हज़रत हसीन रज़ि. को बताई थी.

(इब्ने हब्बान)

اللَّهُمَّ لَا سَهْلَ إِلَّا مَا جَعَلْتَهُ سَهْلًا وَأَنْتَ تَجْعَلُ
الْحُزْنَ سَهْلًا إِذَا شِئْتَ ۝

अल्लाहुम्मा ला सहल इल्ला मा जअलतहु सहलवँ व
अनत तजअलुल हजन सहलन इजा शिअत ०
मुशकीलात की आसानी के लिए हुजुर अकदस स. से मनकुल
दुआ है। (इब्नुल हव्वान, इब्ने सुन्नी)

हिन्दी में पहली बार

अल-हिज्बुल आजम

आमाल ऐसे जिस में वक्त बरबाद ना हो,
दुआएँ ऐसी जिस में सवाब मिले.

मोमिन पंजसुरा

तोहफतुल अत्फाल

(दूसरा हिस्सा)

हज की मुकम्मल और बहतरीन मालुमात,
तरीका व दुआएँ

हज का तरीका व दुआएँ